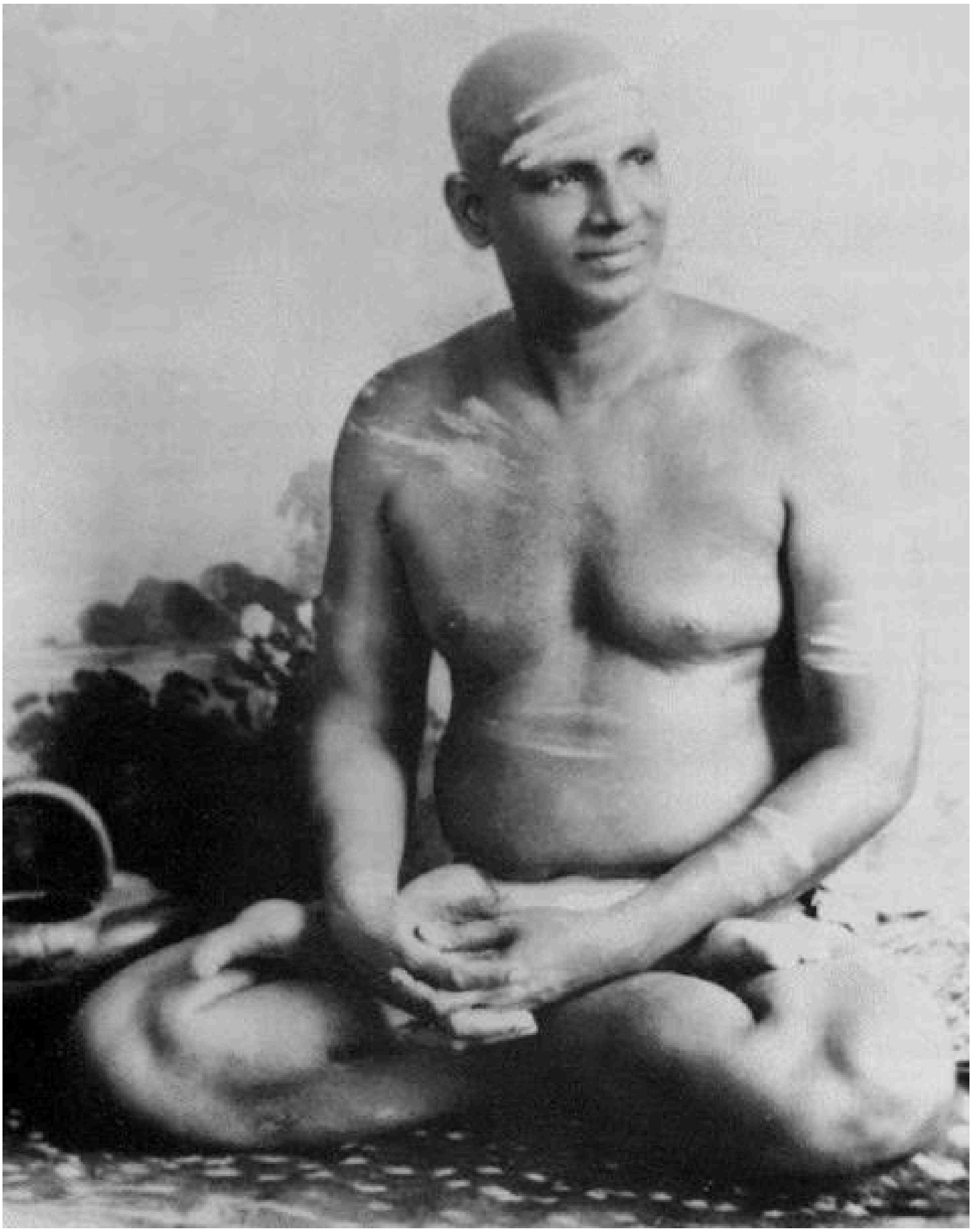


माण्डूक्योपनिषद् सार

(श्री महर्षि मुक्तानुभूति साहित्य)



माण्डूक्योपनिषद् सार

(श्री महर्ष ि मुकुतिुभूनत साहहत्य)

प्रकाशक

श्री महर्ष ि मुक्तानुभूतत साहहत्य प्रचारक सममतत

केन्द्र, दुरु् ि(म. प्र.)

श्री महर्ष मुक्तिुभनत प्रकाशि (३)

मूल्य- पाचां रुपये

सर्कालिकर्त्ा–

गिरधारीलाल श्रीवास्तव

स्टैनोग्राफर

सैन्चुरी सीमेंट ि ेवरा

जिला- रायपुर (म.प्र.)

- प्रकाशक

श्री महर्ष ि मुक्तिुभूनत साहहत्यप्रचारक सममनत केन्र, दिु ि (म. प्र.)

卐

(सर्ाधिकार प्रकाशकिीन)

प्रथम सस्ांकरण १००० प्रनत

चैत्र रामिवमी सि् ् १९७७ ई०

मुरक-

ऋतुरि प्रेसे, इजन्दरा माकेट, दिु ि (म. प्र.)

दो शब्द

भिवत् ्प्रेममयो ! मध्यप्रदेश के छत्तीसिढ़ र्वभा के रायपुर ििर में पुरिी बस्ती जस्थत श्रीमहामाया महांदर के र्वशाल प्रिाांण में श्री सद्गुरुदेव महर्ष िमुक्त िी महारि के श्री मुख द्वारा, सोमवार हदिाकां १२ िवम्बर सि् ्१९७३ से रर्ववार हदिाक १२ िवम्बर सि् ्१९७३ तक 'माण्डूक्योपनिषद्' पर आध्याजत्मक प्रवचि हुआ। उसे े ुरुिजठिक बन्धु श्री गिरधारीलाल िी श्रीवास्तव (स्टेिो- ग्राफर) सेन्चुरी सीमेंट, िवरा ि लितार उपजस्थत रहकर पूरा का पूरा प्रवचि शाटिहैण्ड के द्वारा स्वय ांतथा िि कल्याण की भाविा से मलर्पबद्ध ककया। इसके उपरान्त बडेपररश्रम से उन्हें हहन्दी में मलखकर सममनत को प्रकाशिाथ िसर्पति ककया। इस पुस्तक के प्रकाशि में श्री झुमुमकलाल िी 'दिी, 'सगचव', मुक्तिािुभूनत साहहत्य प्रचारक सममनत दुि े ेति मि से अपिा सहयोि हदया जिसके फलस्वरूप यह पुस्तकाकार हो, आपके पास तक पहुांच सका।

मुक्तिािुभूनत साहहत्य प्रकाशि में श्री गिरधारीलाल िी श्रीवास्तव एव ांश्री 'दिी िो' द्वारा हदये िये इस सहयोि के मलये सममनत उिका बहुत बहुत आभारी है।

परमानन्द शरस्त्री

अध्यक्ष

मुक्तानुभूतत साहहत्य प्रचारक

सममतत, दुर्ि

समपणि

रुरुर्ब्ह्मिा,रुरुर्र्ष्णिुरुरुदेरो् महेश्वरः ।

रुरुः साक्षात् ्परब्र्ह्मा, तस्त्मै ैश्री, रुररे् ेनमः ।।

परम-पूज्य श्री सदिरुदेव

महर्षिमुक्तिमहारि

केश्रीचरणोंमें

सपे्रेम सादर

समर्पति



र्वििीत

गिरधारीलाल श्रीवास्तव

र्ंषय-सूची

माण्डूक्योपनिषद् सार

(श्रीमर्षमुक्तिाुभूनत)

卐श्रीगणेशयनमः卐

।। श्री िुरविेमः ।।

प्रथम हदवस का प्रवचि

(सोमर्ार हदनांक १२नर्म्बरसन्७३के१०बजेसेदोपहर१२बजे ेहदन तक का है।)

् े े

.......वन्दिा.........

(िारायणोपनिषद्)

ॐ अथ पुरुषो ह र्ै नारायणोऽकामयत प्रजाः सृजेयेतत । नारायणात् ्प्राणो जायतेमनः सर्ेन्दन्द्रयाणण च । खं र्ायु- ज्योततरापः पृधृथर्ी र्ीश्र्स्त्य िाररणी । नारायणाद् ब्र्ह्मा जायते। नारायणाद् रुरो जायते। नारायणाद् इन्द्रो जायते। नारायणात् ्प्रजापततः प्रजायते े।

नारायणाद् द्र्ादशाऽऽहदत्याः सर्े रुराः सर्े र्सर्ः सर्ाणिण भूतातन सर्ाणिणच्छदामाँस नारायणादेर् समुत्पद्यन्दते नारायणात् ्प्रर्तन्दिे । नारायणे प्रलीयन्दते।

अथ तनत्यो नारायणः । ब्र्ह्मा नारायणः । मशर्श्र् नारायणः । शक्रश्र् नारायणः । कालश्र् नारायणः । हदशश्र् नारायणः । र्ीहदशश्र् नारायणः । ऊध्र्ं ंच नारायणः । अिश्र् नारायणः । अन्दतबहिहश्र् नारायणः

नारायण एर्ेदं सर्ं ंयद्भूतं ंयच्च भव्यं तनष्कलको तनरञ्जनो तनर्र्किल्पो तनराख्यातः शुद्िा देर् एको नारायणो न द्र्र्तीयोऽन्दस्त्त कन्दश्चत् ्। य एर्ं ंर्ेद, स र्ीष्णुरेर् भर्तत स र्ीष्णुरेर् भर्तत ।। ॐ शांततः शांततः शांततः ।।

रामाय राम भराय, रामचन्द्राय र्ेिसे े।

रघुनाथाय नाथाय, सीतायाः पतये नमः ।।
यन्मायार्शर्ाति र्र्श्रमणखलं ब्र्ह्माहद देर्ासुरा ।
यत्सत्र्ाद मृषैर् भातत सकलंरज्जौ यथाहेभ्रमः ।।
यत्पादप्लर् मेक मेर् हह भर्ाम्भो िेन्द्स्त तीषार्िताम् ्।
न्द्र्देऽहं तमशेष कारण परं रामाख्य मीश हररम् ्।।

अिन्त िाम रूपों में अमभव्यक्त अहमत्वेि प्रस्फुररत, महा- महहम,् स्वआत्मस्वरूप सकल चराचर एव ां आत्मजिज्ञासु िेण ! उर्त्ठित, िाग्रत प्राप्य वराजन्ि बोधत ।

अिाहद काल से अर्वद्या की घोर निरा में सोिे वाले भव्य िीवो ! िािो ! स्व-स्वरूप भिवाि आत्मा में िािो और ककसी श्रेठि महापुरुष की शरण में िाकर अपिा आत्मकल्याण करो । मािव िीवि का यही चरम लक्ष्य है । यहााँपर आध्याजत्मक प्रवचि श्री माण्डूक्योपनिषद् के आधार पर हो रहा है।

आत्म जिज्ञासुओ !

इसमें मसफि बारह मत्रां है, परन्तु सबसे महत्वशाली उपनिषद् मािा िाता है और इसकी र्वस्तृत व्याख्या होती है। अथव िवेदे की ब्राह्मण शाखा से यह उपनिषद् निकली है। वेद चार हैं। और चार उपवेद हैं। यिुवेुद का उपवेद धिुवेद है, जिसमें युद्ध कला है। ऋग्वेद का उपवेद आयुवेद है। सामवेद का उपवेद िधांव िवेद है। अथवविेद का उपवेद मशल्पवेद है। वेद के दो भाि हैं। एक मत्रां भाि और एक ब्राह्मण भाि, ब्राह्मण भाि को उपनिषद् कहते े हैं उपनिषद् के जितिे मत्रां हैं सब वैहदक ऋचाएांहैं।

िोआत्मा को ब्रह्म के पास िो पहुांचा दे उसे ेउपनिषद् कहते ेहैं ।

उप तनषादयतत संसारस्त्य मूलू कारण भर्द्याम् ्।
मशधथलयतत ब्र्ह्म च र्मयतत इत्युपतनषद् ॥

िो ससांार का िाश करे, िो ससांार का मूल कारण िो अर्वद्या है, उसको मशगथल करे और िोआत्मा ब्रह्म िो आत्मा है उसे ेप्राप्त करादे, उसे ेउपनिषद् कहते ेहैं। और ये वेद हैं क्योंकक वेद तो ककसी िे बिाया िहीं, ये अपौरुषेय हैं। ि ब्रह्मा िे इसे ेबिाया। ब्रह्मा के चारों मुख से वेद निकले ेहैं कफर भी ब्रम्हा िी इसके बिािे वाले िहींहैं।

सृजृठट के आहद में ब्रम्हा िी िब समागधस्थ थे तो ब्रम्हा िी अपिेहृदय में चारों वेदों को सिुे, इसमलए वेदों का िाम पडा श्रुनत । इसमलए वेदों को श्रुनत कहते ेहैं। बाद में उसे ेअपिेमुख से प्रकट ककए । और शास्त्र को कहते ेहैं स्मृनत ।

ऋर्ष लिो पवतिों की कन्दराओां में सैकडों वष िसमागधस्थ रहते ेथे। वहाांउन्हें पूवापिर की बातें याद आ ईि। स्मरण करके, िो मलखी िाय उसे ेस्मृनृत कहते ेहैं। वेदान्त मसफि इतिा ही है, उपनिषद् भर । परन्तु जितिे भी ग्रथां हैं, वे श्रुनतयों के र्वरुद्ध िहीां, चलते े। श्रुनत को लेकर स्मृरूत्याांचलती है। और ये कहिा चाहहए कक जितिी स्मृनृतया ांहैं वेसब श्रुनत की व्याख्या हैं। ये भी नियम स्त अ अ है कक िो श्रुनुत र्वरुद्ध मसद्धान्त है वो अमान्य होता है। सावभिौम र्व िहीांहोता तो भैय्या ! यह है माण्डूक्योपनिषद् इसका पहला मत्रां है-

ओममत्येत दक्षरममद्ं ं सर् ितस्त्योप व्याख्यानं ंभूतं ंभर्भ्दर्र्हदतत
सर्मोिङ कार एर् यच्चान्द्यन्द्त्रकाला तीतं तदप्योङकार एर् ॥१॥

पहले ेही घोंट हदया । ओम इनत अक्षम् ्। इदम् ्िाट्य ांिित । ये सब ओम आत्मा है। ओम् ्के मिोहोते ेहैं 'म'ैं । सव ि'म'ैं हूां। अक्षर देखो - अक्षर कहा है, अक्षर कहते ेहैं जिसका कभी िाश ि हो। और िो अक्षर होता है, उसका कोई आकार प्रकार िही ांहोता । िैसे ेतुम मलखते ेहो "क" ।

'क', 'ख', 'ि', 'प' ये सब अक्षर हैं। यहद 'क' का वास्तव में यही आकार है तो जितिी भाषाए ांहैं ससाांर में 'क' ऐसेही मलखिा चाहहए । ये तो हमारे तुम्हारे हदमाि का फुिला है। 'क' िैसा है वैसा ही है। और ि मलखिेपढ़िे लायक है इसमलय अक्षर कहते ेहैं। जिस तरह सिाति ब्रम्ह अविाां मिसोचर है। परन्तु हम अपिी कल्पिा करते ेहैं कक भिविा इस तरह का है, भिविा का ये आकार प्रकार है, आराधिा ििित में, जिस प्रकार हम कल्पिा करते ेहैं यद्यर्प आकार प्रकार िहीांहै उसका, उसी प्रकार हम अक्षर में 'क' विाहिदक की कल्पिा करते ेहैं। यद्यर्प ऐसा िही ांहै।

कफर देखो 'क', 'ख' जिस आधार पर 'क' विाहिदक अध्यस्त है। िैसै ेलकडी आधार है और 'डण्डा' अध्यस्त है। 'सोिा' आधार है, 'आभूषण' अध्यस्त है इसी तरह 'क' से 'अ' निकाल ला, अब 'क' कहो तुम ? 'अ' का उच्चारण ि हो और 'क' कहक हदखाओ । भिविा ि अपिी र्वभूनत का िो विणि ककया है- जिसके बबिा जिसका उच्चारण ही ि हो उसी का िाम 'अक्षर' है। िा अक्षर है ओम् ्। और िो 'ओम' है वह में हूां इसमलए हमारे यहा भारतीय र्विाििों की परम्परा है। प्राचीकाल में र्विाि लिो लेख मलखा करते ेथे, वे हाथ से मलखे िाते ेथे े। तो हमारे यहा कािे ेकी प्रथा िहीांहै कोठटक बिा दे ।

ममट्टी की हदया में हरताल रखतेथे, हरताल लेकर उस पर लिा देते ेथे, तो वो अशुद्द्ध मिाा िाता था । ओममनत । 'अक्षरम्'् इदम् ्अपचांम् ्अक्षरम् ्िो कुछ भी है, में आत्मा हू, मुझ आत्मा से मभन् कुछ भी िहीांहै। इसकी व्याख्या क्या है ?

िाि के पहले िो था और िाौ िो कुछ भी रहिा और अभी िो कुछ है सब ओकांार है। यह 'ओम्'् अक्षर की व्याख्या है। सत्,् रि, तम तििों िुणों से िो परे है वह भी ओम है। यिाि 'मे' आत्मा हूां। मुझ आत्मा से मभन्, कुछ भी िहीां। भिविा राम- लक्ष्मण सेकहते ेहैं । अध्यात्म रामायण में-

पूर् िसमीोरणखलंर्ंधचन्द्तये-दोड्.कारमारंसचराचरं जर्त् ्।
तरे्द र्ाच्यंप्रणर्ो हह र्ाचको, र्ंभाव्यतेऽज्ञानर्शान्द्न बीतः ।।

(अ. रामा. उ. का. सि ि५ श्लोक ४८ वा)ां

निर्वकिल्प समागध से प्रथम ऐसा गचन्ति करे । सचराचरम ि ित प्रपचांम् ्ओकांार मात्रम् ्। सर्त्ा ि ित् ् प्रपचां 'म'ैं आत्मा ह्ूां। ओम् ्मिो'म'ैं प्रणव ब्रह्म सिाति तत्व िो में आत्मा ह्ूां, वह ह्ूां. वाचक और सारा चराचर है वाच्य ।

लकडी है 'वाचक', डण्डा है 'वाच्य' । 'सिोा' है 'वाचक' 'आभूषण' है वाच्य । 'में' आत्मा 'वाचक' ह्ूां और ससांार है 'वाच्य'।

"र्ंभाव्यतेऽज्ञानर्शान्द्न बीतः"

अज्ञिाता के कारण ये ि ित प्रपचां भास रहा । 'है' िही ांतिी काल में । अज्ञि से ये 'प्रपचां' भास रहा है, 'स्वरूप' देश में िही ां। आत्म ि ित में खडे ेहोकर देखो प्रपचांाहदक है ही िहीां। इसका गचतांसिमागध से पूव िकरे ।

पूर् िसमीो........................ न बीतः ।
यदन्द्यदन्द्यर त्ररभाव्यतेभ्रमा दध्यासममत्याहुरमुं ांर्ंपन्द्श्रतः
असपभिूतेऽहहर्ंभार्नं यथा, रज्ज्र्ाहदके तद्र्दणीश्रे जर्त् ्

(अ. रामा. सि ि५ उ. का. श्लो. ३७)

अन्य में िो अन्य का भिा, िसैे ेरज्जू ूमें सप िका भिा; इसको र्वद्विाों ि 'अध्यास' कहा है। यद्यर्प सप िति काल में िही ांहै। इसी तरह 'म'ैं आत्मा िो ह्ूां उसमें ि ित् ्प्रपचां, रज्जू ूमें सप िके समिा भास रहा है। तो भैय्या एक होता है अध्यास और दूसूरा होता है अमभमिा । स्वरूप आत्मा 'म'ैं में देह िो है, अध्यास है। इसमलए कहते ेहैं देहाध्यास । है तो रस्सी की रस्सी ही, परन्तु उस रस्सी को हम सप िदेखते ेहैं, और सप िमिाकर ही हमें भय और कम्पि होता है ।

ऐसेस्वरूप आत्मा में 'देह' का अध्यास । तो रज्जू ूके बबिा ज्ञि हुए, िसैे ेसपाध्यिास िही ांिाता, उसी तरह बबिा अपिेस्वरूप भिवा 'आत्मा' को ि िोदेहाध्यास िहीांिाता ।

चाहे जितिा कम िकरो, जितिी उपासिा करो, वेदोन्त के ग्रथोंां को पढ़ते ेरहो रात-हदि । िब तक स्वरूप 'आत्मा' का ज्ञिा िहीांहो िाता, तब तक देहाध्यास कभी िही ांिाता । आिन्द लो !

बि तक देहाध्यास िहीांिाता तब तक देहामभमाि िहीां। ककस तरह िायेगा ? कोई-कोई कहते ेहैं स्वामी िी ! मुझे ेर्वषय तो समझ में आ िया है पर देहामभमाि िही ांिाता, तो तुम कहा ाँसमझे ेहो तुम्हारी बुद्गध समझी है। अपिे राम तो कश्मीर में बिे हैं।

'ठंडा हो कलेजा जहां, ं कश्मीर उसे ेकहते ेहैं ।'

दो प्रकार की समझ होती है। एक समझ होती है बुद्गधिम्य और एक समझ होती है अहमिम्य । देह िहीांम ैंआत्मा हूां इसको 'में' समझता हूां। देह िहीांमें आत्मा हूां ये बुद्गधिम्य है। तीि काल में देह है ही िहीांइसे े'म'ै समझता हूां। एक ही वाक्य के अन्दर दो भाव निहहत हैं । साहहजत्यक है- देह िहीांजन्म-मरण वाला है ये में िहीांहूां, म ैंआत्मा हूां, इसको बुद्गध समझती है। देह िहीांमें आत्मा हूाँ। देह है ही िहीांतीि काल में, 'म'ै आत्मा ही हूां।

इसको समझकर लोि कहते ेहैं, मशकायत करते ेहैं कक देहामभमाि िहीांिाता, स्वामी िी ! आिन्दम् ् ब्रह्म आिन्द ब्रह्म । डूब िाओ इस आिदां सािर में, खो को अपिी बूांद, बहादो सारे अध्यास ।

तो देह िहीांमें आत्मा हूां। देह िहीांपाचां भौनतक है। ये र्विाशशील है। 'शरीर' दृश्य है 'म'ै 'रठटा' हूां। अपिे आपको साढ़े तीि हाथ का मािकर अपिेको शरीर से मभन्ि् मािता है। शरीर िन्मता है, मरता है। स्त्री है, पुरुष है, बालक है, युवा है, वृद्ध है। इसको बुद्गध ग्रहण करती है और जिन्दिी इसी में खत्म हो िाती है और देह तीि काल में है ही िहीां, "म'ै' आत्मा हूां। यहाांपर िो साहहत्य कहते ेहैं ि, वह सब परे हो िाता है। इसको में ही ग्रहण करता हूां। जिस प्रकार अपिे आपको साढ़े तीि हाथ का देह मािा वैसेही अपिेआपको बुद्गध भी तो मािा । देह िहीां'म'ै आत्मा हूाँ । यहद यह बोध होता है तो बुद्गध िई और बुद्गध से निकलिे वाला िो साहहत्य है वह भी िया। ये है ठोस वेदान्त, यही ठोस अध्यात्म है ।

अभी तो राम भिवाि कह िए-

पूर् िसमिो.................................. न बिोतः ।

इसमलए अध्यास को पहले ेत्याि करो कफर अमभमाि तो अपिेआप चला ही िायेगा । अपिेस्वरूप भिवाि आत्मा को िाि लेिे पर अध्यास का त्याि होता है। अध्यास के त्याि पर अमभमाि का त्याि हो िाता है। दूसरी चीि यह है कक देहाध्यास के त्याि में स्वरूप ज्ञाि । स्वरूप ज्ञाि में देहाध्यास का त्याि और देहाध्यास के त्याि में देहामभमाि का त्याि होता है यद्यर्प बुद्गध द्वारा समझा है- देह िहीां, आत्मा हूां। यहाांपर क्या भाि होता है कक ज्ञाि के पहले े'में' िीव था और अब ब्रम्ह हुआ । ज्ञाि के पहले ेबद्ध था अब 'मुक्त' हुआ । ज्ञाि के पहले ेम ैं'अज्ञािी' था अब 'ज्ञािी' हुआ। अध्यास तक ही यह धारणा रहती है और अध्यास चलिेपर

इमाः सोम्य नद्यः पुरस्तात्प्राच्यः स्त्यन्द्न्द्तेपश्चात्प्रतीच्यस्ता समुरात्समुर मेरा्
र्पयन्द्न्द्तत्पसमुरएर्भर्ततततायथा तरनर्द्ुरुरयम्हमस्त्मीय महमस्त्मीतत ॥१॥

(छादाोग्य उपनिषद)

र्ािा, यमिुा - कावेरी जितिी छोटी बडी िहदया ाँहैं ससांार की; िब समुर में ममलती हैं तो उिकी पूवा िपर का भिा िहीांरहता कक िाि के पहले ेम'ै िोिा, यमिुा थी और अब में समुर हो िई। यह। याद कौि करे !

मुक्ता जब ममला समंदर से, तब कौन ककसी की याद करें।
बस इसी लहर में लहराना कोई क्या समझे, कोई क्या समझे !

और अभी याद है तो मत समझो समुर से ममली है। बाहर से गचल्ला रही है, यह श्रुनत ही छान्दोग्योपनिषदकी है िब स्वरूप का पूण बोध हो िया तो अध्यास का त्याि और अध्यास के त्याि से अमभमाि का त्याि । तब कौि याद करे कक िाि से पहलेमें िीव था या ब्रह्म था। िीव की अपेक्षा से ही तो ब्रह्म भाव था। िब िाव ही चला िया तो ब्रह्म भी चला िया। वेटा मरा तो बाप भी मर िया। इसी तरह पूण िरूप से स्वरूप के बोध होिपर यह स्मृनत िहीांरहती कक िाि के पहले िीव था ।

अब यहााँएक प्रश्ि होता है, कक अगधष्ठाि में िो अध्यस्त होता है वह अगधष्ठाि के अिुरूप होता है। यह प्रश्ि है.? अरे सफेद धािा यहद अगधष्ठाि होिा तो वस्त्र भी सफेद होिा। लकडी काणी होिी तो डडांा भी काला होिा । रज्िु टेढ़ी-मेढ़ी होिी तो सापां भी टेढ़ा मेढ़ा होिा। यह निर्ववाद मसद्धाांत है । तो यहााँप्रश्ि होता है कक िैसे े कक यह देह हदखाई दे रहा है ? अरे मुझ आत्मा में "भास रहा है तो क्या में भी इसी तरह आकार-प्रकार वाला हूाँ? यह पूवि–पक्षी की शकांा है ! अगधष्ठाि में िो अध्यस्त भासता है वह अगधष्ठाि हो तो है। अगधष्ठाि का िाम अध्यस्त कव पडता है ? िैसा है उसको वैसा ि िािकर कुछ का कुछ माि लेिा अध्यस्त है। रज्िु अगधष्ठाि है सप ि अध्यस्त है िैसा अगधष्ठाि रज्िु है वैसे ही उसको ि िािकर उस रज्िु को सप िमाि लेिा अध्यस्त है। अन्य में अन्य का भाि होिा. इसका िाम है अध्यास । तो कफर अध्यास भी तो अगधष्ठाि का ही अज्ञाि कहा िाता है। रज्िु के अज्ञाि से ही तो हम रज्िु को सप िकहते े। अध्यास के अजस्तत्व में हो तो अगधष्ठाि कहा िाया । अध्यास के अभाव में अगधष्ठाि का भी तो अभाव है। तो देह हुआ अध्यास और 'मे' हुआ उसका अगधष्ठाि । जिस तरह रज्िु को सप िमािो में हुआ । रज्िु में अध्यस्त अथवा अध्यास । इसी तरह स्वरूप आत्मा को साढ़े तीि हाथ का माि लेिा अध्यास अथवा अध्यस्त है।

ा होती है **अकयहाशिक**ांअगधष्ठाि के अिुरूप ही अध्यस्त होता है। तो क्या इसी तरह में अगधष्ठाि आत्मा हूां ? यह शकांा है। िो िहीांअरे ! 'में' आत्मा को िब देह मािो तब ि आकार प्रकार का र्वकल्प होिा और िब अपिे'म'ै आत्मा को 'में' ही िाििो,े कुछ ि मािो तो कफर देह िहीां। देह िहीांतो देह का आकार-प्रकार िही ां। अरे, अध्यास को मिाकर ही तो ये र्वकल्प उिे, कक क्या में ऐसा हूां ?

'म' ैं भिवा आत्मा ज्ञि पुञ् हूाँ। ज्ञि सिर हूां, ज्ञि निगध हूां। कोई अिुभूनतया ाँतो िही ांहैं। असीममत है। अपार है। देहा- हदक प्रप्रचां, तृणृ से आहद ब्रह्मा तक सारा चराचर मुझ आत्मा में अध्यस्त है। मिमाा अध्यास, देखिा अध्यस्त है। रज्जूकिो सप िमिमाा अध्यास है, रज्जू ूको सप िदेखिा अध्यस्त है। अगधष्ठाि एक ही रहिा तो पृथ्वी ऐसी है, वायुऐसा है, आकाश ऐसा है। पचां महाभूतों के र्वमभन्-र्वमभन् प्रकार के रूप और रांर्ि का र्वकल्प और कफर पचां महाभूत से निकले हुए पचां र्वषय । रज्जूसै भय कांपि होता है, कक सप िसे भय कांपि होता है ? सप िसे भय और कांपि होता है िोया र्वकल्प से भय और कांपि होता है ि कक रज्जू ूसे । तो में आत्मा में िब देहाहदक प्रपचां का र्वकल्प हुआ तभी आकार- प्रकार का र्वकल्प होता है।

अपिेआप, 'म' ैं को, साढ़े तीि हाथ का देह मिमाा या तो साढ़े तीि हाथ को स्वरूप मिमाा, और इसको साफ करेंि े। अपिे'म' ैं आत्मा को िित प्रपचां मिमाा, देहाहदक प्रपचां मिमाा यह ज्ञि भी है और अज्ञि भी है। और 'म' ैं ही तो हूां जिसेदेह मिाते ेहो यह ज्ञि है। 'म' ैं को मििाकर 'म' ैं देह हूां ऐसा कहिा यह अज्ञि है। काल्पनिक मिति में तो कहेंि ेही। बाली को बाली कहेंि,े हार को हार कहेंि,े चिै को चिै कहेंि । काल्पनिक िित में तो कहिा पडता है। मिर दृजठट वही स्वणाकिार हर्गी। मिर काल्पनिक िित में तो देह कहिा ि । मिर इस कथि में कोई सत्यता िहीांहै। अिौ चलो। क्यों िी ? सब कुछ 'में' आत्मा हूां, मुझ 'आत्मा' से मभन् कुछ भी िहीांतो अिर कोई कहता है कक 'में' देह हूां, तो क्या बुरा है। स्वरूप देश में ज्ञि-अज्ञि की कल्पिा है कक स्वरूप से बाहर ? जिस तरीके से सूय िमें ि अधांकार है ि प्रकाश । उसी प्रकार मुझ आत्मा में ि ज्ञि है ि अज्ञि । यह ज्ञि है, यह अज्ञि है। यह भी तो मुझ आत्मा पर अध्यास है। इसका र्वकल्प भी तो बुद्र्ध िे ही ककया है। भैय्या ! अिर बुद्र्ध से समझ रहे हो तो कफर कल्पिा मिर्ीै और स्वयांसमझ रहे हो तो ! ये िो उपनिषद् है, वह खुद के समझिे वाली है। बुद्र्ध की चिी िही ांहै। 'म' ैं ही हूां और में' हूां। अध्यास हटिे ेके मलए 'में' ही हूां और अध्यास हट िोिे पर "म' ैं हैं। रज्जूही है। सपाध्यिास हट िोिेपर तो िहीांकहा िाता कक रज्जू ूही है। रज्जू ूही है कहिेसे पता लिता है कोई चिी और है। िब अध्यास हट िया तो म ैंहूां। प्रपचां दररर है। देव मिर्ीै एकादशी के हदि औरतें िन्ों के टुकडों से सूपा पीटतो हैं। दररर को पीट-पीट के घर से बाहर निकालती हैं। प्रपचां रूपी दरररको हृदय रूपी घर से निकालिे के मलए हम दस बिे ेसेसूरा पोट रहे हैं। िब दररर निकल िाता है तो अटूट मिखिाा तो है हो ।

समय २ बजे से ४ बजे तक

ओम का अथ िहोता है 'में' । तृणृ से लेकेर ब्रम्हा पयंतं सारा चराबर में 'आत्मा' हूाँ । मुझ आत्मा से मभन् कुछ िही।ां तो इसकी व्याख्या क्या है ? िो कुछ था, िो कुछ है और िो कुछ हिा या रहिा मुझ से मभन् कुछ भी हिीांयह इसको व्याख्या है।

देखो ! उस वक्त कहा िया था अध्यात्म रामायण का िो श्लोक भिवाि राम िे लक्ष्मण से कहा है उसमे थोडा सा रह िया है बतािो को ।

पूर् म् िसमिो.. .... सचराचरम् िजर्त् ।

निर्वकिल्प समागध से पहले ेइस प्रकार का गचति करे- िो कुछ भी है, सारा ििित प्रपचां ओम् ्'मे' आत्मा हू। क्योंकक कहते े- हैंकक अपिे स्वरूप आत्मा के अज्ञाि से सारा प्रपच भास रहा है, हदखाई दे रहा है, अज्ञाि के कारण । स्वरूप देश से िहीां, आत्म देश से िही।ां अब यहा ांएक सवाल पैदा होता है कक समागध से पहले ेइस प्रकार का गचति क्यों करे ?

यह मसला उस वक्त हल िहीांहुआ था। समागध कहते ेककसको हैं? गचर्त् वृर्त्् निरोधः समागधः ।' गचर्त् की जस्थरता को कहते ेहैं-- समागध । गचर्त् को जस्थर करिे के मलए, गचर्त् की जस्थरता के मलए यह परम साधि है कक मुझ आत्मा से मभन्ि् कुछ िही ांहै । समागध की मसद्गध का यह परम साधि है कक, मुझ आत्मा से मभन्ि् कुछ िही ां है। क्यो ? गचर्त् िो है, यह मि िो है दौड-दौडकर र्वषय में िाता है। शब्द में स्पश िमें, रूप में, रस में िध में । गचर्त् का दृश्य िो है वह र्वषय है। 'अहमेद सवम्ि् मुझ आत्मा से मभन्ि् कुछ भी िहीांहै, 'म'ैं ही हू तो यह िायांाि कहा?ां

"देहामभमाने र्मलतेर्ज्ञाते ेपरमात्मतन ।
यर-यत्र मनोयातत तर तर समिायः ।।"

हि–ांिहा ांमि िाता है वहाां-वह समागधया ांहैं। मि शब्द स्पश,ि रूप, रस, िधां इत्याहद में िाता है। जिसको यह मि र्वषय समझ- कर िाता है वह िब मुझ आत्मा के मसवाय कुछ है ही िहीांतो यह मि िायेिा कहा ाँ? यह मि समागधस्थ हो िाता है। निरोध का मतलब और होता है। निरोध का िाम है रोकिा। िैसे िदी का रुकिा और दिी का जस्थर हो ििाा। बाधां डाल दो, िदी रुक िाती है। जस्थर करिे के मलए कोई साधि िहीांहै। िदी का िो स्वाभार्वक बहाव है वह ििांल, पहाड की ओर िहीांहै। िदी का स्वाभार्वक बहाव समुर की ओर है। िदी को जस्थर करिे के मलए कोई बाधां डालिे की िरूरत िहीांहै। िदी तो समुर में ही िाकर जस्थर हिोी । इसी तरह मि एक दिी के मानिन्द है ।

गचर्त् को निरोध करिे का साधि तो है जस्थर करिेका कोई साधि िहीांहै। अब गचर्त् को जस्थर करिा है। बि मुझ आत्मा के मसवाय कुछ िहीांहै तो कफर यह िायेिा ही कहा ां? अरे ! िब- सब कुछ 'म'ैं ही हूां। तो िािोि–ो वाला यह गचर्त् किौ है ? यह भी तो 'म'ैं ही हूां। िाएिा कहाां? शान्त हो िायेिा ।

उत्पादस्त्याप्रमसद्त्रिादजंसर्मुिदाहृतम् ् ।
न च भूतादभूतस्त्य संमरोऽन्द्स्त कथंचन ।

(िौ. पा. कारर. अलात् ्शानांत प्रकरण म.ां क्र. ॥३८॥)

ििि् ्प्रपचां का िो उत्पादि है उसकी अप्रमसद्गध है। र्वश्व 'में ककसी की ताकत िहीांहै कक प्रपचां को मसद्ध करके बता दे । उत्पादि की अप्रमसद्गध के कारण यह सारा प्रपचां अिन्मा है। इसका िन्म ही िही ांहुआ । क्योंकक इसकी उत्पर्त्् मसद्ध ही िहीांहोती ।

"स्त्तो र्ा परतो र्ाृर्प न ककंधचद्वस्त्तु ुजायते।

सदसत्सदसद्वार्प न ककंधचद्वस्त्तु ुजायते॥ २२ ॥

(ाै. पा. कारर. अलात्शाजन्त प्रकरण मत्रां क्र. ॥२२॥)

यह ससांार ि तो स्वय ांपैदा हुआ है ि इसे ककसी ि पैदा ककया है। यहद कहो ससांार ाांाल पैदा होता है। तो यह पैदा हिोके पहले ेभाव रूप था कक अभाव रूप था । ि इस देह को ककसी ि पदांा ककया ि यह देह स्वय ांपैदा हुआ । यहद मिोा कक पैदा हुआ हैं तो पैदा हिोके पहले ेक्या था ? सत्य था कक असत्य था ? तो सत्य मिाकर भी पैदा हिोा मसद्ध िहीांहोता और कहो असत्य रूप था- तो िो है ही िहीांवह पैदा क्या हिोा ? इसमलए ससांार प्रपचां की िो उत्पर्त्त् है वह मसद्ध िहीां होती । इसमलए इदां प्रपचां अिम् ्। 'अिम्'्- िन्म हुआ ही िहीांअित्वादऽहम् ्और अिन्मा हिोसे. 'में' हूां।

"भूतस्त्य जाततममच्छन्न्द्न्द्त र्ाहदनः केधचदेर् हह ।

अभूतस्त्यापरे िोरा र्न्र्दन्द्तः परस्त्परम् ्।।"

(ाै. पा. कारकका अलात् ्शाजन्त प्र. म.ां क्र. ।॥३॥)

ससांार की उत्पर्त्त् मिाकर ही आपस में लिो र्वाद करते ेह।ैं कोई कुछ कहता है और कोई कुछ बतलाता

है। परन्तु ऐसा िहीांहै। शरीराहदक प्रपचां हुए ही िहीांतििी काल में, सब वैतथ्य है।

तथ्य कहते ेहैं, वास्तर्वकता को । वास्तर्वकता जिसमें ि हो उसे े'वैतथ्य' कहतेहैं । िो आहद में ि हो और अांत में ि हो और मध्य में यह कहा ांसेपैदा हो िया ? अरे ! यह भी िही ांहै। देखिसे मालूम होता है कक- 'है' । 'है' के सदृश मालूम होता है, 'है' िहीांमालूम होता है। पहलेभी सप ििहीांहै। अधांकार में िो सप िहदखाई देता है वह पहले ेभी िहीांहै, अन्त में भी िहीांहै। बीच में हदखाई देता है वह भी तो िहीांहै - ररसी ही है। उिले ेमें यहद उसी स्थाि में सप िहदखाई दे तब समझो कक अधांकार में िो हदखाई दे रहा है वह सप िहै। 'वैतथ्य' है। वास्तर्वकता से हीं है, है ही िहीांतििी काल में ।

आदान्र्द्ते च यन्द्नान्द्स्त्त र्तमानेऽर्प तत्तथा ।

र्ृतथैः सदृशाः सन्द्तोऽर्ृतथा इर् लक्षक्षताः ।।३१॥

(िोंड पा. कारर. अलात् ्शाजन्त. प्र. प्र. मत्रां क्र. ।३१।।)

पहले ेभी यह प्रपचां िहीांथा और अिौ ेभी िहीांरहिा तो कफर बीच में यह ससार कहा ांसे आ िया। पहले ेथा तो 'में ही था और आखखर में िो कुछ रहिा तो 'म'ैं ही रहूांाा। यह बीच में कहा ांसे आ िया प्रपचां ? निकालो दररर, पीट-पीट के जिसको तुम ससांार मिाते ेहो, प्रपचां मिाते ेहो, यह भी िहीांहै क्योंकक "अिम्'्- 'में' ही हूां । सिाति

तत्व है। िब मुझ 'आत्मा' से मभन्ि कुछ िही ांतो यह निश्चय हिोपर क्या होता है 'देहाध्यास' चला िया और अध्यास के चलिेिपर उसका अमभमाि था वह भी चला िया । अब रह िया वर्शुद्ध तत्व 'आत्मा' का 'आत्मा' । अरे! यही तो समागध है। इसी का िाम तो निर्वकिल्प समागध है। निर्वकिल्प समागध तो गचर्त् की होती है और एक निर्वकिल्प समागध मुझ निर्वकिल्प आत्मा की होती है। िो गचर्त् की निर्वकिल्प समागध है वह, साधि का फल है और मुझ निर्वकिल्प आत्मा की 'िो समागध है वह आत्म तत्व के बोध का फल है। तो िो गचर्त् के निर्वकिल्प की समागध है वह एि-कि-प्रकारेण गचर्त् ककसी साधि द्वारा रोका िाता है लेकेकि वह समागध क्षखणक होती है। चन्द घटें के मलए हो, चन्द हदिें के मलए हो, चन्द कल्प के मलए हो। वह कभी ि कभी टूटती ही है। और वर्त् के निर्वकिल्प की िो समागध है वह परदेश की है, स्वदेश की िही ांहै क्योंकक गचर्त् को निर्वकिल्पा करि का िो वर्कल्प है, गचर्त् हमारा निर्वकिल्प हो, गचर्त् हमारा निरोध हो यह तो िीव देश में होता है, ि कक आत्म देश में । यह िो वस्तु लखाई िा रही है वह स्वदेश की चीि है अठटिां यिो करके िो साधि द्वारा समागध लिाई िाती है वह 'इिडायरेक्ट' (Indirect) है । और अभी िो बताई िा रही है वह 'डायरेक्ट' (Direct) है। िब मुझ आत्मा से मभन्ि कुछ िही ांतो गचर्त् 'म'ैं ही हूां। इजन्त्रया ां'म'ैं ही हूां। 'ओममत्येदक्षरम्'् है तो समागध ही समागध है ।

ककसी-ककसी हृदय में वर्कल्प होता है कक अिर हम समागध में है तो आविा हमारे कािा में क्यों सिुाई देती है। अरे ! यार- िो पहांहत के पत्रा में वह पडांडताइ के अिुंली में । अिर हम समागधस्थ हैं तो किा में आविा हिीांआिी चाहहए अिर यह अिुभव करते ेहो तो सच्चाई से दूरू हो । िब 'ओममत्येदक्षर सव'ि तो आविा भी अध्यास है। अिर मािो तो आविा है और ि मािो तो 'म'ैं ही हूां।

"अभूतामभतनर्ेशाद्धि सदृशे तत्प्रर्तति ।

स्त्र्भार्ं स बुद्ध्र्ैर् तनःसङ्.र्ं र्तनर्तति े॥७९॥

(िौड पा. काररर. अलात् ्शानांत प्रक. मत्रां क्र. ।।७९।।)

िि अभूत है, मि िो है ही िही ांतिी काल में उसमे इस गचर्त् का 'अमभनिवेश' है। 'अमभनिवेश' कहते ेहै 'आग्रह' को िो 'अमृत्' है वह वैतथ्य' है। उसको यह गचर्त् 'है' ऐसा मािकर िाता है। मिर िब वहाांिािा है तो वस्तु का अभाव देखता है, तो स्वरूप में वापस आ िाता है। अभूत में इस गचर्त् का आग्रह होता है िैसे ेमिृृल है हिीां, केवल िलाभास है क्योंकक हररण मािता है कक िल है और छलिाां मारकर िाता है और िल िहीांपाता तो निस्सिां हो िाता है। वस्तु के अभाव सेनिस्सि हो िाता है यिो यह मि निर्वषय हो िाता है। मि का निस्सिां हिोा यिो मि का ब्रम्ह हो िािा । 'म'ैं आत्मा हो िाता है। स्वरूप ही हो िाता है, यह 'मि' । तो वस्तु का अभाव िािकिर यिो िल का अभाव िािाकर वह हररण लौट आता है, निराश हो िाता है। यही निस्सिांता है। निर्वषय हो िाता है।

"अभेददशनं ज्ञािांध्यानं तनर्र्षयं मनः ।

स्त्नानंमनोमल त्यार्ः शौचममन्द्न्द्रयतनग्रहः ।।"

"श्रुनत"

अभेद दशि-मुझ आत्मा सेमभन् कुछ भी िहीां है यही तो ज्ञि है और मि निर्वषय हो िाता है, यही ध्यिा है। आखां बन्द करिे के मायिे ध्यिा िहीांहै। आखां बन्द हो िाय मिर मीिराम बन्द हो िाय तब ि । मि निर्वषय हुआ तो मि कहााँ रहा, भि- वाि हो िया स्वरूप ही हो िया।

अभेद दशनं ज्ञानम्; ध्यानं ंतनर्षय ाँमनः ।

'मि' का मल है वर्क्षेप । खामख्वाह िो चीि िहीां है उसको मि रहा है यह अिादिकाल से ।

"स्त्नानंमनोमल .... शौचममन्द्न्द्रय तनग्रह ॥"

िैसे ेरज्जू में सप िकी भ्ाांनत होती है ऐसेही सव िमें व्यापक िो 'म'ैं सिनत ब्रम्ह हूां तृणृ से आहद ब्रम्हा पयंत सारे चराचर का िो कजल्पत ज्ञि यह अज्ञि है। अभेदे दशि क्या है ? यिो इसका क्या प्रमाण है कक मुझ आत्मा का, अपिे आपको अपिे स्वरूप आत्मा का ज्ञि है क्या ? इसका क्या प्रमाण है ? इसका प्रमाण यह है कक अपिेस्वरूप 'म'ैं आत्मा सेएक नतिके से लेकर ब्रम्हा पयंत कोई भी मभन् ि हदखाई दे। अपिेसे ककसी की दुाई हदखाई ि दे कक में ज्ञिी हूां और तुम अज्ञिी हो। यह प्रमाण है। यह मीटर है। अपिे से दूसूरे की प्रतीत ि हो इसी का िाम अभेदे दशि है, भेद ि देखिा ही अभेदे दशि हैं ।

'ब्राम्हणेपुल्कसे स्त्तेने ब्र्म्हण्येऽके स्त्फुमलर्के ।

अकूरूरे कूरूर के चैर् समदृक् पन्द्ण्डतोमतः ।।"

(श्रीमदभािवत् एका. स्कांघ, अध्याय २९ श्लोक १४)

अकूरूर और कूरूर में िब भेद हदखाई ि दे वह ब्राम्हण है ।

'र्द्या र्नय सम्पन्द्ने ब्राम्हणेर्हन्द्स्ततन ।

शुतन चैर् श्र्पाके च पन्द्ण्डताः समदाशिनः ॥

(श्रीमद्भि. िीता अ. ५ श्लो. १८)

अभेद दशि ककसकी दिे है ?

ओममत्येदक्षरममद सवभ्- इसकी दिे है। िब मुझ आत्मा से मभन् कुछ भी िहीांतो भेदे दृजठट का स्वभावतः त्याि हो िायिा। रामायण की चौपाई कहती है।

'ज्ञान मान जहाँ एकउ नाहीं, देखत ब्र्म्ह रूप सब माहीं ां।

हिा ांएकउ िाहीांमिा तहाँ ज्ञिा और िहा ांज्ञिा- देखत ब्रम्ह रूप सब माही ां। यही अभेद दशि है। ककसी ककस्म की मान्यता िि हो िि ज्ञिा की िि अज्ञिा की, िि बद्ध की िि मुक्त की। यह िारा- यण पद का बोध कराया िा रहा है िि कक ज्ञिा पद का। यह िारायण पद का र्ववेचि है। तो क्यों भैय्या ? भिविा देश में भी 'म'ैं ज्ञिी हू। क्या भिविा भी मिाता है कक मुझे ेस्वरूप का बोध हो िया, तुम्हें िहीांहुआ। उस देश का पररचय तुम्हें हदया िा रहा है, उस देश का दशि तुम्हें कराया िा रहा है। यह भिविा पद है यह िारायण पद है। यहाांििविभाव है िि ब्रम्हभाव है िि ज्ञिी भाव है िि अज्ञिी भाव है और यहद भाव है तब सब चीिों का भाव एक है। 'ओममत्येदक्षरममदां सवर्म्् एक प्रश्ि होता है ?

स्वामीिी, िब मुझ आत्मा से मभन्ि कोई है ही िहीांतो कफर यह पुण्यात्मा और पापी, ऊांच–िीच, ज्ञिी-अज्ञिी और फला ांधम,िि फला ांमिहब और फला ांसोसायटी यह क्या है ?

अरे यार इसी का िाम तो "अज्ञिा" है। यहााँतो ज्ञिा का स्वरूप बताया िा रहा है स्वरूप देश में खडे ेहोकर तुम प्रश्ि करो तो इसका उत्र्र सोचा िाय । मि का निर्वषय हिोा क्या है ? चाहे मि के निर्वषय हिोका िाम ध्यिा कहो, अथवा मि के आत्मा हो िािोको, सिार्त् ब्रम्ह हो िािोका िाम ध्यिा कहो एक हीांबात है ।' क्योंकक आत्मा निर्वषय है। तो मि िब निर्वषय हो िाता है, निर्वषय हो िािा यिो स्वरूप हो िािा ।' सकांल्प और र्वकल्प से िो यह मि रहहत हुआ तो आत्मा हो िाता है यह मि । इसी का िाम है ध्यिा । यहद यह र्वकल्प होता है कक अभी स्वामी िी िि थोडी देर के मलए अिम्यास के अभ्यास में बैिाया था तो आविा क्यों आई ? तो बेहोशी को समागध कहते ेहैं तो इतिा कठट उिोकी क्या िरूरत है ? क्लोरोफाम िसूघां लो, िीदां की िोली खातो कफर तुम्हारे ऊपर चाहे िािर चढ़े समागध ही समागध है। अरे समागध तो उसे ेकहतेहैं कक जिस अवस्था में तुम्हारी 'घी' यिो बुद्गध सम हो िाय, उसको समागध कहते ेह।ैं इस हो खूत्र बताएिैं।

यह देह है। देह को िािोपर देह है कक देह को िमिो पर देह है ? देह को िमिो पर देह है िािोपर तो 'में' आत्मा ही हूाँ। इसी तरह आविा को िािोपर आविा है कक आविा को िमिो पर आविा है तो कफर मिाते े ही क्यों हो ? देखो, ककस समय आविा, आविा िहीांहै, आविा 'म'ैं हूाँ। िब यह र्वकल्प िि उिे कक यह आविा है।' आविा िसुे से गचर्त् को िब ग्लानि िि हो तब समझिा आविा 'म'ैं हूाँ। किा में आविा िौसे 'अरे' ऐसा िि हो शोक िि हो ।' आविा िि आए तो हष िि होय तव समझिा कक 'में' हूाँ। तब समझिा कक यह मि निर्वषय हो िया । शब्दा- हदक र्वषय के ग्रहण त्यिा में मि िब उदासीी हो िाय तब समझिा यही निर्वषय मि है और यही भिविा का ध्यिा है। और यही मि का निस्सिां हिोा है। मि का निराश हिोा है। "उदासीी बदासीम्"् और यही भिविा कृठण का आिसक्त यिो है ।।

'अभूतामभतनरेशाद्धि सदृश.... तनःसङ्गं र्ंन्द्न्द्रततिे ॥७९॥

(वही)

'अभूत' कहते ेहैं- खामख्वाह ककसी को मिा लिो । यहद बाई आप के शब्दों पर ध्यिा िहीांदेता अपिा हो मारता है उसे ेअमभ निवेश कहते ेहैं। अभाव में अमभनिवेश हिोसे यिो आग्रह करिे से यह गचर्त् िाता है ग्रहण करिे के मलए मिर जिस वस्तु को ग्रहण करिे के मलए यह गचर्त् िाता है, उसका अभाव ििाता है िब अभाव िीतिा है तो निराश हो िाता है। निर्विषय हो िाता है यिोभिविा आत्मा हो िाता है थोडी देर पहले ेहम बता चुके हैं कक एक समागध होती है गचर्त् के निर्वकिल्प की और एक समागध होती है निर्वकिल्प की। निर्वकिल्प मिो आत्मा ।

गचर्त् के निर्वकिल्प की समागध है वह तो लिाई िाती है । अठटिाां यिो इसी के मलए है। परन्तु निर्वकिल्प की िो समागध है, स्वरूप की िो समागध है यह लिाई िहीां िाती यह स्वभावतः मसद्ध है यह पहले ेसे ही है। और

इसी निर्वकिल्प आत्मा की ही समागध में सारे काम रात-हदि हो रहे हैं। तो कफर तुम क्या समझा रहे हो ? तुम क्यों सूपा पीट रहे हो ? यही समझा रहे हैं। हम कोई िई चीज़ िहीांसमझा रहे हैं। तुमको स्वरूपस्थ करिो के मलए, तुमको स्वरूप ज्ञाि करिो के मलए िहीांकह रहे हैं। स्वरूप ज्ञाि तो तुम्हें पहले ेसे ही है। स्वामिीी पहले ेसे है ? हा ाँ िी ! पहले ेसे है। कैसे ेहै ? बतातेहैं- "में हूाँ" यह ज्ञाि तुम्हें कहााँसे ममला ? "म ैंहूाँ" कहा,ाँ ककस स्कूल में ककस कालिे

में ककस िुरू से पढ़े ? स्वतः मसद्ध है ि । चाहे देह मिाकर हूाँ। चाहे पशु पक्षी मिाकर 'म'ैं हूाँ। मिर 'में' हूाँ यह ज्ञाि कहा ाँसे ममला। और हर हालत में 'म'ैं ही तो हूाँ। "म ैंहूाँ" का ज्ञाि कही ांसे िहीांममला स्वतः मसद्ध है। "में" का ज्ञाि

सभी को है। भैय्या ! इसी का िाम तो ज्ञाि है। "में" 'हूाँ' । क्यों िी िब देह की कोई याद कराता है तब में देखता हूाँ ? दूसूरे के कहिे से । यहद में देह हूाँ, यह ज्ञाि सत्य है, तो हमारे व्यावहाररक िित के प्रत्येक काय िमें मुझ आत्मा का देह भाव क्यों िहीांरहता ? यहा ांिि प्रकक्रया है ि मसद्धाांत है। अभी िैसे ेकथा सिु रहे हो तो देह भाव में सिु रहे हो कक आत्मभाव में सिु रहे हो ? आत्म भाव में। इसी तरह तुम्हारे जिति काय िव्यावहाररक िित में होते ेहैं वे देह भाव में होते ेहैं कक आत्म भाव में ? तो यह 'में' का ज्ञाि कहााँआसमिा से आया ? स्वतः मसद्ध है। िो चीज़ िैसी है

उसको वैसेही लखा देते ेहैं। अरे भाई ! में देह हूाँ यह में बोल रहा हूाँ कक देह बोल रहा है कक िाक बोलती है कक किा बोलता है कक मि बुद्गध गचर्त् अहांकार बोलते ेहैं? अरे ! िो में हूाँ, ऐसा "में" ही कहता हूाँ, कक ये इजन्रया ांअथवा शरीराहदक ? 'में' ही कहता हूाँ। तो कफर यह ज्ञाि तुम्हें कहााँसे ममला ? इसमलए देह िहीं। आत्मा हूाँ यह कहिे िसिु की िरूरत िहीांहै। अब हो िए ि देहाहदक प्रपचां वैतथ्य ! ये वताांथ्य है यिो तथ्य ही िही है.।

आदान्र्दते च यन्न्ान्दस्त ... **इर्ल्क्षक्षता: ॥३१॥**

(िौड पा० काररर० अलातशाजन्त० मत्राां स ां॥३१॥)

आहद अांत में िहीां तो वतिमिा में भी िहीां। सत्य के समिा अक्षक्षत तो होता है, पर है िही।ां तो इसी तरह मि ि पहले ेथा, ि मि अांत में है, ि वतिमिा में है। यह मि "वैतथ्य" है यिो तथ्यहिी है और इसके अदांर िो तथ्य है वह "में" हूाँ। अब िब यह गचर्त् िहीांतो गचर्त् कजल्पत दृश्य भी िही।ां प्रश्ि होता है- कक िब ससाांर प्रपचां तिी

काल में है िहीं तो यह पैदा तो िहीं हुआ "प्रपचां" । इसका कोई वूिद िहीं है देहादक प्रपचां का । 'है' िहीं, मिाा िाता है। मि को ककसिे मिाा ? मि मुझ आत्मा की सृजृठट है। तभी तो कहता हूाँ, मेरा मि । मेरा पुत्र, िो र्पता कहता है तो अपिे आपको कहता है कक अपिे से मभन्ि को ? िो जिसकी चीि होंी उसी को तो कहेिा। ककसी के पुत्र को उसका र्पता ही कह सकता है-- मेरा है। पुत्र वेतथ्य है। पुत्र के अन्दर िो तथ्य है यह र्पता का है ।

मुझ आत्मा पर मि का अध्यास है। परन्तु एक चीि और समझो । 'मं' तथ्य रूप 'आत्मा' को ही वैतथ्य मि िे िित प्रपचां मिाा है। तो मि का भी अगधिठिा और प्रपचां का भी अगधिठिा में ही हूाँ। 'मं' हो तथ्य हूाँ और बाकी सब वतथ्य है। इसीमलए-

"धचत्तं न संस्त्पृशृत्यथं नाथाभिसं तथैव च !

अभूतो हह यतश्चाथों नाथाभिासस्त्ततः पृथक"

(िौ० पा० कारर० आमातशा० प्र० म०ां स०ां ।।२६।।)

ितो यह गचर्त् पैदा होता है ि यह गचर्त् जिसमें िाता है वह दृश्य पैदा होता है। तो गचर्त् और दृश्य दोिों की िी उत्पर्त् मािते हो, इिको िमिाा ऐसा है कक िैसे आकाश में पक्षी के चरण गचन्ह देखिा है। गचर्त् कहो, मि कहो, देह कहो । इसी तरह ससांार प्रपचां की उत्पर्त् िमिाा ऐसेही है िैसे आकाश मण्डल में पक्षी के चरण गचन्ह देखिा ।

अब चार बि रहे हैं, आि का प्रवचि यहीं समाप्त होता है।

ॐ पूण िमदः पूण िममदं, पूणात्पूिण िमुदच्यते ।
पूणस्त्यि पूणमिादाय, पूण िमेवार् मशष्यते ।।
ॐ शान्द्न्द्तः ! शान्द्न्द्तः ! ! शान्द्न्द्तः !!!

द्र्वतीय हदवस का प्रवचि

(मंर्लर्ारहदनांक१३नर्म्बरसन्१९७३समय१० से १२)

कल के प्रसिां में पहलेमत्रां की व्याख्या हुई थी।

ओममत्येतदक्षर ममद्ध सर् ितदप्योङ्कार एर्!

समस्त चराचर "म"ैं आत्मा हूाँ, मुझ आत्मा से मभन्ि कुछ िही।ां इसकी व्याख्या क्या है ? तो कहते ेहै-- िो था, िो है, िो रहेिा सब कुछ 'म'ैं आत्मा हूाँ।

जिज्ञासुओ !

"नात्मभारे्न नानेदं न स्र्ेनार्प कथंचन ।

न पृथृङ नापृथाक्ककिधचहददतत तत्र्र्दो र्द्ुः ॥

(िो० पा० काररर० वैतथ्य प्रकरण मत्र सoां ॥३४॥)

ितो आत्मभाव सेमिथ्यात्व है और ि स्वय ांअपिे भाव से मिथ्यात्व है। ि स्वयां करके यह अिेक है यह द्वैत प्रपचां । ि अपिेकरके मिथ्या है यह मिथ्यात प्रपचां । मिोएक है। ि यह ककसी से मभन्ि है, ि ककसी से अमभन्ि है। िब कक अपिे आपके मसवाय दूसूरी सर्त्ा है हो िहीांतो कफर पृथृक और अपृथृक का सवाल ही पैदा िही ां होता । ये जिति श्लोक कहे िा रहे हैं ि, ये सब काररकाए हैं। भिवाि िौङपादाचाय िकी । भिवाि् ्िित् ्िुरू शकांराचाय िके दादा िुरु हुए हैं भिवाि िोर्वन्द पादाचाय ि। भिवाि िोर्वन्द पादाचाय िके िुरु हुए हैं स्वामी शुकदेव िी महारिा । ये काररकाए ांप्रमाखणत हैं और वेदान्त के शास्त्री खण्ड में पढ़ाई िाती हैं। बडे- बडिे

ब्रह्मवेर्त्ा पुरुष हैं, आत्म वेर्त्ा पुरुष हैं वे ऐसा कहते ाेहैं-- वे ऐसा ाि◌ाते ाेहैं। अज्ञािी; क्या ाि◌ाेा। अज्ञानियों की दृजठट में तो अिेकत्व ही है।

देखो - यहद अगधठिा अिेक हो तो उसमे ाे कजल्पत पदाथ ाि◌ है वह भी अिेक हो। ाि◌ब अगधठिा एक है तो उसमें ाे कजल्पत वस्तु है वह भी एक है। तो ाि◌त प्रपचां का अगधठिा 'में' आत्मा हूाँ। और मुझ आत्मा में ही िति ाि◌ल अध्यस्त है। आत्म भाव करके यह ाे प्रपचां है ाि◌ तो ाि◌ा है और ाि◌ अपिे आप करके अिेक है ाि◌ ाि◌ा है। मभन्ि हैं ाि◌ अमभन्ि है। ाि◌ब अिेक ाि◌हीांतो ाि◌ यह अपिेआप से मभन्ि मिभन्ि का र्वकल्प तो तब होता हैं बि अपिे आप सेकोई परे हो। मुझ आत्मा से मभन्ि कोई चीज़ और है ही ाि◌हीांतो यह प्रश्ि पैदा हो ाि◌हीांहोता। अब इसको तकि और युजक्त द्वारा समझो :--

ाि◌ ाि◌ा भाव है यिो अिेकता है। यहद अिेकता अिेक में हो तब तो अिेकता अिेक है और यहद अिेकता एक में है तो कफर अिेकता अिेक ाि◌ होकर एक है। अिेकता का आधार यहद अिेक है तब अिेकता अिेक है और यहद अिेकता का आधार एक है तो अिेकता एक है। अिेकता को यहद अिेक मसद्ध करता है तब तो अिेकता अिेक है और यहद अिेकर्त्ा की मसद्गध एक में है तो अिे- कता एक है। अव प्रश्ि होता है ? यहााँपर कक- हमें तो अिेकता हदखाई देती है। हमें तो अिेकर्त्ा प्रतीत हो रही है। में तो अिेक देख रहा हूाँ। तो म ाैंएक कैसे ाेसमझू ाू ? ाि◌ीक है भैय्या ! तुम ाे अिेकता देख रहे हो तो तुम एक होकर अिेक देखते ाेहो कक अिेक होकर अिेक को देखते ाे हो तुम ाे अिेक को देखते हो तो एक होकर अिेक को देखते ाेहो कक अिेक होकर अिेक को देखते ाेहो। ाि◌हीां, एक होकर अिेक को देखते हो। एक से अिेक को देखते हो तो कफर अिेक कहा ाँ? अिेक में से एक निकाल लिे पर यहद अिेक अपिेस्थाि पर बिा रहे तब तो अिेक, अिेक है और एक के निकाल लिेपर यहद अिेक ाि◌हीांरहता तो कफर अिेक ाि◌हीांहै, एक का ही ाि◌ाम अिेक है।

ाि आत्मभाव से ाि◌ा है और ाि◌ स्वय ाांकरके ाि◌ा है यिो ाि◌ा है ही ाि◌हीां। यह एकता, यह एकत्व ककतिा ाि◌ास है। यह एकत्व ककतिा ाि◌ास घि है कक एक र्पि भी ाि◌हीांाि सकती इसके अदांर और मि एक, बुद्गध एक, गचर्त् एक, अहांकार एक, प्राण एक, आखां एक, किा एक। स्वामी ाि◌ी ! तुम आखाँ को एक कहते ाेहो। आखां तो दो है, समझो - एक आखाँ सिुे और एक आखाँ देखे यहद ऐसी बात हो तब तो ऐसा कहिे में हि ाि◌हीांकक आखाँ दो हैं। अरे ! ाे इस आखाँ का काम वही उस आखाँ का काम। इसी तरह किा एक हैं। तो कफर अिेकता कहा ाँसे आई ? कैसे ाे तुम देख रहे हो ? दूसूरी चीज़ यह है। अिेक को ाे तुम देखते हो। अरे भाई ! अिेक हदखता ाि◌हीांक्योंकक ाे कजल्पत पदाथ ाि◌होता है, अगधठिा ही है। अरे भाई ! "डडांा-" लकडी देख रहे हो कक डडांा। लकडी। आभूषण में ाे पीलापि देखते हो वह आभूषण का है या सिो का। सिोका लचीला पि देखते हो वह आभूषण का ाि◌ही ाांहै सिो का है। ाि◌ुरूत्वपिा यिो ाि◌विपिा देखते ाेहो वह भी सिोका ही है कफर आभूषण कहा ाँ? यह निर्ववाद मसद्धाांत है कक ाि वैकजल्पक पदाथ ाि◌है वह ाि◌हीांहदखता ाि◌ैसे ाे'डण्डा' वैकजल्पक है। लकडी पर डण्डे का र्वकल्प ककया ाि◌या है वस्तुतः डण्डा है ही ाि◌हीांलकडी है। वैकजल्पक - पदाथ ाि◌देखा ाि◌हीांाि◌ाि◌ा। है, ही ाि◌हीांतो हदखिे◌ा क्या ? वह तो - ाि◌ि◌ी होता है, र्वल्कुल झिूा। अभाव रूप है। डण्डेसे लकडी = निकाल लिेपर अिेर डण्डा हदखाई दे तब तो डण्डा हदख

रहा है बौर यहद लकडी को निकाल लेिपर डण्डा िही ांहदखाई देता तो लकडी ही है। िित् ्प्रपचां से अपिेको निकाल लेिपर यहद प्रपचां हदखेतब प्रपचां हदख रहा है और यहद आत्म तत्व को निकाल लेिपर प्रपचां िहीं हदखता तो कफर "में" ही हूाँ।

ि किजल्पत पदाथ िहै वह हदखता िहीां। खाली शब्द ही शब्द सुिाई पडेऔर देखिेचलो तो वह वस्तु ि ममले ेउसे ेर्वकल्प कहते ेहैं। देह िहीांहदखता "म"ैं देह िहीं हदख रहा है। यह तो र्वकल्य है और िो भी चीज़ तुम देखते हो वह सभी र्वकल्प है। िो भो देखते हो अपिेआपको देखते हो चिी को िहीांदेखते । तो िित् ्प्रपचां िसुि की चिी है क्योकक कजल्पत वस्तु है। अरे भाई ! जिस मि की मशकायत करते ेहो कक मि बडा चचांल है तो भाई तुमिे मि को कभी देखा है। सुिा है कक िो आएि–िए उसेमि कहते ेहैं। िो चचांल हो और जस्थर हो उसे ेमि कहते े हैं। िही ांतो देखे हो तो बतादो कक 'मि' कैसा है ? िोरा है, कक काला है, लम्बा है कक िौडा है। कुछ िही ां। सब र्वकल्प है मुझ आत्मा के बबिा देखे, जिर प्रपचां यहद अपिे आप हदखता हो तब तो प्रपचां है और जिर म ैंदेखता हूाँ तब हदखता है तो कफर 'म'ैं ही हदखता हूाँ, प्रपचां िहीांहै। 'प्रपचां' को 'प्रपचां' देखता है कक प्राचां को 'में' देखता हूाँ । देहाहदक प्रपचां को देह को, देह देखता है कक देह को 'में' देखता हूाँ, 'मि' को 'में' देखता हूाँ, 'गचर्त्' को 'में' देखता हूाँ, 'अहांकार' को 'म'ैं देखता हूाँ। तो 'म'ैं िो 'देह' को देख रहा हूाँ तो कफर देह हदख रहा है कक में हदख रहा हूाँ ? अरे ! इजन्रयााँकजल्पत को ग्रहण करती हैं कक मुझ आत्मा अगधष्ठाि को ? कजल्पत को ग्रहण करती है। कजल्पत को र्वषय करती हैं इजन्रयााँ, ि कक मुझ आत्मा को । इस- मलए ि आत्म भाव करके िािा है ि स्वय ांकरके िािा है यह िि देह हदखाई दे रहा है। यह वेह है। िो हदख रहा है, अरे हदखिे वाला देह है या देखिेवाला देह है समझो ! यिो यह िि देख रहे हो यह हदखाई दे रहा है। तो हदखिे ेवाले को देह कहते ेहो या िो इसको देखता है उसको देह कहते ेहो । हदखिेवाला देह है कक देखिे वाला देह है ?

पहले ेप्रश्ि समझो ! अरे भाई ! 'हदखिा' शब्द है वह देह के मलए आता है या देखिे वाले के मलए आता है ? देह अगधष्ठाि है या अध्यास ? अध्यास । इण्डा अध्यास है कक अगधष्ठाि ! अध्यास । इसी तरह देह अध्यास है कक अगधष्ठाि ? अध्यास तो क्या अध्यास हदखता है ? अरे भाई, आभूषण देखते ेहो कक सोिा ? सोिा । तो आकार प्रकार देह है कक िो हदख रहा है वह देह है? आकार- प्रकार । यिद जिर यह लकडी लम्बी ि हो तो डण्डा रहेिा क्या ? लम्बायमाि होिे से ही तो इसका िाम डण्डा पडा। यिो आकार- प्रकार से । तो यहद इसमें आकार प्रकार ि हो तो देह रहेिा क्या ? तो कफर मिर तारीफ यह है कक लम्बेपि भी लकडी है। तो इसी प्रकार 'में' आत्मा आकार-प्रकार में भी तो हूां। तो म ैंही तो हूां। तो 'म'ैं हदख रहा हूां कक शरीर हदख रहा है ? यह अध्यात्म है। बुद्गध का र्वषय थोडे ही है। बुद्गध तो साहहत्य को ग्रहण करती है। यहाांतो साक्षात्कार कराया िा रहा है। "सेल्फ ररयलाइिेशि" है यह ।

इसीमलए भिवाि श्री कृष्ण िे कहा है िीता में-

'आश्चयरि्त्पश्यतत कश्चेन्द् देनमाश्चयरि्द्रदतत तथैर् चान्यः ।

आश्चयरि्च्चैनमन्यः श्रृणोतत शुरुत्राप्येन रे्द न चैर् कन्द्श्चत् ्। २९।'

(श्रीमद्भिवतद्गीता अ. २ श्लोक २९)

कोई इसे ेआश्चयदित् ्देखता है, कोई आश्चयवित् ्सुिता है कोई आश्चय िके समि कहता है। परन्तु आश्चय िहै उसको िो इसे ेदेखता है और कथि करता है उसको भी आश्चय िहै। क्यों ? इसमलए कक महासिार में गोता (डुबकी) लिाकर उसके अदांर से अिमोल रत् िको निकालकर िो व्यक्त करता है वाणी के द्वारा आश्चय ि है। इसका कथि करिा हरएक का काम िहीांहै भैय्या। एक श्रुनत आती है-

'श्रणार्यार्प बहुतनयो न लम्यः श्रृण्वन्तोऽर्प बहरो यं ंन र्द्युः।
आश्चयोक्ता कुशलोऽस्त्य लब्धाऽऽश्चयो ज्ञाता कुशलानुमशष्टः।७।'

(किो. उप.ि.ां ७)

ब्रम्ह र्वद्या के सुििे वाले बहुत िहीांहै। बिार िही ांलिा है और सुििे वालों में से िािे वाले भी बहुत िहीांहै। एक तो सुििेवाले बहुत कम हैं इसके, दूसूरा प्रश्ि होता है, कक स्वामीिी ! आपके प्रवचि में तो बहुत भीड होती है। भैय्या ! ब्रह्मर्वद्या की यह महहम्मा है कक पशु-पक्षी स्थावर िांम सभी समागधस्थ हो िाते ेहैं और यह स्वािुभूनत है परन्तु श्रुनत भिवती का यह कहिा बबल्कुल सत्य है। एक तो सुििे वाले कम हैं और सुििे वालों में से िाििे वाले बहुत कम हैं। दूसूरा प्रश्ि - स्वामी िी आपके ब्रम्ह निरुपण में हिारों बैिे रहते ेहैं। उस समय तो उि हिारों सुििे वालों में से बहुत कम होंिे िो स्वरूपस्थ ि हो िाते ेहों चाहे थोडी देर के मलए ही क्यों ि हो। यह अध्यात्म र्वद्या का िो प्रवक्ता है उसकी शजक्त है उसका सकांल्प है। सारा र्वश्व समागधस्थ हो सकता है कोई आश्चय िहीांहै। हाांिी ? आ िाओ र्वषय पर जिसका निरूपण हो रहा है जिस ब्रम्ह तत्व का, जिस आत्म तत्व का निरूपण ककया िा रहा है। निरूपण कतृत्विहीि है। साहहत्य का निरूपण तो िीव देश से होता है। बुद्गध का र्वलास है, बुद्गधिद है। सुन्दर-सुन्दर शब्दों का र्वन्यास, शब्दाडबांर, बुद्गध का र्वषय है और िीव देश से हो सकता है साहहत्य का निरूपण। परन्तु िो आत्म तत्व का निरूपण है, अरे प्रेजक्टकल है थ्योरी िहीांहै। प्रेजक्टकल अिुभूनत वह तो स्वय ांसे हो सकती है और स्वय ांही इसको करिा, दूसूरा कौि कर सकता है ? अरे ! एक चीज़ और है, जितिे यहाांबैिे हो पडांाल में दीिों समि में तुभ सबों को अपिे आप से मभन्ि मािकर ककतिा भी मत्या पटकू तुम्हें समझािे के मलए तो कभी समझ में ि आएिा। हर हालत से हम स्वरूपपस्थ होकर कहतेहैं तब तुम्हारे समझ में आता है। यह तो मािव िित है, पशु िित में ले चलो हमें, उन्हें भी ऐसा ही बोध होिा आकार-प्रकार भले पशु का है मिर में ही तो हूां। तो कफर देर ही िहीांसमझािेमें। तो भैय्या ! लम्बायमाि को डण्डा कहिे ि। तो यह िो आकार-प्रकार है तो कफर उसमे ेदेह की कल्पिा की िई है। यह देह है हाांकफर दूसूरी कोहट- अरे देह-देह-है, कक है-देह है ? आभूषण-आभूषण है कक सोिा आभूषण है ? सोिा आभूषण। तो कफर 'देह-'देह है' कक 'हैं'-देह है ? 'है' देह 'है' इस इस प्रकार के बोध में देहामभमाि का िाश हो िाता है और पहली बात यह है कक कोई चीि पैदा ही िहीांहोती। वाह! हा,ां िी।

"न कन्द्श्चज्जायते जीर्: संभंरोऽस्त्य न र्द्यते।

एतत्तदुत्तमं सत्यं ंयत्र ककंधचन्द्न जायते।'७१।

(ि ौ. पा. काररर. अलातशानांत प्र. मत्रां स. ां ॥७१॥)

यही उत्र्म सत्य है कक कोई चिी पैदा ही िहीांहोती। वाह ! हा ांिि ! कफर - तो ि ो हदख रहा है 'हदखैि' को 'हदखिा' देखते हो कक हदखैि को देखिा देखते हो ! ि ो हदख रहा है तो हदखैवाला देखैि को देखता है ि ो हदखता है तो हदखैि े को देखिा देखते े हो कक हदखता क्या है ? देह तो हुआ हदखिा । तो कफर देह को देह देखता है कक देह को म ैं देखता हूां । देह को म ैं देखता हूां । 'देह' को देह तो िहीांदेखता है देह' को 'में' देखता हूां। िीक है देह से मभन्ि होकर देह को देखता हूां या दह ही होकर दह को देखता हूां। देह से मभन्ि हो िाऊां तो देह िहीां। डण्ड से लकडी अलि कर लो डण्डा िहीां, लकडी अिि डण्डे से मभन्ि हो तो डण्डा िहीां। मभन्िामभन्ि हो तो डण्डा िहीांइसमलए लकडी ही डण्डा है। तो यहद देह से में मभन्ि हूां तो देह िहीांक्योंकक अगधष्ठाि से मभन्ि होकर रहेिा कहा ांिबकक लकडी ही हदख रही है। तो म ैं इसमें (शरीर) अलि हो िाऊां तो यह रहेिा कहा ां। मभन्ि हूां तो देह िहीां, अमभन्ि हूां तो देह िही। ां मभन्िामभन्ि हूां तो देह िही। ां तो देह देखते हो तो देह होकर ही देह को देखता हूां जिसको भी म ैं देखता हूां वही होकर में उसको देखता हूँ और यह तारीफ है कक मुझ भिवाि 'आत्मा' को कोई िहीांदेख पाता । िब वही होकर उसको म ैं िािता हूां तो मुझे कौि देख सकता है। इसमलए मुझ भिवाि आत्मा की ओर ककसो की दृजठट िहीांिाती। इसमलए में देह िही। ां 'म' ैं भिवाि आत्मा की ओर ककसी की दृजठट िहीांिाती । इसमलए में देह िही। ां म ैं भिवाि है । 'मे इतिा ि ोस हूां. इतिा घि हूां कक ककसी का दृजठटपात िहीं होता। सबकी दृजठट वर्शेष की ओर िाती है सामान्य की ओर िही ांिाती। वर्शेष की तरफ िाती है, सामान्य की तरफ िहीांिाती है क्योंकक वर्शेष पररजच्छन्ि होता है और सामान्य सव ि होता है। वर्शेष ककसी के अिुकूल होता है तो ककसी के प्रनतकूल । परन्तु सामान्य सवे में सव ि है।

"यजस्मि ् सवं ंयतः सवं ंयत्सवं ंसवततिश्चयत ् ।
यच्च सव िमयां नित्यां तस्मैसैवात्मिे िमः ॥"

म ैं सव ि हूँ । आखाँ में आखाँ रूप से हूँ, काि में काि रूप से हैं। जिव्हा में जिव्हा रूप में हूँ। अरे ! जिसमें हूँ उसमें वही रूप हूँ। लकडी डण्डा रूप से है, यह थोडे े है कक लकडी अलि होय और डण्डा अलि होय । तो कफर जिसमें हूँ, उसी रूप से िब उसमें हूँ . तो कफर एक और दो का सवाल ही पैदा िहीांहोता ।

'देह' को यहद वर्कल्प कहो तब देह िहीांऔर वस्तु कहो तब देह िहीां। डण्डे को अिि वर्कल कहो तो डण्डा िही ांऔर लकडी कहो तो डण्डा िहीांइसी तरह देह को वर्कल्प कहो तो देह िहीांवस्तु कहो तो देह िही। ां इसी तरह सारे प्रपचां को वर्कल्प कहो तो प्रपचां िहीांऔर वस्तु कहो तो प्रपचां िही। ां तो अिि देहाहदक प्रपचां का अजस्तत्व यहद है तब तो एक और िाािा की कल्पिा हो सकती है और िब है ही िहीांतो िाािात्व भाव और एकत्व भाव रहेंि े कहा ाँ? अभी थोडी देर पहले े पूछा था जिज्ञासुओंसे कक 'है' देह है कक 'देह' देह है। वह हल िहीांककया िया है। "है" देह है या 'देह' देह है ? एक । 'है' देह है कक 'देह' 'है' है। मशव। 'हैं' देह है। 'देह' देह िहीांहै क्योंकक बबिा 'हैं' के 'देह' िही ांहै इसमलए 'है' देह है, देह यह िहीांहै। अजस्तव ही तो है। 'है' देह है कक 'वह' देह है। 'लकडी' डण्डा है कक

'डण्डा' लकडी है ? 'लकडी' डण्डा है क्योंकक बबिा लकडी के डण्डा 'िहीं' है। अच्छा । िीक उसी तरह 'है' देह है कक 'देह' 'है' है ? 'है' देह है। 'है' का िाम देह है कक 'है' का रूप देह है। ि है का 'िाम' देह है ि है का 'रूप' देह है िब कक 'है' ही देह है। देह देश से देह है कक 'है' देश सेदेह है। 'स्वण'ि देश से आभूषण है कक 'आभूषण' देश से आभूषण है। 'म'ैं भिविा आत्मा अगधष्ठिा आत्मा िब देखता हूँ तो म ैंजिस समय जिस चीिा को देखता हूँ उसको वही हो कर देखता हूँ या उससेमभन्ि होकर देखता हूँ। उससे मभन्ि होिे पर तो वह चीज़ ही िहींरहती । देखिे–ष्टिसेु का प्रश्ि ही कहा ाँ? अब अिुभव करो । 'मशव' जिस समय ककसी भी वषय का 'म'ैं आत्मा अिुभव करता हूँ उस समय शब्द, स्पश,ि रूप, रस और िधां हूँ यहद वषयों में जिस वषय का भी अिुभव करता हूँ। इसका क्या प्रमाण है कक उसका म ैं वही होकर अिुभव करता हूँ। इसका प्रमाण यह है कक- वषय के अिुभव काल में मुझ 'आत्मा' को यह अिुभव हिींहोता कक म ैंअिुभव कर रहा हूँ। िब कक्रया का अिुभव िहींहोता तो अिुभव िो कम िहै, वह कहा ाँिब कक्रया और कम िहिी ांतो कता िकहाँ ? क्या प्रमाण है कक में जिसका अिुभव करता हूँ वही होकर अिुभव करता हूँ। यह मोचािाहै अच्छा ! तो इसका यही प्रमाण है कक ककसी वषय के अिुभव काल में मुझ आत्मा की अमुक वषय का अिुभव कर रहा हूँ ऐसा अिुभव िहींहोता । ि तो वषय का अिुभव होता और ि 'म'ैं अिुभव कर रहा हूँ इस कक्रया का अिुभव होता है तो कक्रया कम िके अभाव में कत्र्ता का भी अभाव होता है। यहद जिस वषय का अिुभव करता हूँ वह वषय मुझे आत्मा से मभन्ि है सवथिा, तो उसके अिुभव काल में वषय का अिुभव हो । इसमलए प्रत्यक्ष प्रमाण है कक जिसको में अिुभव करता हूँ वही होकर करता हूँ वही होकर अिुभव करता हूँ। इसी तरह िब 'में' देह को देखता हूँ तो देह होकर ही देह को देखता हूँ। मिर देह के दशि काल में मुझे ेदेह रूप दृश्य की अिुभूनत िही ां होती। इसमलए देह ही िहीं है। प्रपच ही िहींहैं। शब्दाहदक वषय ही िहींहै। ि आत्मभाव से मििा है ि स्वय ांकरके मििाहै। ि पृथक ि अपूपृथक है और हम थोडे ेही कहते ेहैंश्रुनत कहती है- बडे-बडेतत्त्व वेत्ताओ ांिे कहा है ऐसा । कैसे ेतत्त्ववेत्ता ? बडे-बडेबीतरिा महापुरुष । आत्म िैजठिक पुरुषों िे इस आत्मा को देखा है उिका ऐसा कहिा है। दूसूरे, क्या मििा सकते ेहैं ? हााँिि, अिुभव करो। इस डण्डे से, डण्डेको डण्डा मािकर इससे अपिेआप को अलि करके 'म'ैं इसका रठटा हूँ और यह मेरा दृश्य है, इस भेद बुद्गध को लेकर डण्डा देखता हूँ तब तो डण्डा है िहीं तो म ैं हूँ। इसी तरह सब वषयों को समझ लो यििी ककसी वषय के अिुभव काल में वषयािुभूनत मुझ आत्मा को िहीं होती तो वषयािुभूनत का अभाव ही तो आत्मािुभूनत है शब्द, रूप, रस िधां और स्पश ियिी ककमी वषय के अिुभव काल में अिुभव करिे वाले को मुझ आत्मा को उस समय वषय का अिुभव िहींहोता तो वषय का अिुभव िहींहोता तो वषयािु- भूनत के अभाव में क्या अिुभव होता है ? यही आत्मािुभूनत है। जिौ ेपीछे तो वषय का वकल्प हिोा मिर एिवक्त में अिुभव काल में उस वषय की अिुभूनत िहीं होती। िब कक िहींहोती तो क्या अिुभव होता है उस समय ? अरे ! वही तो स्वािुभूनत है िो वाणो िम्य िहींहै। वियािुभूनत का अभाव ही स्वरूपािुभूनत है।

अब १२ बि रहे हैं मध्यावकाश के बाद २ बिे ेसेप्रवचि पिुः प्रारम्भ हिोा ।

समय २ से ४ बजे तक

तृणृ से आहद ब्रम्हा पयन्ति सारा िित प्रपचां 'म'ै आत्मा ह्ूां। मुझ आत्मा से मभन् कुछ भी िहीांहै इसके ऊपर एक काररका कही िाती है-

'नात्मभारे्न नानेदं न स्त्रे्नार्प कथंचन ।

न पृथृङ् नापृथृन्द्क्कंधचहददतत तत्र्र्दो र्र्दुः ।'

(िौ. पा. काररर. वैतथ्य प्रकरण म स. ।३४।)

यह िो अिेकत्व प्रपचां है, ि आत्मभाव करके अिेकता है और ि स्वय ांकरके अिेकता है यिाि ि एक करके अिेक है ि अिेक करके अिेक है। प्रपचां में ही अिेकता का र्वकल्प होता है। ि प्रपचां करके िािात्व भाव है ि मुझ आत्मा करके िािात्व भाव है । ि यह मभन् है ि अमभन् है ।

'जार्ररतस्त्थानो बहहष्प्रज्ञः सप्तांर्ः एकोनार्र्ंश

ततमुखः स्त्थूलभुग्र्ैश्र्ानरः प्रथमः पादः ।' (३)

(िौ. पा. काररर. अिोम प्र. मत्रां स.ां ।।३।।)

स्त्र्प्नस्त्थानोऽन्द्तः प्रज्ञः सप्तांर् एकोनर्र्ंशतत

मुखः प्रर्र्र्क्तभुत्तैजसो द्र्तीयः पादः ।४।

(िो. पा. काररर. अिो. प्र)

यर सुप्तों न कंचन काम कामयतेन कंचन स्त्र्प्न पश्यतत तत्सुषुप्तम् ।

सुषुप्त स्त्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एर्ानन्द्मयो ह्यानन्द्भुक्चेतोमुखः प्राज्ञस्त्तृतीयः पादः ।५।

(िौ. पा. काररर. अिोम प्रकरण म.ां स.ां ।५।)

'नान्द्तः प्रज्ञ न बहहष्प्रज्ञं ांनोभयतः प्रज्ञ न प्रज्ञानघनं ांन प्रज्ञं ांनाप्रज्ञम् ।

अदृष्टमव्यर्हायमिग्राह्यमलक्षण मंधचन्द्त्यमव्यपदेश्यमेकात्मप्रत्ययसारं

प्रपंचोपशम शान्द्तंमशर्मद्रै्तंचतुथ िमन्द्यन्द्ते ेस आत्मा स र्र्ज्ञेयः ।७।'

(िो. पा. का. अिो. प्र. म. स ां।७।)

ऐसा िो स्वस्वरूप आत्मा है वह िििोयोग्य है। ि में भीतर को ििाता हूं ि म ैंबाहर को ििाता हूं और ि भीतर बाहर को ििाता हूं िरि यह है कक बाहर-भीतर हो तब तो में ििू । ि में भीतर को ििाता हूं ि म ैंबाहर को ििाता हूं। देखो आत्मा का वशेषण प्रज्ञिाम् ्ब्रम्ह हदया है- प्रज्ञिाम् ्का अथ िहोता है तत्काल ही िो ििो। िरि यह है कक जिसको िििो के मलए काल की सीमा ि हो। जिसको िििोके मलए समय की पाबदंी ि हो कक 'में' आत्मा ककतिी िल्दी ििाता हूं । (फूल की माला हदखा- कर) ककतिी िल्दी ििाता हूं। एक सेकेंड या पाव सेकेंड । ककसी भी दिो को िििो के मलए मुझ आत्मा को काल की सीमा िहींहै। यह प्रज्ञिाम् ्का अथ िहै। तत्काल ही ििोऔर दूसूरी चिी यह है कक िििोके मलए काल की सीमा िहींहै और ककसी चिी को िििोके मलए कोई िररया िहीं, यिाि कोई उपकरण िहीं। ककसी के िररये 'म'ैं आत्मा िहींििताि। हांाि म ैंििाता हूँ उसे ेप्रकट करिे के मलए भले ही उपकरण की िरूरत पडती है। मिर िििोके मलए ककसी उपकरण की मुझ आत्मा को िरूरत िहींहोती । तो िरि यह है कक मुझ आत्मा को ककसी चिी को िििो के मलए ि कोई काल की सीमा है ि उपकरण की िरूरत है कोई चिी हो तब में ििू । िैसे ेसो िोपर सुषुजप्त–ाढ़ी निरा में म ैंआिन्द का अिुभव करता हूं। तो आिन्द का अिुभव तो में करता हूं परन्तु बडा आिन्द आ रहा है इसे िहहर करिे के मलए मुझ आत्मा के पास कोई िररया िहींहोता। िािृत अवस्था में मि िब आता है, तब इजन्रयांभी आ िाती हैं तब में बताता हू कक बडा आिन्द आया । मिर जिस वक्त में आिन्द का अिुभव करता हूं उस वक्त ककसी उपकरण की िरूरत िहींपडती । में ककसी भी वषय का अिुभव ककतिी िल्दी करता हूं। ककसी उप- करण की िरूरत िहींहै काल की सीमा िहीं।

ि में भीतर को ििाता हूं ि बाहर को ििाता हूं । बाहर- भीतर का वकल्प तब हो, िब मुझ आत्मा के सामिेकोई और हो कोई घेरा हो, कोई कम्पाउन्ड हो या चारों तरफ दीवाल खीची हुई हो तब तो कही ंम ैंबाहर भीतर को ििाता । मुझ आत्मा के मसवाय कुछ है ही िहीं तो म ैंबाहर को ििाता हूं ि भीतर को ििाता हूं । ि भीतर बाहर दिोंों को ििाता हूं । उस वक्त देह का अभाव हो चुका है। यिाि देह का िब वकल्प करिे ेकक देह है तब बाहर भीतर का वकल्प हिो । िब देह का वकल्पाभाव हो िया तो बाहर भीतर का तो सवाल ही पैदैा िहीं होता और ि में प्रज्ञि घि है क्योंकक िब िििोकी कोई चिी हो मुझ आत्मा के मसवाय तब ि में ििू ? इसमलए म ैंप्रज्ञिघि भी िहीं। िब ज्ञेये िहींतो ज्ञाता कैिौ हिो ।

"िान्तः प्रज्ञां।

'म'ैं आत्मा अदृठट हूं । अदृठट कहते ेहैं िो देखा ि िाय और जिसको कोई ि देख सके । ि में ककसी करके रठटा हूं ि स्वय ंकरके दृठट हूं । ि तो 'म'ैं इजन्रयों करके दृठट हूं और ि स्वय ंकरके देखा िाता हूं । इतिी बात तो समझ में आ िई हिी ।

'न चक्षुषा रृह्यते ेनार्प राचा नान्यैदेंरैस्त्तपसा कमणिा रा ।

ज्ञान प्रसादेन र्ंशुद्‌ सित्र् स्ततस्त्तुतं ंपश्यतेतनष्कलं ंध्यायमानः ।८।'

(मुण्डक उप. म.ां (८))

इजन्रयों के द्वारा में ग्रहण िहीं ककया िा सकता क्योंकक म ैंअदृठट हूां । यह भाव तो िीक समझ में आ िाता है कक 'मुझ' आत्मा को कोई इजन्रय स्पश ि िहीं कर सकती, परन्तु क्या म ैंभी अपिे आपको िहीं देखता । और कोई बतादे कक अपिे आपको क्या देखता है कक में क्या देखता हूां और िो देखते हो वह में हूां िही।ां यह िो देखते हो क्योंकक ऐसा 'देखा िाता है' िैसा िहीं देखा िाता अिर में ऐसा हूां तो अदृठट िहीं। 'म'ैं ऐसा हूां तो दृठट हू और 'म'ैं िैसा हू तो दृठट िही।ां म ैंऐसा हूां तो मुझ आत्मा का वर्शषण अदृठट ि हिो। अिर म ैंकहूां कक 'िैसा' हूां तो दृठट ि हिो। क्योंकक 'िैसा' दृठट िहीं होता दृठट तो 'ऐसा' ही होता है। इसमलए भय्या! 'में' ि ककसों और करके दृठट हूां और ि स्वय ांकरके दृठट हूां इसमलए कक में 'अदृठट' हूां। िी हााँ- जिस वक्त में अपिे आप को देखिे ेचलता हूाँ तो में खुदु ही खो िाता हूाँ। जिस वक्त में अपिेआपको देखिे चलता हूां तो देखिे ेका वर्कल्प ही शान्त हो िाता है तो देखे ककसको और कौि देखे े। कहते ेहैं भाई, आत्म दशि करो । अपिेआपको देखो, अपिे आपको पहहचािो तो कफर ऐसा क्यों कहा िाता है िब में अपिेदेखिे ेकी चीि ही िहीं हूां ि ककसी और के द्वारा देखा िाता हूां तो सन्त महात्मा िि क्यों ऐसा कहतेहैं कक अपिेआपको देखो, अपिे आपको पहहचािो। तो कफर आत्म दशि का क्या मतलब तो आत्म दशि का यही मतलब है कक कुछ भी ि देखिा यही आत्मदशि है, कुछ भी ि िाििा यही आत्म ज्ञाि है। ककसी ककस्म का अिुभव ि हिो यही आत्मािुभूनत है। क्योकक में अदृठट हूाँ। यिी कुछ भी ि देखिा, तो कुछ के ि देखिे पर रहता कौि है ? कुछ भी ि देखिा । देखो देखिे–हदखिो का िािोिाि–ो का ससुि-सुसिो का िो वर्कल्प है। यह कल्पिा स्वदेश की है कक परदेश की ? 'स्व' मिोस्वरूप आत्मा में ि िाििा है, ि देखिा है ि हदखिा है, ि ससुिा है ि सुसिा है क्योंकक में अदृठट हूाँ । अिुभव करो - यह तो िकद धम िहै ररव िबकैं आफ इजण्डया का चैक है। में हूाँ यह 'भाव' 'वाचक' शब्द है कक 'सज्ञां' वाचक शब्द है ? "में हूाँ" अब 'मे' को देखिे ेचलो। ककसी के हदखिे पर 'म'ैं हदखता हूाँ कक ककसी के ि हदखिे ेपर 'में' हदखता हूाँ। कोई चीज़ हदखती है उसकी अपेक्षा सेहदखता हूाँ या िहीं हदखती उसकी अपेक्षा से हदखता हैं? भाई देखो ि- 'में' आत्मा से मभन्ि को हदखिा कहते ेहो तो, ऐसा कहिा तो इजन्रयों का वर्षय है। इजन्रयााँिजि-िजि वर्षयों को ग्रहण करती हैं उि-उि वर्षयों के मलए तो हदखिा आता है तो ककसी के हदखिे से में हदखता हूां कक ककसी के ि हदखिे ेसे 'म'ैं हदखता हूां । ककसी चोज़ को 'म'ैं देखता हूां तो 'म'ैं िहीं हदखता और 'में' को देखता हूां तो हदखिे ेवाला िहीं हदखता । 'देह' को देखता हूां तो 'म'ैं िहीं हदखता, और 'म'ैं को देखता हूां तो देह िहीं हदखता । अिुभव करिे चलो। देह को देखता हूां तो 'म'ैं िही ांहदखता 'म'ैं को देखता हूां तो देह िहीं हदखता। जिस वक्त अपिेदेह को देखते हो तो क्या यह भाि होता है कक यह देह है और यह 'म'ैं हूां। 'िहीं' में को देखता हूां तो देह िहीं हदखता । इससे मसद्ध होता है कक 'म'ैं और 'देह' दो चीि िही ांहै। अिुभव करो । मेरा मि िया, मेरा मि आया, मेरा मि जस्थर है, मेरा मि चचल है। तो 'मि' को िब देखता हूां तो यह भाि होता हैकक यह मि है और यह म ैंहूां। तो कफर ककस करके में दृठट हूां ? िब मुझ आत्मा से कोई मभन्ि हो तब तो वह मुझ आत्मा को देखे तो जिस चीि को में देखता हूां, उस चीि के दशिकाल में मुझ आत्मा अपिेआप को यह अिुभव िहीं होता कक यह अमुक हैं और 'म'ैं उसका रठटा हूाँ । तो देह को देखता हूां तो म ैंिही ां हदखता । क्योकक हदखें कैसे, िबकक में देह में देह रूप से हूां, सव िमें सवं ारूप से हूां तो सवं ाका अिुभव काल में सव िका मुझ से मभन्ि अिुभव िहीं हो सकता इसमलए में आत्मा अदृठट हूां। अपिे आपको देखिे ेचलो, पता लिाओ तो

ककसी प्राच को अिुभूनत िहीं होती । अपिेआप ही रह िाता हूां और प्रपचां का अिुभव करिेचलो, देखिे ेचलो तो कफर 'म' ैं आत्मा का अिुभव िहींहोता क्योंकक एक ही रहिेा। चाहे अपिेआपको देह कहा ाँपाहे अपिेआप को प्रपचां कहो । सीधी बात है मेला को देखते दो तो में िही ांहदखला 'म' ैं को देखता हूां तो मेला िहींहदखता । िित प्रपचां की सृजृठट होती है यह तो अभाव में अमभनिवेश है यिाी है िहींबाहमख्वाह उसे ेमिा लेता है कक यह चिी है क्योंकक में आत्मा अदृठट हूां। अरे ! यही तो आत्मदशि है यार । ि अपिे से मभन् की प्रतीनत हो ि अपिेसे अमभन् की प्रतीनत हो ि अपिे आप सेमभन्िमभन् की प्रतीनत हो ।

"प्रतीतत का अभार् ही आत्म दशनि है।"

यिाी देह की प्रतीनत का अभाव हो िया ि । ऐसो बात त िहींहै कक वतमिा हाथ पैर वाला आत्मा आ करके खडा हो िाब और मै देखू ांतब समझू ूकक मुझे ेआत्म दशि हुआ है। फि िकर कोई आ भी िाय सामिेतो उसको देखता हूां तो में िहीं हदखता 'में' को देखता हूां तो वह िहींहदखता और अिर हदखता तो कफर बतावें हम । अपिेमें की यादिारी रख कर-डण्डा देखो 'म' ैं हूां इसकी यादिारी में यिाी इसके स्मरण में डण्डा देव हदखता है ? और 'डण्डे' की यादिारी में अपिे आपको देखो । वह र्वकट मामला है। हाां, ये बात । अध्यात्म तत्व है यह। मेंहू इसक यादिारी में डण्डा िहीं हदखता । 'म' ैं हू इस िुजक्त से अिर ह देखते ेहो तो डण्डा िही ांहदखता तो यह प्रतीनत क्या है? म ैंहू इसक यादिारी में डण्डेकी प्रतीनत िहींहोती । अब िो प्रतीनत होतो वह तो 'मे' हूां। यिाी 'देह' को देखता हूां तो 'में' िहींहदखत और 'म' ैं को देखता हूां तो देह िही हदखता । अरे हो तब तो हद अरे ! देह तो र्वकल्प है।

अभूतामभतनर्ेशोऽन्द्स्त द्र्यं तर न र्द्यते।
द्र्याभार्ं स बुद्ध्रै्र् तननातिनममत्तो न जायते े। ७५।

(िौ. पा. कारर. अलात शा. प्र. मत्रां स.ां ।।७५।।)

अभाव में िो हिो का अमभनिवेश है तो ििो पर द्वैत का अभाव है इसमलए कोई चीज़ पैदा होती ही

हिींक्योंकक में अदृठट हूां हाां िी ।

नान्द्तः प्रज्ञं ां.........................स र्ज्ेञेय:

अब यहाांरि हिक िाओ और में हूां इसका पता लिाओ । में क्या हूां ? इसका पता िहींलिता में कहा ांहूां इसका पता िही ांलिता । यहाां पर केवल सत्ा मात्र है, मसफि सत्ा की ही अिुभूनत होती है। इस पद में, अजस्तत्व पद में देखो - िो अपिेआपको साढ़े तिी हाथ का मिाता है यही म ैंहूां, तब उसको साढ़े तिी हाथ के देह से उसको अपिे'म' ैं का भिा िहींहोता और कहते ेहैं- कक 'में' आत्मा नित्य हूां या अनित्य हूां, सत् ्हूां या असत् ्हूां। िड हूां या चेति हूां, व्यापक हूां या सीममत हूां ।

"नाजेषु सर्िमेषु ुशाश्र्ताशाश्र्तामभिा ।

यर र्णा िन र्तन्द्ति ऱ्ैकस्त्तत्र नोच्यते ॥६०॥

(िौ. पा. काररर. अला. शा. प्र. म ांस.ां । ६०।)

हिा ाँवाणी िाही िहीांसकती तो सत्य और असत्य का र्वकल्प कहा ाँकक में ऐसा हूां और ऐसा िहीांहूां। िो वाणी का र्वषय है िहीां, उस ब्रम्ह सिाति तत्व के मलए ककसी ककस्म का र्वकल्प है ही िहीांकक वह ऐसा है और ऐसा िही ांहै। इसीमलए कक म ैंआत्मा अदृठट हूां। म ैंशाश्वत हूां कक अशाश्वत हूां कोई र्वकल्प िहीांहै। तब कफर क्या कहा िा सकता है कक म ैंआत्मा इस प्रकार का हूां। तो कफर बया का र्वकल्प ही िहीांहै। मि को देखता हूँ तो में िही ां हदखता और 'म'ैं को देखता हूां तो मि िही ांहदखता । जिस वक्त तुम अपिे मि का अिुभव करते ेहो, मि के अिौ का ििोका मि की जस्थरता का मि की चचांलता का, तो क्या अपिेम ैंका अिुभव करते ेहो। मि के दशि काल में? िही ांहोता। तो कफर इसका हल क्या है अरे ! मि िहीां है भाई, देह िहीांहै, प्रपचां िहीां, ििित िहीां, माया िहीां। अरे ! 'म'ैं आत्मा ही तो हूां। पहले ेतो मुझ आत्मा के मसवाय कुछ है ही िहीांऔर यहद कुछ है भी तो कफर म ैंही हूां िो िािािाम रूपों में अमभव्यक्त हो रहा हूां । परन्तु ििाा िाम रूपों में अमभव्यक्त होिे के बाविूद भी में अदृठट हूां। अब इसे ेसमझिा है?

'म'ैं आत्मा ििाा िाम रूपों में हदखिे ेके बाविूद तब भी अदृठट हूां । कैसे े? िब ििाा िाम रूपों को देखता हूां तो म ैंिहीांहदखता । क्योंकक ििाा िाम रूपों से में अलि िैसा होऊां तब ि हदखू ां। ििाा िाम रूपों को देखू ांतो 'मै' िहीांहदखता और म ैंको देखूँ तो ििाा िाम रूप िहीांहदखते । इसीमलए तो म ैंअदृठट हूँ तो मेरे ख्याल से अब तो मि से ककसी ककस्म का डर िहीां रहा । िहीांरहा तो अपिे घर में बैिो । हो िाओ स्वरूपस्थ लेलो इिका आिदां कफर अिौ ेकी बात बतावें । अभ्यास में बैि िाओ अभी जिस अिुभूनत पद में बैिाए िए हो वह स्वस्थ पद है। क्योंकक प्रपचां का तो सवथिा अभाव है । अब यहाांएक प्रश्ि होता है कक िब म ैंप्रपांच को देखता हूां तो म ैंिहीांहदखता और म ैं को देखता हू तो प्रपचां िही ांहदखता । तो प्रपचां ककसको कहते ेहैं? यह प्रश्ि है जिसका पता ििलो पर पता ि लिे। जिसका अिुभव करिे पर अिुभव ि होय उसका िाम प्रपचां है। अरे ! भाई डण्डा उसको कहते ेहैं कक पता ििलो पर डण्डा ि ममले ेससाांर इसी को कहते ेहैं ।

"म ैंतोहह अब जान्द्यों संसार ......।"

इसका मतलब यह है कक अरे यह 'में' हूँ यह 'तू' है। ज्यों कदली तरु मध्य निहारत, कछु ि निकसत सार। कदली कहते ेहैं केलेको। केलेका िो खभांा होता है उसेदेखो- तो बडा सुन्दर मालूम पडता हैं। मिर एक-एक नछलका निकालते िाओ। िो असार है, उसका िाम ससाांर है ।

"ज्यों कदली तरु मध्य तनहारत, कछु न तनकसत सार "

"म ैंतोहह अब जान्द्यों संसार ...."

अब प्रश्ि होता है कक प्रपचां को देखता हूाँ तो म ैंिहीांहदखता। म ैंको देखता हूाँ तो प्रपचां िहीांहदखता । तो प्रपचां का क्या स्वरूप है? देखिे चलो तो िो िहीांममलता उसका िाम प्रपचां है। तो कफर बाद में िो प्रतीनत होती है यह क्या है ? यह दूसरा प्रश्ि है। बाद में प्रतीनत होती है वह क्या है ? तो प्रतीनत प्रपचां की िहीांहोती । ससांार तो र्वकल्प था वह देखिे ेपर िहीांममला तो बाद में िो रह िया वह क्या है ? तो वही तो सर्त्ा है, वही तो अजस्तत्व है। िी हाां, ससांार तो वाणी से कहा िाता है कक ऐसा िाम है, ऐसा रूप है। मिर िब देखिे ेचलतेहो तो ि िाम का पता चलिे रूप का पता चले। प्रतीय मिा रह िाता है, भास ही भास रह िाता है, दूसूरे शब्दों में ऐसा कहो- जिसको इजन्रयााँर्वषय करें उसका िाम ससार है और जिसका र्वषय में करता हूाँ, जिसका अिुभव में करता हैं तो वह तो में ही हूाँ। परन्तु हाांयह बात िरूर है कक िो 'म'ैं आत्मा हूाँ तो ि में ककसी और करके देखा िाता हूाँ ि में अपिेआप बारके देखा िाता हूाँ क्योंकक म ैंअदृठट हूाँ। लकडी है यह ओस्तत्व । छकडी', डण्डा िहीांहै, इसी प्रकार देह 'है' यह िो "है" अजस्तत्व, हस्ती वृिद तो यह अजस्तत्व है भास रहा है। यह 'है' है िो भास रहा है। अब इस भास का ही िाम रख हदया िया ससांार। अजस्तत्व पर ही ससांार की कल्पिा की िई ? फिी ! क्योंकक म ैंआत्मा अदृठट हूाँ। अब मेरी समझ में अिभ्यास के अभ्यास में र्बिसे आविा आती है उस आविा से हृदय को ग्लानि होती थी। िही ां हिी चाहहए । अिर यह िम िया, इसकी अिुभूनत हो चुकी है तो िहीांहिी। जिसकी अिुभूनत कच्ची हिी तो हीांहिी चाहहए आिकल, रेडडयो में चाहहए का भरमार है। ससांद में चारों तरफ चाहहए-चाहहए । ऐसा हिा कहिे की हहम्मत िहीांहोती । ऐसा हिा चाहहए । तो ििरि यह है कक अिभ्यास के अभ्यास में र्बि पर िो शब्दाहदक र्वषयों से िो भय लिता था अब िहीांहिा चाहहए । िब कल दस बिे ेसे सूपा पीटा िा रहा है। यह है आत्म गचनत है यही ब्रह्म गचनत है और यही भिवाि ध्याि है। बस ! क्योंकक- अदृठटम् ्। तो

नान्द्तःप्रज्ंञं स्:........................... र्ज्ञेय।

दूसूरा र्वशेषण आता है, भिवाि आत्मा का अग्राह्यम यािी जिसका ग्रहण ि होय । यह सब भिवाि आत्मा का र्वशेषण हदय िया है ि तो इजन्रयों करके िो ग्राह्य ि हो और स्वय ांअपिेआप करके भी िो ग्राह्य ि हो। यह भी बात है। इजन्रयों करके ि ग्रहण ि ककया िाय । वाणी िहा ाँसे वापस आ िाती है। वाप अमभव्यक्त हीांकर सकती कक 'म'ैं ऐसा हूाँ । िो वाणी द्वारा ग्रह ि ककया िा सके मि की वहााँपहुाँच ही िही है।

"दृष्टेः रष्टारम् ्न पश्येत् ्।"

('वृहदारण्यश्रुनत')

दृजठट के रठटा को दृजठट क्या देख सकती है। बयाि िह ककया िा सकता जिसका लॉ बया ाँ। मिर क्यों लॉ बया ाँ? लॉ बया–ाँ देखो कहतेतो सभी हैं, भिवाि आत्मा मि वाणी का र्वषय िही ां* मिर इसका प्रत्यक्षीकरण (स्पठटी करण) कोई िहीांकरता। दृद्बध क्यों निश्चय िहीां कर सकती, गचर्त् क्यों गचनत िहीांकर सकता, इसका स्पठटीकरण िहीांहै।

दृजठट उसको देखती है ि◌ो दृजठट से दूरू होता है। बडे-बडे"आईस्पेशमलस्ट" हैंआखां के डाक्टर। उसकी आखों ि◌ीक है और बाकी में दोष है। मिर यहााँतक (स्वामी ि◌ी हाथ क्रमशः आखां के ि◌ि◌दीक ले ि◌ा रहे है) आखााँ ककताब देख सकती है, मिर अब आखां क्या देर्खेी ? म ◌ैंआत्मा आखााँ से इतिा ि◌ि◌दीक हूाँ कक में आखााँ की आखााँ हूाँ। बि में आखााँ की आखााँ हूाँ तो मुझको अिा क्या देख सकती है यह स्पठटीकरण है। ि◌ब म ◌ैंवाणी की वाणी हूाँ, घ्राण का घ्राण हूाँ ।

श्रोरस्त्य श्रोरं मनसो मनो यद्वाचो ह र्वाचं स उ प्राणस्त्य ।

याण. चक्षुषश्चक्षुरतत मुच्य ि◌ोराः प्रत्यास्त्मा ल्लोकादमृताभर्न्द्न्द्त ।

(किोपनिषद् खडां १ मoां सoां ॥२॥)

िि दृजठट की दृजठट है ि◌ो मि का मि है, ि◌ो वाणी की वाणी है ि◌ो आखााँ की आखााँ है, ि◌ो प्राणों के प्राण हैं।

"प्राण, प्राण के जीर् के न्द्जय सुख के मुखराम" सव ि◌में सव ि◌हिोके कारण, सव ि◌करके म ◌ैंआत्मा 'अग्राह्य' हूाँ । कोई ग्रहण ि◌ही ◌ांकर सकता मुझ भिविा आत्मा को । यहद सव ि◌से म ◌ैंआत्मा दूरू होऊाँ और सव ि◌से म ◌ैंआत्मा र्वलक्षण होऊाँ अरे ! में इतिा घुला-ममला हे सव ि◌से कक मुझ आत्मा में कोई र्वशेषता ि◌हीांयही मुझ आत्मा को र्वशेषता हैं कक में ककसी से र्वशेष ि◌हीांहूाँ इसमलए म ◌ैं'आत्मा' अग्राह्य हूाँ। ि◌ी हााँ! कोई भी ग्रहण करिे में समथ ि◌ हिीां। यही मुझ भिविा आत्मा की र्वशेषता है। तो कफर यह करके सव ि◌का सव ि◌ही हूाँ। सव ि◌में सव ि◌हूाँ और सव ि◌ करके सव ि◌है इसमलए में अग्राह्य हूां। तो ग्राह्य और अग्राह्य दिोिों ही र्वकल्प और मुझ आत्म देश में ि◌ ग्राह्य है और ि◌ अग्राह्य है। ि◌ ग्राह करके ग्राह्य हूाँ ि◌ अग्राह्य करके ग्राह्य हूाँ। ग्राह्य और अग्रा करके ग्राह्य ि◌ हिोके कारण में आत्मा अग्राह्य हूाँ। ि◌ब आत्मा ककसी से र्वलक्षण होऊाँ तब में र्वशेष होऊाँ ि◌ब म ◌ैंर्वशेष होऊाँ तो ककसी का ग्राह्य हौऊाँ । कफर समझो । ि◌ब में आत्म ककसी से र्वलक्षण होऊाँ और ककसी से र्वशेष होऊाँ क्योंकक र्वलक्षण और र्वशेष के ही मलए ग्रहण करिे का र्वकल्प होता है। साधि ककया ि◌ाता है। ि◌ब म ◌ैंककसी से र्वलक्षण ि◌हीांऔर ककसी के र्वशेष ि◌हीां। तो कफर ग्रहण किौ करे मुझको । 'म'◌ैं आत्मा ग्राह ककसका ? और म ◌ैंस्वय ◌ांआत्मा अपिे आप करके अग्राह्य क्यों हूाँ क्योंकक मुझे ि◌रूरत क्या है ? कक म ◌ैंअपिेआपको ग्रहण कर और ग्रहण की अपेक्षा त्यिा होता है। यहद अिा म ◌ैंग्राह्य हो ि◌ाऊाँ तो एक हदि त्याज्य हो ि◌ाऊाँाि इसीमलए अग्राह्य हूाँ। अरे ! जिन्द्दिी कश्ती ये दररया पार हो हरगिि ि◌ हो।" होके बे परवाह कफर परवाह करिा ि◌ुम ि◌है। और र्िलेी ककिारे कभी कभी । मुबारक हो यह मस्ती खुदा जिसको बख्शे ◌े।

और ि◌ो मुझ भिविा आत्मा को ग्रहण करिे चलता है म ◌ैंही हो ि◌ाता हूाँ तो ग्रहण किौ करे । / छुआ-छुई के खेल में बालक चोर बिता है उसको ि◌ो छू लेता है। छूत ही बीमारी तो। छुआ-छुई खेल में ऐसा चासां आता है कक एक लडका चोर बि ि◌ाता है और वह चोर लडका सब लडकों को छूिे के मलए दौडता है और चोर से ि◌ो छुआ ि◌ाता है वह भी ि◌ोर हो ि◌ाता है इसी तरह भिविा को छूिे के मलए ि◌ो चला वह भि- बिा हो ि◌ाता है- "सो ििि◌ोहह देहु तिाई, ि◌ाित तुमहह-तुमहह होइ ि◌ाई। ि◌ो अिा हदि तक पढ़िे ◌ेमें ि◌हीांआया कक ि◌ो छूिे ि◌था और लौट के बतिो

के मलए कोई िहींआया वही हो िया, खतम। वूिद खतम हो िया। िो िदी समुर को छूिेके मलए चली, समुर से ममलिे के मलए चली, वह अिी तक िहींबताई कक मैं समुर को िािा है। इसी ककस्म से जिसिेभिवाि को पाया, जिसिे भिवाि आत्मा का दशि ककया और िो छू मलया वह भिवाि हो िया, वह क्या बता सकता है कक भिवाि ऐसा है और अिर बताता है तो छुआ िहींहै। अफसिाा है। क्योकक अग्राह्यम् ्।

अब चार बि रहे हैं, अिी का प्रवचि यहींसमाप्त होता है।

ॐ पूण िमदः पूण िममदं, पूणात्पूिण िमुदच्यते ।
पूणस्त्यि पूणमािदाय पूण िमेर्ार् मशष्यते े।।

ॐ शान्द्न्द्तः ! शान्द्न्द्तः !! शान्द्न्द्तः !!!

तृतीय हदवस का प्रवचि

(बुिर्ार, हदनांकं१४नर्म्बरसन्१९७३समय१०बजे से १२ बजे ।)

"ओममत्येतदक्षरममदं ....तदप्योंकारएर्"

कल के प्रसिां में स्वस्वरूप भिवाि आत्मा के िो र्वशेषण हदये िये हैं- िान्तः प्रज्ञ...ां...
कल इसका र्ववेचि हुआ था और अिी भी है। ि में आत्मा बाहर को िािता हूं ि में 'आत्मा' भीतर को िािता हूं क्योंकक मुझ आत्मा से मभन्ि कुछ है ही िहींतो बाहर भीतर का प्रश्ि ही िहीं रहता। अदृठटम् ्में अदृठट

हूां । अदृठट का र्ववेचि कल हो चुका है। 'असाह्यम्'् 'में' अग्राह्य हूां। अग्राह्यम् ्का मतलब यह है कक मुझ भिवा आत्मा को कोई ग्रहण िहीीं कर सकता । म ैंअग्राह्य हूां। इजन्रयों करके ग्राह्य तो में हूां िहीींऔर स्वय ांकरके भी अग्राह्य हूां। चिो यह है कक ग्राह्य और अग्राह्य का िो र्वकल्प है। यह र्वकल्प प्रपच देश में ही होता है। क्योंकक स्वरूप देश में तो र्वकल्प है ही िहीीं। ग्रहण करिे में कोई भी समथ िहीींहै ।

'यद्राचानभ्युहदतं येन र्ाभ्युद्यते े।

तदेर् ब्ह्म त्र्ं र्र्द्धि नेदं यहददमुपासते े।'

केनोपतनषद् प्र. खण्ड मंर ।।४।।

'यन्मनसा न मनुते ेयेनाहुमनिोमतम् ्।

तदेर् बम्हं त्र्ंर्र्द्धि नेदं यहददमुपासते'े ।५।

(किोपनिषद प्र. खांमत्रां ।५।)

वाणी जिमको व्यक्त करिे में समथ ििहीींहै और वाणी को िो प्रकट करता है उसको ही तू सिाति ब्रम्ह

िििा इदम रूपा हो। जिसकी उपासिा की िाती है वह ब्रम्ह िहीींहै।

मि जिसको ग्रहण िहीींकर सकता, मि िहा ाँपर िहीींिा सकता और 'मि' जिसको िहीींिाि सकता, मि को िो िािता है मि का िो ज्ञाता है, साक्षी है, उसको ही तू परमात्मा िाि । इदां रूप से जिसकी उपासिा होती है वह आत्मा िहीींहै। इदां कहते ेहैं यह को। जिस पदाथ िको िििोके मलए यह शब्द लिाया िाय उसको इदम् ् कहते ेहैं। वह इदम्म्यि होता है। 'अह' यिो 'म'ैं होता है वह स्वस्वरूप आत्मा है िहा ांपर मि िहीींिा सकता । चक्षु इांहरय जिसको िहीींदेख सकती और चक्षु ुइजन्रय को िो देखता है वही सिाति तत्व है, इदां रूप से जिसकी उपासिा होती है वह सिाति परमात्मा िहीींहै। कण िइजन्रय जिसको िहीींसिु सकती और इसके ििुे ि िुसिे दिोंं को िो सिुता है। वाणी को म ैंव्यक्त करता हूां, वाणी मुझ आत्मा को व्यक्त िहीं कर सकती । मि को म ैं िािता हूां। कोई ऐसा समय िहीींहैकक मि मुझ आत्मा सेचोरी करके चला िाय । मि की चचांलता को िािता हूां, मि की जस्थरता को िािता हूां। उसके र्वक्षेप और लय को भी में आत्मा अिुभव करता हूां पर मि मुझ आत्मा को िाििेमें समथ िहीींहै। प्राण जिसको सचांा- ररत िहीं कर सकता । प्राण को िो सचांाररत करता है। वही स्व-स्वरूप अपिा 'आप' है, इदम् ्रूप से जिसकी उपासिा होती है वह ब्रम्ह िहीींहै, वह परमात्मा िहीींहै। वाणी करके, मि करके, चक्षुकरके, प्राण करके तथा अन्य इजन्रयों करके भी में आत्मा अग्राह्य हूां और मै स्वय ांकरके अग्राह्य हूां।। क्योंकक ग्रहण और त्यिा तो उस बस्तु का ककया िाता है। िो वस्तु अपिेआप से मभक्ष होता है। 'में' िब अपिा आप ही हैं, अपिे आप से ि में दूरू हूां ि अपिेआप से निकट हूां।

दूरू से दूरू हूां म ैंऔर निकट सेनिकट हूां। तो दूरू से दूरू कब हैं? िब में आत्मा अपिेआपको कुछ मिा लेता हूां तो दूरू से दूरू हो िाता हूां और इतिा दूरू हो िाता हू कक जिसकी कोई सीमा िही ांऔर िब मान्यता हट िाती है। अपिे ऊपर िो पदिा है (मान्यता ही पदा िहै) तो इस मान्यता रूपी पदे को हटिो ेमें ब्रम्हाहदक भी समथ िहीींह।ैं

ककसी और ि पदिा डाला हो तो कोई निकाले । कोई और ढाकांा हो तो उस ढक्कि को कोई उिावे े। िब अपिेआप ही ढक्कि लिा मलया है तो किौ हटाए भैय्या ?

'सुखमार्ियतेतनत्यं दु;खंर्र्यितेसदा।

यस्त्य कस्त्य च िमस्त्यि ग्रहेण भर्ानसौ' ।८२।

(िौड पाद. कारर. अलातशा. प्र. म.ां क्र. ।।८२।।)

भिविा आत्मा तो सुख पूवकि ढाकांा िाता है। सुख पूवकि नछपाया िाता है यह। मिर 'दुखु ांर्वव्रीयते ेसदा ।' और िब ढक्कि उघाडिे का कोई समय आता है तो बडी कहििता से वह ढक्कि है िो उघरता है । अपिे आपको कुछ मिा मलया ढक्कि बि िया। मििो में क्या देरी लिती है मिर वह मान्यता रूपी पदिा िो पह िया उस पदे का उघड िििा सरल िहींहै यह ।

सुखमा त्रर्व्यते ... . भर्ानसौ ।

स्व-स्वरूप भिविा आत्मा पर सबसे पहला ढक्कि है- ' िबि भाव' बस ! यह पहला परदा है, और मान्यताए ांतो बाद में आई

'जीरं् कल्पयतेपूर् िततोभार्ान्द्पृथृन्द्ग्र्नि ।

बाह्यानाध्यान्द्त्मकांश्चैर् यथार्द्यस्त्तथास्त्मृतृतः ।

(िौड पा. कारर. वैतथ्य प्रकरण मत्रां क्रमाकां ।१६।)

प्रश्ि होता है- यह िीव आया कहा ाँसे ? इस िीव को पैदा ककसिेककया ? यह िीव भाव कब से आया ? यहद कहो कक-- में िब हूाँ क्यों कक में ि कहो, खाली िीव कहो, में ि कहकर खालो िीव कहो तो िीव के आिे ेहै आएिा। "िीव है"। हूाँ िहीं आएिा । और हूां िो कक्रया है 'मै" की है ि कक िीव की है। िीव हूां कहो या म ैंिीव हूां कहो । एक ही बात है। मिर कक्रया से कता िका पता लिता है। व्यावहाररक िित में देखो ककसी व्यजक्त की कक्रया से ही उसके व्यजक्तत्व का पता लिता है। ककसी व्यजक्त की कक्रया से ही उसकी खामसयत का पता लिता है कक कैसा है यह। िो 'हूाँ' है, वह 'म' ैं की कक्रया है। क्योंकक हूाँ कक्रया िीव की िहींहै। कफर में करके िीव की मसद्िध है कक िीव करके, िीव की मसद्िध है ? तो कफर किौ कहता है ? कक में िीव हूाँ। ससांार में लिो कहतेहैं कक म ैंतो अपिे आपको िवि मािता हूाँ । तो भैय्या ! तुम अपिेआपको िीव माितेहो तो तुम किौ हो? मििो वाले । 'म' ैं अपिे आपको िवि मािता हूाँ िो ऐसा कहता है तो क्या वाकई दर असल; में िीव हूाँ ? क्या सचमुच में िीव हूाँ ? उससे पूछो तो वह कहिा हााँसाहब में तो िीव मािता हूाँ। तो अब उसका िाम मत लो, िांाधर, रामप्रसाद । ओ िीव । कह कर पुकारो। उसका िाम मत लो और िीव िाम पुकारते से उसको िुस्सा ि आवे,े उसी मूड में रहे तत्र समझो कक

हकीकत में यह िोव है और मत्थे पर मसकुडि आ िाय तो समझो िीव िही ां है, भिवाि है। कहा ाँसे प्रकक्रया मसद्धातां लािऔ ेभला! यह भिवाि की खिो है यह उसका पाखडां है कक िीव हूाँ कहता है। महहला समाि अपिे आपको स्त्री मािता है। अपिे को डौका (पुरुष) कभी ि कहिे । तो ककसी को कहो - ऐ डौंकी ? पचास िाली ि सुिावें तो हमारा िुस्खा िलत। डौकी कहिे में ि गचढ़ें तब तौ डौकी हैं और गचढ़ िाए ाँतो भिवाि हैं। यही सुखमा ब्रीयते ेनित्य।ां" यह तुमको समझािेकी िरूरत िहीांकक तुम भिवाि आत्मा हौं । यह सीिी हमारी प्रकक्रया। ये स्त्री कहके पुकारो ? अिर गचढ़ती है तो भिवाि ांहैं।

जीरं ं कल्पयते पूर् ि.................।

साक्षात् ्परमात्मा सबसे पहले ेअपिेको िीव मािा और किौ करिा कल्पिा । अरे भाई ! र्वकल्प का कोई ि कोई आधार तो हािा चाहहए । सोिा ि हािा तो आभूषण ककसको मािो े? तो कोई ि कोई चीि है। िीव ां कल्पयते ेपूवं ं!

सबसे पहले िीव भाव की कल्पिा होती है भिवाि को कफर अलि-अलि जितिे भाव हैं, पृथ्वी, िल, वायु अजग्ि, आकाश, शब्द रूप, रस, स्पश,ि िधां, िािृत, स्वप्ि, सूषुजप्त तीिों अवस्था में पचां कोष, तीि िुण ये बाद में होते ेहैं। " ततो भावाि् ्पृथृजग्वधाि् ्। " ये सव िभाव पैदा हुए । लेककि सबसे पहलेइि र्वकल्पों का सबसे बडा भाई िीव । परमात्मा ही अपिेआपको मािता है कक म ैंससांारी िींव हूाँ। अिर इस कथि पर ककसी को एतराि है तो शास्त्र प्रमाण तो है ही। यह कहता किौ है कक में िीव हूाँ। यह कहिेवाला किौ है ? अच्छा ! िीव का लक्षण पूछो कफर । तो िीव का क्या लक्षण है ? छोटा । छोटे से छोटा हो िीव (तुमिे देखा है कभी कक सुि के कहते े हो ककसी से ?

जीर् कल्पयतेपूर् ि.............................. स्त्मृत ।

अपिी माया करके अपिेआप ही मोहहत हो रहा है।

स्त्यमेर् र्मोहहत :-

कल्पयत्यात्मनात्मानमात्मा देर्: स्त्रभायया ।

स एर् बुध्यते भेदातनतत नेर्ाांस्त्ततनश्चयः ।"

(िौड पाद० काररं० वैतथ्य प्रकरण मत्रां क्रम ।।१२।।)

अपिेआप करके अपिेमें अपिे 'में' की ही कल्पिा करता है। दूसूरा कहा ाँसे आ िाया। और कफर इि भेदों को िािता भी है। में ईश्वर िहीांहूाँ, में तो िीव हूाँ यह िो िीव भिवाि का भेद है इसको िािता भी है। और, दूसूरा किौ िािेा । स एव बुद्धयते भेदाि् ्। इि भेदों को स्वय ांही िािता भी है। इनत वेद्वान्त निश्चयः। "और यह निश्चय सावभौम है। सुखमाां कक्रयते नित्य।"

"यस्त्य कस्त्य च ि मस्त्यि"

भिविा आत्मा को िििा प्रकार के धमों से लिो ढ़ाकाँतेहै। • कोई कुछ मिाता है कोई कुछ मिाता है।

ढक्कि लि िया । ढाकां तो सुखपूवकि िाता है, मिा मलया बकाँ िया । ककतिा सरल ढक्कि है। 'म ' ै िीव हूाँ। बकाँ तो सुखपूवकि मिर िीव श्वाव का अभाव करिे के मलए स्वय ंाही िब चाहै, यह बात दूसूरी है कक सन्त, महात्मा, ुिरुि उपदेश करते ेहैं, समझातेहैं। मिर स्वय ंाकी इच्छा हो तब ि, स्वय ंाकी इच्छा, अपिे को ििोकी क़्यों हिींहोती ? इसमलए कक िब ि िाता हो तब ि, यह सहिान्स्थिा का सत्सिां है। सहिपद का र्ववेचिे है यह। अपिेआपको ििोकी इच्छा क्यों िहींहोती, क्योंकक ििाता है। इच्छा क्यों हो ? अब यहााँमसद्धान्त, प्रकक्रया कुछ िही ंाहै भला ! अरे ििाता है। क्या ििाता है ? कुछ िहीांििता। कुछ िहीांििता । अरे यार ! ििा ि ििाा तो िीव का धम िहै ।

"हष,ि र्वषाद, ज्ञिा अज्ञिाा, िीव धम िअहममनत अमभमिाा।" इसमलए कुछ िहीं ििाता । यही ििाता है कक, अपिे आपको कुछ िही ंािाता । इसमलए कक भिविा है। अरे यार ! िीव को ििो ि ििो का र्वकल्य होता है कक भिविा को । िीव को ि कक भिविा को । मस्त है कफर ! वाह ! और कैसा घुला-ममला है कक ककसी को हदखता िही ंाहै कक देख सके ! क्योंकक अग्राह्य है वह । देख सके, ििा सके । वाह । और ऐसा भी तो िहींघुला-ममला है िैसे ेदूधू और पािी । दूधू और पािी का पता चल िाता है मिर दूधू में दूधू ममला है तो उसका क्या पता लिैा भैय्या ! िो पदाथ िैसा है उसमें उसो रूप से हूाँ। ककसकी ताकत है कक मुझ आत्मा का उसमें से पृथक्करण कर सके । ििा सके । इसमलए में अग्रह्य हूाँ। िी हा।ाँ वाह । हा।ाँ तो अपिेआपको ििो की इच्छा क्यों िहींहोती क्योंकक में अपिेआप से अज्ञात कब हूाँ कक मुझ आत्मा को ििोकी इच्छा हो । बधांिसे छुटकारा पािे के मलए अपिेआपको छुटकारा क्यों िहींहोती ? क्योंकक में बधांा होऊाँ तब तो ि । देखो, कमरे के अदांर पडेहो और दरविाा लिा हुआ है। साकांल लिा मलया है अदांर से लॉक कर मलया है और खरािटे की िीदां ले रहे हो क्योंकक उस तालेकी चाबी मेरे पास है। घबराहट िहींपैदा होती क्योंकक वह अपिा बधांिलिाया हुआ है। अिर तुमको पता लि िाय कक ककसी ि बाहर से साकां ल लिा हदया है तो कहिो े- कफर टट्टी-पेशाच लिही तब फेर कैसे ेनिकल बो दूसूरे के बधांिलिो में तो घबराहट होती है। पर जिस की कुांिी अपिे पास है तो उसमें घबराहट को क्या बात । इसमलए भिविा को घबराहट िही ंाहोती खोल लेंिेऔर खोलता ही है ।

मृतूयु सेक्यों भय लिता है? इसमलए कक कभी मरा िही ंा। िो एक फलांिभी िहींचलते और अिा दस मील चलिे का मौका लि िाय तो हदल में धडकि पैदैा हो िायिी क्योंकक आदत िहीं है। तो मरा तो कभी है ही हिी।ां तो मरा कभी िहींहै। इसमलए कोई मरिे का िाम लेतो है तो घबराहट पैदा होती है। इसको सहिावस्था का सत्सिां कहते ेहैं। िो चिी िैसी है उसको वैसी ही ििा लिैा इसका ही िाम बोध है। िो िैसा है उसको उसी प्रकार से ििा लिैा चाहहए । उस पर कलई करिे की िरूरत ि पडे। ये बात ! क्यों ? िो िैसा है उसको वैसेही ििाा। इसका ही िाम बोध है तो म ैंआत्मा िैसा हूाँ उसको उसी प्रकार से ििा लिैा इसका ही िाम ज्ञिा है। म ैंआत्मा सत् ् हूाँ, गचत हूाँ, आिन्द हूाँ, कूटस्थ हूाँ, अखडां हूाँ, व्यापक हूाँ, वैरह-वैरह ये तो सब ऊपर से चाल-चलि ििाा है। िो

'म'ै हूँ वह तो तुम िाते ेही हो । एक दृठटातं सुिा है कभी । उत्र प्रदेश में उन्िाव जिला है। उन्िाव जिलेमें एक मिौा है। ककसी िमिो में वहााँहम एक-एक महीिे िहर िाते ेथे। वहााँएक मिर साहब थे(अब तो िहीांरहे) उिके यहाांमें िहरा करता था। साथ में चार पाचां साधु ुभी रहे। एक हदि सुवह का वक्त था, मिर साहब फौिी ड्रेस में वही ां हमसे कुछ दूरी पर चहल कदमी कर रहे थे, कक वे हमको अकेले ेबैिे देख कहिेलगे - स्वामीिी ! हमिेकहा- हा ाँ मिर साहब ! उन्होंिेकहा- आि तुम्हारे चेला वेला कहा ाँिये हैं ? हदख िहीांरहे हैं?

हमिेकहा- मिर साहब ! वे सब भिि में बैिे हैं। तब वे कहिेलगेकक भिि में बैिे हैं कक चाल चलि बिा रहे हैं ?

हमिेपूछा- चाल चलि बया है मिर साहब ?

वेकहिे लगे- हमारी फौि में एक मसपाही था, उसका िाम - था महेश मसिां । वह भी िाकुर था। रोि उसकी मशकायत हमारे पास आया करे । कभी ककसी की बाडी से फल, सब्िी तोडकर ले आवे, े कभी ककसी महहला की कलाई से घडी छीि ले आहद । एक हदि हमिे क्या देखा, सुबह के वक्त में टहल रहा था िण्ड खूब पड रही थी, कडाके की। बरामदे में एक कोिे में कोई रामिामी दुपुट्टा ओढ़े खटर खटर माला फेर रहा है। मैंिेपूछा- कौि आय गया है हमार फौि में ? रोि दो घटां माला फेरत है, तो मसपाहहयों िे कहा- वही महेशवा है सरकार ! जिसकी आपके पास रोि मशकायत आती है। तो हम बूट पहिेथे, पीछे से िाकर उसे ेएक लात मारा उसकी पीि पर और हमिेकहा, हमारे पास रोि तेरी मशकायत आती है और तू यहााँबैिकर पाखण्ड कर रहा है, राम िामी दुपुट्टा ओढ़े माला फेर रहा है। वह भी िाकुर था, और हम भी िाकुर, इसमलये बूट पहिेहुए उसे ेलात से मारा, यहद ब्राह्मण होता तो िहीांमारते े।

लात के लगते ही वह दुपुट्टा फेंककर माला वहीां रख हदया और इधर उधर देखा कक कोई देख तो िहीांरहा है और कफर झट दोिों हाथों से हमारे पैरों को पकड मलया और गिडगिडाकर कहिेलगा कक सरकार ! िो म ैंहूां वह तो तुम िाते ेही हो यह तो ऊपर से दुनिया ाँहदखािे के मलये चाल चलि बिाउथ हैं, ऐसा कह झट वहााँसे वह चुपचाप चला गया ! तो, स्वामी िी ! चेला लोग ऐसेचाल चलि तो िहीांबिा रहे हैं ?

हमिेकहा- िहीांमिर साहब ! वे भिि में बैिे हैं। भैय्या ! उस हदि से हमिेइसको अपिेपरमाथ िमें घटा मलया तो िो में परमात्मा हूँ और िैसा हूँ वह तुम िाते ेही हो और िो बात रह िई सत् ुहूाँ, गचत् ुहूाँ आिदां हूँ यह तो ऊपर से चाल-चलि बिािा है।

"नाजेषु सर्वेषु ुशाश्वता शाश्वतामभिा ।
यत्न वर्णा िन र्तन्द्रिते र्टंकस्त्तर नोच्यते" ॥६०॥

(िौड पा० काररं० अलाल शा० प्रक० मत्रांसं०ं ॥६०॥)

न तद्भासयते ेसूयो न शशांको न पार्कः ।
यग्दत्र्ा न तनर्तन्द्ति तद्ामि परमंमम् ्॥

(ीता - अ० १५ श्लोक ६)

वाणी िहा ाँपहुाँच िहींसकती तो क्या कहा ि सकता है कक में परमात्मा ऐसा हूाँ। तो ि म ैंहूाँ वह तो तुम ीिते ेही हो । ऊपर से ि यह सुि रहे हो वह चाल चलि बिाा है। मिर वस्तुतः िहीं है ज्ञात ककसी को इसमलए श्रुनतया ाँभी िनत–िनत कह- कर भिा िाती हैं क्योंकक िदीक िाय तो छुआ िाय। िहा ाँभिवा को छुआ तो भिवा हो िया। दूरू खडे ेहोकर हकीकत का बयिा ककया िहींा सकता। इसमलए म ैंअग्राह्य हूाँ। यिाी दूरू खडे े होकर म ैंआत्मा की वास्तर्वकता को म ैंआत्मा की सचाई को हैं वह दूरू से िहींािाा िाता ि कुछ कहें चाल चलि बिाा है और िदीक िाते ेहैं तो छुआ िए । भिवा हो िाता है। तो क्या हकीकत है। क्या सचाई है। इसमलए साहब ि में हूाँ। वो तो तुम ीिते ेही हो। इसमलए में अग्राह्य हूाँ और कफर तारीफ यह है कक दूसूरा क्या कहिे। में िब खुद ही अपिे आप से दूरू होकर क्या म ैंअपिे आपका बयिा कर सकता हूाँ। अपिेआप से दूरू हिाे क्या है ? अपिे आप को िीव मिा मलया । ि तो िीव रूप से अपिेआपका कथि कर सकूां और ि आत्मा रूप से अपिेआपका कथि कर सकूां इसमलए कक म ैंअग्राह्य हूाँ ।

"स एष आत्मा स्त्परेत्य बुद्धिमभदिुरव्ययानुक्रमणो तनरूव्यते ।
ह्यन्द्न्द्त यद्र्त्मतिन रे्दर्ाहदनो ब्र्ह्मादयोह्येष ममनर्त्तमेमततम् ्।।१३।।

(श्रीमद्भािवत् ्सप्तम स्कांध अध्या० ५ श्लो १३)

ब्रह्माहदक भी निश्चय करिे में समथ िहींहै कहते ेहैं। बडी अच्छी युजक्त है। अिर दूरू होकर के कहूाँ भिवा से अलि होकर भिवा को बतािा चाहूाँ तो िही ांबता सकता। दूरू होकर कहिे में िहींविता और िदीक िाते ेहो तो छुआ िाते ेहो । हााँ, इतिा ही कहता है- ि कुछ में हूाँ सब तुम ीिातेही हो । क्या ? अिर ि म ैंहूाँ तुम ीिाते ेही हो तो तुम अिर मुझ सेदूरू हो तो तुम ीिाते ेही हो। यह कहते ि बिा। वह 'म'ैं आत्मा के मलए कहा ि रहा है- कक साहब तुम तो ीिाते ेही हो। बाकी ि कुछ भी है कमकाण्ड उपासिा काण्ड ये सब चाल-चलि बिाा है भैय्या । ऊपर से चाल-चलि बिाा है। हकीकत तो ि है वह अग्राह्य है। इसके ग्रहण में कोई अिातक समथ िहुआ ही िहीं इसमलए श्रुनत सच समझकर कहती है "अग्राह्यम्"् में आत्मा अग्राह्य हूाँ क्योंकक श्रुनत बेवकूफ थोडी है वह समझती है। श्रुनत कहती है कक अिर मै दूरू होकर कहूाँ तो अग्राह्य और िदीक होकर कहूाँ तो वही हो िाऊाँा तो अग्राह्य । हााँ, ब्रह्माहदक मुझ आत्मा को िािोमें समथ िहींहै तो यह िीव भला कैसे िा सकता है इसमलए िीव को भिवा के िािोमें कोई अगधकार िही है।

हांअरे ! चौपाई क्या भूल िए हो ?

'जानत तुमहहं ंतुमहहं ं होइ जाई ।'

यह बाल्मीकक िी कहते ेहैं।

तुम्हरी कृपा तुमहहं ंरघुनंदन। जानहहं ंभर्त-भर्त उर चंदंन ।'

तो भैय्या ! अिा तक जिसिे िािा वह यह बतिोको िहीांआया कक भिवाि को मिैंइस प्रकार िािा । वापस आकर ककसी िे कहा हो भिवाि ऐसा है, भिवाि इस प्रकार है। मिैंिािा है अिा हदि तक ककसी िे कहा हिी।ां क्योंकक कहेिा क्या ? भिवाि को िािकर अिर भिवाि से मभन्ि होय तब तो कहे कक भिवाि ऐसा है । बि िाित तुमहह । िब छू लैिपर भिवाि ही हो िया तो ककससे ेकहें । इि सब बातों को मद्दे िज़र रखते ेहुए 'म'ैं आत्मा अग्राह्य हूं । अरे भाई में कुछ कहूांिा तो वाणी द्वारा ही तो कहूांिा। तो अिर में कहूं म ैंऐसा हूं तो 'में' हिींऔर कहो कक िैसा हूं तो 'वाणी' कहा'ां तो है िे मुसीबत साफ तौर से । इसमलए 'में' अग्राह्य हूँ यह अग्राह्य का र्ववेचि है। यहद में कहूं कक ऐसा हूं तो "यतो वाचो निवतन्ते" यह श्रुनत कहा ांिायिी । वाणी िहा ांसे वापस आ िाती है मि िहा ांिा िहीांसकता और यहद में कहूं कक 'म'ैं ऐसा हूं तो वाणी पैदा होती है और िैसा हूं में वाणी 'म'ैंहो िाती है। दृजठट 'में' हो िाती है। कण िइजन्रय में हो िाती है मि-बुद्धध गचर्त्, अहांकार सब 'म'ैं हो िाते ेहैं। सब छुआ िए। ऊां । हाां, िी। क्योंकक 'में' अग्राह्य हूां। म ैंअग्राह्य हूं 'म'ैं अग्राह्य हूं।

अब यहाांएक प्रश्ि होता है-कक भिवाि आत्मा को िाििेके मलए िो कुछ भी ककया िाता है कमकाण्ड है, उपासिा है, भिि, है पूिा है, आरती है, यिि है, ध्याि है, धारणा है, और समाधध है यह भिवाि को िाििेका साधि िहीांहै। 'भिवाि' को िाििेका िो अधधकार है, उसे ेप्राप्त करिे के साधि हैं, ये सब । अधधकार प्राप्त हो िाता है भिवाि प्राप्त करिे के मलए । क्योंकक इिकी भी तो मयादिा रखिी है। इि सत्रों से, पूिा से, िप से, िाम स्मरण से िो कुछ भी ककया िाता है चाहे िािकर करो या िािेिा में करो अधधकार प्राप्त होता है। 'बकैं ग्राउण्ड' बिता है। और िब भिवाि श्रीराम लक्ष्मण से कहते ेहैं-

'आदौ स्त्र्णाश्रिम र्ाणिताः कक्रयाः,

कृत्र्ा समासाहदत शुद्धमानसः ।

समाप्य तत्पूर्मुिपात्त सािनः,

समाश्रयेत्सद्गुरु मात्मलब्धये' ।७।

(अध्या. रामा. उ. काण्ड ५ पचांम सिि श्लोक ।७।)

अपिे-अपिेवणाश्रिम धम िके अिुसार कम िकरके अतांःकरण पर्वत्र करे । इसके बाद क्या करें, इसको छोड दें। भिवाि आल को िाििे के मलए सद्गुरु की शरण में िाय । अध्यात्म रामाय की रामिीता का सातवा ाँ श्लोक है । आत्मा की उपलजब्ध के मल आत्मा को िाििे के मलए िो है. सद्गुरु की शरण में िाय। इसमें अधधकार

प्राप्त का साधि भी हो िया और िब अगधकार प्राप्त हो िाय तो िुरु की शरण में सर्पति हो िाय । अपिा वा ममटा दे तो इसमलए यह िाकर कक भिवा आत्मा अग्राह्य है। ऊपर से िो कुछ करिा है चाल चलि बिाा है। ऐसा िहो इसको सुिकर िलत अथ िलालें अपिेहृदय में तो दोिों ओर िए पाडेँ, हलुवा ममली ि माडें । महारािी प्रकृनत िे 'मुक्त आचाय िके आसि पर बबिाया है तो सबकी मयादिा को लेकर र्ववेचि होता है। ककसी का यहा ां खण्डि िहीांहोता। क्या करिा चाहहए, कब तक करिा चाहहए, इसको करिे का क्या फल है ? यह हम बताते ेहैं। यहाांतो खण्डि का भी खण्डि िहीांहोता ।

'उमा जे राम चरण रत, र्वित काममद क्रोि,
तनज प्रभुमय देहह जर्त केहहसन कराहह र्विोि ।'

तो भैया ! यहाांखण्डि िही ांहोता। अच्छा, सुिो ब्रम्ह की उपासिा कब तक करिी चाहहए यह भी सुिो- भिवाि राम िे रहा है लक्ष्मण से-

'यार्वन्न पश्येदणखलंमदात्मकं, तार्वन्मदारािनतत्परो भर्वेत् ्।'
श्रद्िालुरत्यूजजत भक्त्त लक्षणो, यस्तस्य दृश्योऽहमतनशं हृहद ।५८।'

(अध्या. रामा. उ. काण्ड पचांम सि िश्लोक स.ां ।५८।)

हे भाई लक्ष्मण ! िब तक सारा प्रपचां तृणृ से आहद ब्रम्हा पयंत आप सहहत अपिा स्वरूप ि हदखाई दि लिैतबतक मेरी आरा- बिा करे। सबका कोस िहै। ऐसा थोडे ेही है कक जिदांिी भर िही करता रहे। शास्त्रों का मथांि ककया िाय र्वलोडि ककया िाय, र्वचार ककया िाय तो यह सब बात निकलती है। सिाति-पिां र्ववेि चि होता है इसमलए यहााँसब आते ेहैं। हहन्दू-मुसलमाि, ईसाई, रांि, बौद्ध, आजस्तक और िाजस्तक सब आते ेहैं। सबको सतांोष निहाता है। जिसको अगधकार प्राप्त है वे तो हैं ही, जििको अगधकार राप्त िहीांहै उन्हें भी अगधकार प्राप्त हो िाता है। कफर ऐसा तो भी है यहद सुिो भिवाि की आरािि िहीांककया तो िहा ांपर ब्रह्म र्वद्या का र्ववेचि होता है और पहुांच िया वहाांपर इसको अगधकार भी ममल िाता है। सब हो िया। कुछ भी िहीांकरिा धरिा पडता । ब्रम्हा र्वद्या के श्रवण सेअतां:करण की शुद्गध होती है, करोडौ िन्मों के पातक िष्ट हो िाते ेहैं। मल का िाशक श्रवण र्वक्षेप का िाशक मिि, आवरण का िाशक निहदध्यासि है। बाद में तो सद्गुरुमाश्रयेत् ्। तो भैय्या में आत्मा हूां क्योंकक मि द्वारा मिि् ्ि हो, गचत्त द्वारा गचतांि ि हों । बुद्गध द्वारा निश्चय िहीं। तो प्रश्ि होता है कक ककस प्रकार िाा िाय । तो मि मिि करते- करते िहाांपर अपि हो िाता है। गचत्त गचन्ति करते-करते े जिस अवस्था में गचत हो िाय । बुद्गध िहा ांपर खो िाती है और बुद्गध का निश्चय धम िखतम हो िाता है। वही तो म ैंआत्मा हूां । परिु मि-बुद्गध-गचत्त करके म ैंअग्राह्य हूं। इि सब करके में अग्राह्य हूं। तो

'नान्द्तः प्रज्ञं ंन ईहष्प्रज्ञं ंनोभयतः प्रज्ञ न प्रज्ञान घनं न प्रज्ञ नाप्रज्ञम ।
अदृष्टमव्यर्हायमिग्राह्यम लक्षणम धचन्द्त्यमव्यपदेश्यमेकात्म

प्रत्ययसारं प्रपंचोपशमं शान्द्तंमशर्मद्वैतं चतुथ िमन्द्यन्द्तेस आत्मा स र्ज्ञेयः' ।७।

(ौ. पा. काररर. ओिम प्रकरण मत्रां स. ां ।७।)

बि में अग्राह्य हूां तो अग्राह्म होिके कारण म ैंअव्यवहाय िहूूँ व्यवहार में 'म ैं' आत्मा िहीांआता ।
इसमलए अव्यवहाय िहूां कक म आत्मा में व्यवहार िाम की चीि िहीांहै। अरे ! व्यवहार है ही िहीांव्यवहार का
मतलब - ि मुझ आत्मा की दृजठट व्यवहार कर सके कण िइजन्द्रय व्यवहार कर सके ि जिव्हा व्यवहार कर सके ।
जि इजन्द्रय का िो धम िहै, िैसे ेआखां का देखिा धम िहै, वाणी बोलिा धम िहै । ये इजन्द्रयों के व्यापार हैं अथवा
इजन्द्रयो के व्यत्र- हार हैं। तो इि व्यबहारों करके 'में' अव्यवहाय िहूां। दूसूरी चीि यह है कक मुझ आत्म-देश में
व्यवहार है ही िही। ां मुझ आत्मा के मलए कोई व्यवहार िही ां। 'मे' आत्मा से व्यवहार िही ांऔर 'मुझ' आत्म-देश में
ककसी ककस्म व्यवहार िही। ां मुझ आत्मा के मलए व्यबहार िहीां'म ैं' 'आत्मा' स्वय ांव्यवहार रूप िहीांऔर मुझ
आत्म देश में ककसी प्रकार का व्यवहार िहीांअिुभव करा । कल भी इस पर थोडी रोशिी डाली िई थी । समझाया
िया था। जिस समय 'मे' आत्मा यििी शब्द, रूप, रस िधां और स्पश िइत्याहद र्वषयों में - र्वषय का अिुभव
करता हूां तो ककसी र्वषय के अिुभव काल में 'कर्ताािुभूनत', कमािुभूनत, कक्रयािुभूनत आहद तीिी अिुभू- नतयो की
अिुभूनत िहीांहोती । कफर सुिो शब्दाहदक र्वषयों में सेककसी भी र्वषय के अिुभव काल में तीिों चीिरहेंिी ही
िहीां। 'अिुभव' करिा कक्रया है और जिस चीि का अिुभव ककया िाय वह कम िहै और अिुभव करिे वाला कर्ताािहै
तो ककसी भी र्वषय के अिुभव काल में ककसी की अिुभूनत िहीांहोती और अिर होती है तो में अव्यहाय िही। ां िी
हाां! ककसी भी र्वषय के अिुभवकाल में ककसी भी दृश्य के दशिकाल में, ककसी भी रस के ग्रहण काल में, ककसी भी
पदाथ िके स्पशिकाल में कर्ता, कम,ि कक्रया तीिों का अभाव रहता है । इसमलए इस अिुभूनत को लेकर महारिी श्रुनत
ि्।' एक बात है कक ककसी भो र्वषय के अिुभव काल में कर्ताा, कम,ि कक्रया तीिों की
कहती है- 'अव्यवहायम्
अिुभूनतयो का अभाव रहता है तो इसकी अिुभूनत तो अिुभूनत देश ही होिी। ककसी भी र्वषय के अिुभव काल में
कर्ताा, कम,ि कक्रया तीिों की अिुभूनतयो का अभाव रहता है- इसका िो 'अिुभव' वह 'अिुभव देश' में हो िहा। 'म ैं'
देश में । बुद्धध तो यहाांतक कहती है कक में अिुभव करती हूां और यह फला ाँर्वषय है। मिर इि अिुभव-काल में
बुद्धध भी खो िाती है, मि खो िाता है, गचर्त् खो िाता है। इिका एक का भी पता िहीांरहता तो कत्ता, कम,ि कक्रया
तीिों का अभाव रहता है इसमलए श्रुनत मुझ आत्मा को अव्यवहाय िकहती है ।

अब बारह बज रहे हैं, मध्यार्काश के बाद

दो बजे ेसे प्रर्चन पुनः प्रारम्भ होर्ा ।

***

समय- २ बजे से ४ बजे तक

स्वरूप ो आत्मा 'म'ै ाम से प्रमसद्ध है, भिविा आत्मा के वशेषणों की व्याख्या की ा रही है।

नान्द्तः प्रज्ञम् ्....

उस वक्त अव्यवहार का ववेचि हो रहा था ।

ान्तिः प्रज्ञ ां....

ि'म'ै आत्मा भीत्र को ाता हूां ि 'म'ै बाहर को ाता हूां। ि 'म'ै प्राज्ञ हूां ि अप्राज्ञ हूां। अदृठटम 'म'ै भिविा आत्मा अदृठट हूां। अदृठट का ववेचि हो चुका है 'अग्राह्यम्'् इजन्रयों करके अग्राह्य हूां । मुझ आत्मा को कोई स्पश िहींकर सकता ।

'अन्द्स्त नास्त्यन्द्स्त नास्तीतत नान्द्स्त नास्तीतत रा् पुनुः ।
चलन्द्स्थरोभयाभार्ैरार्ृणोत्येर् बामलशः ।' ।८३।
कोट्यश्चतस्त्र एतास्तुग्रहैयासिांसदार्ृतुः ।
भर्ानामभरस्त्पृषृटो येन दृष्टः स सर्दिक् ॥' ।८४।।

(ौ. पा. कारर. अलात शानांत प्रकरण म.ां स.ां ।८३-८४।)

कोई कहता है कक ईश्वर 'है', परमात्मा है। कोई कहता है, ईश्वर 'िहींहै।' कोई कहता 'है' और 'िहींहै' और कोई कहता है 'िहींहै–हीं है' । ो कहता है-ईश्वर 'है' वह मूख िहै, ो कहता है- 'िहीं' 'है' वह भी मूख िहै। ो कहता है- "है और िहींहै" वह भी मूख िहै और ो कहता है- 'िहीं है- िहींहै', वह महामूख िहै कहो । अलात् ्शानाँत प्रकरण की काररका है यह। ये चारों कोहटयााँभिविा 'आत्मा' को ढाकिे की कोमशश तो करती हैं पर ये चारों भिविा आत्मा का स्पश ितक िहीं कर सकती ांऐसा ो ाता है वह सबको देखता है। ऐसा ो देखता है वही स्व-स्वरूप भिविा आत्मा को ाता है। वही भिविा स्व-स्वरूप आत्मा को देखता है 'अदृठट' कोई कहता है कक भिविा है। ीक है। ो कहता है, परमात्मा 'है' उसको मूख िक्यों कहा िया ?

ि किहता है-'है'। तो इसको किौ ि‍ाता है। प्रमात्मा के अजस्तत्व को मसद्ध किौ करता है? 'म'ैं। यहद अिो कोई भी र्वरोधी तुम्हारे सामिेआकर कहे कक क्योंकि ! परमात्मा 'है' इसका क्या प्रमाण है? उस वक्त क्या तुम पोथी-पत्रा हदखाओगे? उपनिषद्, भिावत्, पुराण आहद से भिविा आत्मा का अजस्तत्व ममद्ध िहींहोता। ये तो आजस्तकों के ग्रथां हैं। िो इिके प्रनत श्रद्धा रखते हैं, उिके मलए तो ये ग्रथां प्रमाखणत हैं और जििका परमात्मा के अजस्तत्व पर ही सन्देह है, तो ये ग्रथां प्रमाखणत िहीं होते । उिके सामिेइि ग्रथांों की बेइज्िती िहींकरिी चाहहए । वेकहते हैं, कक तुमिे अपिेघर में मलख मलया होिा। परमात्मा के अजस्तत्व में क्या प्रमाण हैं ? परमात्मा के अजस्तत्व में यही प्रमाण है कक 'म'ैं 'हूां' इसमलए परमात्मा भी है और यहद में िहीं तो परमात्मा भी िहीं। परमात्मा है इसको ि‍ाता किौ है ? इसका साक्षी किौ है ? यहद में ि होऊांिा तो इसका प्रमाता किौ होिा कक परमात्मा 'है' । कोई कहता है कक परमात्मा 'िहींहै' तो जिस करके 'परमात्मा है' इसको मसद्‌ध होती है उसी करके परमात्मा 'िहींहै' की भी मसद्‌ध होती है तो ि‍ाभाव का मसद्ध करिे वाला तो 'म'ैं ही हूां और परमात्मा-'है' और 'िहींहै'- इसकी भी मसद्‌ध में ही करता हूां और परमात्मा 'िहींहै- िहींहै' की भी मसद्‌ध में ही करता हूां परन्तु मुझ 'आत्मा' को अजस्तभाव, िाजस्तभाव, अजस्त–िाजस्तभाव और िाजस्त–िाजस्त- भाव चारों कोहटयााँस्पशा िहीं करिे में समथ िहीं हैं। यह अग्राहा का रूप है ।

परमात्मा िहींहै असद भाविा है। र्वपरीत भाविा िीवात्मा परमात्मा दोिों मभन्‌-मभन्‌ हैं। ईश्वर-सवाज्ञ, है, िीव-अल्पज्ञ है। सभांाविा-शायद ऐसा ही हो। असभांाविा- ऐसा हो ही िहींसकता। इन्हीांचारों भाविाओ ां के मूलोच्छेद करिे के मलए वेदों के चारों

तत्वतः वय हैं। अहां ब्रह्माजस्म, तत्वममस, अयमात्मा ब्रह्म प्रज्ञािम् ्।। माता पावाती के हृदय में असम्भाविा पैदा हुई थी। िा तिय तो ब्रह्म ककमम, िारर बबरहमनत मोरर िब तत्त्व का बोध भिविा शकांर से तव माता िी कहती हैं---

भई रघुपतत पद प्रीतत प्रतीतत । दारुण असम्भािाा बीती ।"

क्योंकक 'म'ैं आत्मा सव िकरके अग्राह्य हूाँ। कोई स्पशा िहीं ांसकता तो अग्राह्य हूाँ, अव्यवहाय िहूाँ। व्यवहार में में आत्मा आता क्योंकक व्यवहार होता है प्रपचां में। और इजन्रया ाँभी व का ही व्यवहार करती हैं। मि प्रपचां का व्यवहार करता है कक मुझ 'आत्मा' का और इजन्रयााँस्वयांप्रपचां हैं। मतलब यह है मुझ आत्मा के अनतररक्त िो कुछ है सब प्रपचां है। इजन्रयााँ वय ांप्रपचां हैं और प्रपचां का ही व्यवहार करती हैं ि कक मुझ आत्मा का । इसमलए म ैं अव्यवहाय िहूाँ। मुझ आत्म देश में--

"न तनरोिो न चोत्पत्तिन िबद्धो न च सािकः ।

न मुमुक्षुन िवै ैमुक्त इत्येषा परमाथताि ॥३२॥"

(िौ० पा० कारर० वैतथ्य प्रकरण म०ां स०ां ॥३२॥)

िनिरोध है, ि उत्पर्र्त् है, ि पालि है ि सहाांर है। में िमा परमाथ िस्वरूप हूाँ। परमाथ िस्वरूप मुझे ेआत्मा में व्यवहार हिो के कारण में अव्यवहाय िहैं। प्रपचां का अभाव तो कर हदया। बत्र का बाध तो पहले ेही मत्रां में हो चुका।"

ओममत्येदक्षरी ममरू॰ सर्म् ।

न तनरिोि न चोत्पत्तन ि...परमोथतिा ।।

इस काररका में ि उत्पर्र्त् है ि पालि है, ि सहाांर है। िब प्रपचां की उत्पर्र्त् िहीांतो कफर प्रपचां का पालि िहीांऔर िब प्रपचां की उत्पर्र्त् और पालि िहीांतो प्रपचां का सहाांर भी िहीांबि प्रपचां की उत्पर्र्त् िहीांतो कफर उत्पर्र्त्कर्त्ाि िए पालि िही ांतो भता िए, उत्पर्र्त् और पालि हिीांतो हता िभी िए। यह परमाथ िहै।

यही उर्त्म सत्य है कक ककसी बिी की उत्पर्र्त् हुई ही िहीांकोई भला मसद्ध कर तो कर दे ।

"स्त्र्तो रा परतो रार्प न ककंधचद्रस्तु ुजायते।"

ितो प्रपचां स्वय पैदा होता है ि इसे ेऔर कोई पदाां करत है । प्रपच स्वय ांपैदा िहीांहोता । क्योंकक यहद प्रपचां की उत्पनत मिाते ेहो तो प्रपच पैदा हिोके पहले ेउसका क्या रूप था ? भा रूप था कक अभाव रूप था कक भावाभाव रूप था। तो प्रपच अपिे उत्पर्र्त् के पहले ेसत्य था- तो श्रीमि् ्िी, सत्य की तो उत्पर्र्त् ह िहीांहोती । िो कालातीत हो उसे ेसत्य कहतेहैं िित प्रपि उत्पर्र्त् के पहले ेसत्य था तो सत्य मिाकर उत्पर्र्त् मसद्ध िहीांहाती असत्य कहो तो असत्य बन्ध्या पुत्रवत् ्होता है इसमलए िब था िहीांतो पैदा क्या हिेा । उसकी उत्पर्र्त् कैसे ेहिेी । सत्य मिा तो उत्पर्र्त् मसद्ध िहीांहोती, असत्य मिाों तो उत्पर्र्त् मसद्ध िह होती । सत्या सत्य कहो तो इसका उत्पन् हिेा मसद्ध िहीांहोत ि तो िित प्रपचां स्वय ांपैदा होता है ि इसे ेकोई पैदा करता है यहद कहो - अिर पैदा हिीांहुआ तो यह प्रपचां परमात्मा से अ है। तो कहते ेहै यह भी िहीांबिता क्योंकक िित का कत्र्ता परमात्मा को मिाा िाय तो िो परमात्मा िित का कता िहै िन्मा है कक अिन्मा ? अिर िन्मा मिाोतो परमात्मा मसद्ध होता । परमात्मा सत्य सिाति कहा िाता है। उसे ेअिन्मा कहो को श्रीमिा िी ककसी का िन्म मसद्ध िही होता। इसमलए परमात्मा व भी िित की उत्पर्र्त् मसद्ध िहीांहोती। कोई पदाथ िि स्वयां बदाां हुआ ि ककसी ि पैदा ककया। िब प्रपचां हो तब ि प्रपचां का व्यवहार हो इसमलए में आत्मा अव्यवहाय िहूाँ। और िब उत्पर्र्त् िहीांतो पालि ककसका । और पालि िहीं तो सहाांर ककसका । िीता स्मृनृत आई हैं- पन्ांरहवें अध्याय में कहते ेहैं-

न रूप मस्त्येह तथोपलम्यते, नान्द्तो न चाहदनं च संप्रततष्ठा।"

(िीता अध्या० १५ श्लोक ३)

कहते ेहैं कक- आहद में उत्पर्त्, प्रनतठिा में पालि और अन्त में सहाांर । यह अव्यवहाय िकी व्याख्या है।
कहते ेहैं कक ससाांर का िसाा रूप देखि ेमें आता है वैसा यह अपिमूल भिा में िहीांममलता। इसमलए ि इसकी उत्पर्त् है ि पालि है ि सहाांर है। याहद है ि मध्य है ि अन्त है। ि रूप मस्येह ... ... ।

िआहद है, ि मध्य है ि अन्त है। ि उत्पर्त् है ि पालि है सहाांर है। तो उत्पर्त् रहहत है। तो कफर क्या है यह ? मुझ मात्मा का भी तो उत्पर्त् पालि और सहाांर िहीं ह।ै तो यह र्वशेषण प्रपचां का है कक मुझे आत्मा का है ? मुझ आत्मा का है।

'न रूप मध्येह तथोप लम्यते .... संप्रेततष्ठा ।'

कहते ेहैं ि परमात्मा आहद, मध्य और अांत से रहहत है। तो सार भी तो आहद, मध्य और अांत से रहहत है। ैसि ेमुझ आत्मा उत्पर्त् िहीं, मुझ आत्मा का पालि िहीं, मुझ आत्मा का सहाांर ही।ां क्योंकक अगधठिा में िो अध्यस्त पदाथ िहोता है वह अगधप्टिा के अिुरूप ही होता है । अगधठिा स्वरूप ही होता है। अगधठिा िो लकडी है और इस अगधठिा लकडी में डण्डा अध्वस्त है, तो िो रांिो वण िलकडी का वही रांविहीांवणं ंडण्डा का। तो इसी तरह िो लक्षण म ैं'आत्मा' का वही लक्षण प्रपचां का ।

"उत्पादस्त्याप्रमसद्त्रािदजंऽ सर् िमुदाहृतम् ्।

न च भूतादभूतस्त्य संभर्ोऽन्द्स्त्त कथंचन ।। "

(िौड षा० कारर० अलात शा०ां प्र० मत्रां ॥३८)

प्रपचां की उत्पर्त् मसद्ध िहीांहोती इसमलए प्रपचां 'अि' और िो 'अि' है वह 'म'ैं हूाँ। ससाांर तो एक फिी मिि है। कल्पिा करली । व्यवहार कहा िाता तो है पर िब प्रपचां हो तब व्यवहार हो । अरे ! िब प्रपचां बन्ध्या पुत्रवत् ्है, है ही िहीं, भैया कफर "अव्यवहायम्ि्' में आत्मा अव्यवहाय िहूाँ। व्यवहार लेश ही िहीांहै। "ि रूप मस्येह ।"

कफर यह कहो यहद यह ससाांर प्रपचां पैदा हुआ होता तो इस िन्म कुडली अवश्य होती परन्तु यह ससाांर कब बिा ? ककि बिाया ? कैसे ेबिा ? इसका तो अिा हदि तक ककसी ि पता लिा पाया । इसके िन्म सवांत् ्का भी पर्ता िहीांइसमलयेसर अिाहद है। अिाहद हिोके कारण 'म'ैं हूाँ । अिाहद हिोके कारण पालि का अभाव है, तो कर्त्ाि, भता िऔर हता िइ तिीिं का अभाव है। कफर अभाव में व्यवहार कहा ाँइसमलए 'म'ैं आ अव्यवहाय िहूाँ ।

"अश्र्त्थमेनं सुर्रूढमूलमसंर् शस्त्रेण दृढेन तछत्त्र्ा ।।

(िीता-१५ वा ांअ.)

देखो भिविा श्रीकृठण ि ससार का िाम हदया है अश्वत्थ । भैय्या- अश्वत्थ तो कहते ेहैं सस्ांकृत में पीपल के वृकूष को । अ = िहीां। स्व = प्रातः । स्थ जस्थर । राबत्र के अधोंरे में तो रहे और प्रकाश हिोपर सबेरे ि रहे उसको कहते ेहैं अश्वत्थ ।

अज्ञिा के अधोंरे में तो ससार है और ज्ञिा रूपी सूय िके उदय हिोपर िहीांरहता । इसमलए भिविा ि ससाांर का िाम अश्वत्थ खखा । क्या बारह बिे ेहदि में रजू्ूमें सप िहदखता है ? रात में हो हदखता है। और िहा ाँ रोशिी आयी तो उसका अभाव है। अच्छा, अज्ञिा ककस चिी का । अरे, रजू्ूके ही अज्ञिा से सप िि होते ेहुए अधांकार के कारण सत्य सा भासता है। ककस चिी का अज्ञिा ? स्वरूप आत्मा का । अरे ! स्वरूप आत्मा के अज्ञिा से ही यह ससाांर प्रपचां सत्य सा भास रहा है। वास्तव में है िहीां।

न रूप मस्त्येह........................तछत्त्रा :

भिविा कहते ेहैं कक और िो इसकी िड है ससाांर वृकूष की िो िड है बडी मिबूत और बडी िहराई में िई हुई है। तो कफर ससाांर की िड काटें कैसे े? ककस तरह इस िड को उखाडी िाय ? असिां शस्त्र करके । असिोीऽयमपुरुषः । असिां का मोटा 1 अय ांहै तो यही कक जिसको ककसी की सिांत ि हो। तो म ैंिो आत्मा हूाँ। मुझ आत्मा का सिां ककसी में है ही िही।ां अब यह प्रशि्होता है- कक ससाांर का सिां तो आत्मा का है ही ? अरे ! • होय तब तो सिां करे आत्मा का । अरे ! मुझ आत्मा के मसवाय कुछ है ही िहीांतो सिां ककसका । तो इस ससाांर की सिबूत डि है उसको ककस शस्त्र से काटे। असिां शस्त्र से । असिां बया है ? 'बात्मा' और कहते ेहैंकक यह िो असिां शस्त्र है इतिा पिा है कक दृढ असिां शम्त्र करके काटे इस ससाांर के िड को । रजू्ूसे यहद सप िमभन्िहै तो उस सप िका िाश करिे के मलए कोई ि कोई दूसूरा उपचार हो सकता है। अरे ! िब रजू्ही सप िहै तो कफर उस सप िको काटिे े के मलए रजू्ही शस्त्र है। उसी तरह ससाांर प्रपचां यहद मुझ आत्मा से सवथिा मभन्िहै तब तो ससाांर के िाश का दूसूरा उपचार हो सकता है और िब में ही प्रपचां हूाँ तो "म'ैं' आत्म्ा ही उस प्रपचां के िाश का शस्त्र हूाँ। इसमलए असिोीऽयम-पुरुषः ।

अज्ञिा रहहत, स्वप्िरहहत, िाम रूप से रहहत, स्वय ांप्रकाश। सव िका ज्ञाता । िब hat F आत्मा ऐसा हूाँ तो कफर कोई उपचार िहीां। तो 'ि रूप मस्येह तथोपलभ्यते!

रजू्ही है, जिसको सप िकहते ेहैं। सप िििी काल में िहीांहै। तो भैया सारे व्यवहार होते ेहैं प्रपचां में, और प्रपचां तिी काल में है िही, तो व्यवहार की मसद्धध कहा ाँऔर व्यवहार की मसद्धध िहीांतो म ैंआत्मा अव्यवहाय िहूाँ ।

देखो - इस देह को ले लो। यह देह अपिी उत्पर्त्् के पहले ेसत्य था कक असत्य था, कक सत्या सत्य था । सत्य कहो तो उत्पर्त्् िहीां । असत्य कहो तो उत्पर्त्् िहीां । सत्या सत्य कहो तो उत्पन्ि िही ांहुआ । तो अिुत्पन्ि हिोके कारण 'अिम्'् ।

उत्पादस्त्या .... कथंचन ।

उत्पर्त् की अमसद्ध्ध हिोके कारण "इदां प्रपचां अिम् ् ।" सब अिम् ् है। यही ससाांर िड काटि े का शस्त्र है। देखो - अपिेआपको आत्मा मािकर (िीव मिाकर िहीां) ध्याि में बैठो और अिर भीतर र्वचार, कल्पिा, सकांल्प, र्वकल्प िो भी दृश्य तुम्हारे सामिे आए, क्योकक म ैंआत्मा तो िािता ही हूाँ । र्वचार उिते ेहै तो म ैं िािता हूाँ। तो िब कोई भीतर हदखाई पडेदृश्य, उस दृश्य को काटि े के मलए उस प्रपचां को िाट करिे के मलए किौ सा शस्त्र हाथ में पकडे रहिा चाहहए। अरे ! 'अहम्' ् । िब र्वचार पैदा हो वह कल्पिा हटाई िा िहीांसकती । कुछ मत करो । िब कोई चीज़ पैदा हो अदांर 'अहम्' ् । म ैंका डडांा लिाओ। िहा ाँतुमिे यह भाविा ककया तो में का डण्डा लिते ही ि तो तुमको र्वचार हदखिेा ि सकांल्प-र्वकल्प हदखेंगे। ि कोई र्वकार हदखिेा। यह हगथयार पकड लो । यह हगथयार बबिा लाइससें का है। यह हगथयार सब के पास है और बबिा लाइससें का है। इसमें कोई पूछिे वाला िहीांहै कक लाइससें हदखाओ । यह र्वश्व र्वियी हगथयार है। इस हगथयार से सारा प्रपचां ही खत्म हो िाता है। और इस हगथयार को लेकर कही ांभी िा सकतेहो । पासपोटि की िरूरत िही ांहै। कही ांिाओ चाहे घर में रहो । चौबीस घटें यह हगथयार लटकाए रहो । काम चेठटा, क्रोध चेठेटा, लोभ चेठटा ये बडे प्रबल शत्रु हैं। सबके मलए बस एकही हगथयार है। इन्र का बज्र भले कुांहित हो िाय । मिर यह कुांहित िहीांहो सकता । प्रपचां के अजस्तत्व से भय है। या अजस्तत्व से भय है ? प्रपचां है। िित प्रपचां है तो प्रपचां से भय है। है देश में प्रपचां है कक प्रपचां देश में प्रपचां है ? डण्डा देश में डण्डा है कक लकडी देश में डण्डा है। 'है' देश में प्रपचां है कक प्रपचां देश में प्रपचां है ? प्रपचां देश में। िहा ाँतुमिे डण्डा मारा 'म ैं हूाँ तो में आत्म देश में तो प्रपचां है ही िहीांतो कफर भैया -- चला िया । मिर इस हगथयार का इस्तेमाल उसी समय करो िब तुमको उस चीि से भय लिे। हरेक पर इसे ि मारो। देवरिा इन्र उस समय वज्त्र का प्रयोि करता है कक िब वह समझ िाता है कक में िया अब िहीांबचूाँिा । इन्र का मारा हुआ िहीां बचता । तो 'म ैंहूाँ' इसका उपयोि उस वक्त करो उससे अिर तुमको भय लिेऔर भय िहीांलिेतो ि मारो ! देवासुर सग्राांम में रािा बमल और देवरिा इन्र का युद्ध हुआ तो इन्र समझ िया कक रािा बमल मार डालेिा उिाया वज्र और मार हदया। यह दृठटातां कहिेका मत- लब यह है कक तुम बैठे हो और चचांल होता है मि या र्वकार पदैा होते ेहैं तो इि र्वकल्पों से ग्लानि िहीांहोती तो बज्र ि उठाओ और अिर ग्लानि होती है तो िाड दो वहीांपर । ककस वक्त ? र्वचारों से कलिाओांके उदय, अिुदय से कल्पिाओांके भावाभाव में ककस वक्त हर्ष–शोक ि हो ? िब 'में' के 'में' ही रहो ेतब। और िब तक कल्पिाओां से हि,ि शोक होता है भावा-भाव से तो समझिा अभी जस्थनत कच्ची है। अभी हम पूण िरूप से स्वस्थ िहीां हुए एसा समझिा । यह हगथयार तो अस्वस्थता के मलए है। यिो समझ तो मलया हैं 'में' आत्मा हूाँ। मिर इस बोध की पररपाक अवस्था अभी िहीां हुई है। तो कल्पिाओ ांके उदय-अिुदय में हर्ष–शोक स्वाभार्वक है। िहा ाँमारे डण्डा तो ि काम र्वकार रहिेा ि लोभ रहिेा। ककसो ककस्म के र्वकार िहीांरहते े। फट सेशातां हो िाता है तो कफर ।

" न रूप मस्त्येह तथोपलभ्यते................. तछत्त्वा"

ससाांर की िो िड है इतिी िहराई में िई है कक भिविा आत्मा रूपी शस्त्र के द्वारा ही कट सकती है। दूसूरा उपाय िहीांहै। क्योंकक ससाांर यहद मुझ से मभन् िहो तो कोई उपचार हो िब 'म ैं' ही प्रपचां हूां। मुझ आत्मा से

प्रपचां की सर्त्ा मभन्ि िहीां है तो "म`ै" ही इसका िाशक भी हूां। सप िके िाश का रज्ू िहो शस्त्र है। उसी तरह ससाांर प्रपचां के िाश का म ैंही शस्त्र हूां। िैसे ेध्यिा में बैितेहो, िींपू पि में बैितेहो, तो सिु तो रहे हो, समझ भी रहे हो । िब तक यह समांझ बुद्र्ध को है तब तक कल्पिाओ ांके उदय-अिुदय में हष िशोक हिोा ही । अरे.! बुद्र्ध भी तो एक कल्पिा है। वृद्र्गध द्वारा मैंिसमझा है कक में आत्मा हूां। मुझ आत्मा से मभन्ि कुछ भी िहीां। (यह बुद्र्ध की धारणा है) तो भैयैा बुद्र्ध की समझ है तो कफर कल्पिाओां के उदय-अिुदय में हषि–शोक हिोा ही और िब में उसको स्वय ांसमझेंिा तो स्वय ांके समझिेमें कल्पिा का सवाल ही िहीां। दूसूरी चीि यह है. अिर अपिेही प्रनतबबम्ब से अपिेको भय लिता है तो शीशा फेंक दो। अपिेही प्रनतबबम्ब से अपिा मुख देखिेपर शीशेमें अपिेआपको अपिेही प्रनतबबम्ब सेभय लिता है तो कफर फेंक दो शीशा ।

'मनोदृश्यममदं द्वैतंयन्द्त्कंधचत् सचराचरम् ।

मनसो ह्यमनोभारेद्वंत नैवैपलम्यते।' ।३१।

(िौ. पा. कारर. अद्वैत प्रकरण मत्रां स. ां ।३१।)

िो कुछ चराचर प्रपचां है, सब मि है। तो मि हुआ शीशा मि अमिीभाव को प्राप्त हो िया तो िित प्रपचां का भिा ही कहा? ां तो मि है शीशा । िािृत अवस्था में और स्वप्िवस्था में िो कुछ हदखाई देता है प्रपचां, वह मुझ आत्मा का ही तो प्रनतर्वम्ब है। िाग्रत अवस्था में मि रहता है तो प्रपचां हदखाई देता है। स्वप्ि अवस्था में मि रहता है तो प्रपचां हदखाई देता है। िाढ़ी निरा में मि िहीांरहता तो मि के ि रहिे पर अरे शीशा ही िहीांतो प्रनतबबम्ब कहा ाँ। अब यह पूछो कक यह शीशा कहा ांफेंके। अरे प्रपचां का मूल कारण िब मि हो है तो मि रूपी शीशा को कहा ाँफेंके । सभी वेदाजन्तयों का कहिा है कक मि सुषुजप्त में अपिेकारण अज्ञाि में लीि होता है और बडे-बडे वेदान्ती लोि ऐसा कहते ेहुए मशकायत करते ेहैं कक स्वामी िी ! र्वषय को समझ िया हूां मिर मि बडा परेशाि करता है। तो कफर तुम समझ क्या िए हो ? तो यह बुद्र्ध द्वारा तुमिे समझा है । अपिे आप द्वारा िही ांसमझा । में आत्मा के अज्ञाि से मि है मिोशीशा है । ि कक स्वरूप ज्ञाि में िब स्व-स्वरूप को िािा मलया तो मि िाम की चीि ही िहीांहै और दूसूरी बात यह है कक भिवाि श्री कृठण र्वभूनत योि में कहते ेहैं-

'इन्द्न्द्रयाणां ांमनश्चान्द्स्त्म'

जिसको मि कहतेहैं वह मि 'में' हूां और मि का पाि िपुसांक मलांि में पढ़ा िाता है और ब्रम्ह भी िपुसांक मलि है। तो हहिडे- हहिडे की लडाई है ।

ब्र्ह्म – ब्र्ह्मणण - ब्र्ह्मांमस और मन: मनसी - मनांमस ।

तो ये दिोों सिातीय हैं। मि की एकता प्रपचां से कभी िही ांहो सकती। मि की िब एकता हिोी तो मुझ आत्मा से हिोी। ि स्त्री से, ि शरीर सेऔर ि ककसी पदाथ िसे । मि का िो एकीकरण हिोा तो मुझ आत्मा से ही

हिाे । पुत्र की एकता र्पता से ही होती है ि कक कुटुम्ब से । चाहे सैकडों आदमी हों घर में क्योंकक र्पता ही है िो पुत्र
मिि से कहा िाता है तो म ैंही हूां िो मि कहा िाता हूां। फेंक दो शीशा । मि का लय हिाे मि का अभाव िहींहै
क्योंकक लय तो सुषुजप्त में भी हो िाता है। यह मि का अमि हिाे िहींहै। यिाे लय हिासे मि अमि हो िाय
तो िाग्रत अवस्था में लौटकर ि आवे े। स्वरूपस्थ हो िािा मि का अमि हिाे है। मि के अमि हो िािोपर
द्वैत प्रपचां की प्रतीनत िहीं होती । मि का अपि हो िािा यिाे 'म' ैं हो िािा ।

इजन्रयों में िो मि है वह 'म' ैं हूां। र्वचार, कल्पिा, भाविा, सकांल्प, र्वकल्प इच्छा कामाहदक र्वकार मि
के ही िािा िाम हैं। पयायिवाची िाम है। कभी मि र्वचार के रूप में हदखाई देता है कभी र्वकार के रूप में हदखाई
देता है तो क्यों ि भिविा का यह मत्रां पढ़ा िाय-

इन्द्न्द्रयाणां ांमनश्चान्द्स्त्म'

(भिवद्िीता अ.१० श्लो. ।२२। ')

'सूक्ष्माणामप्यहं जीर्वो दुजुयिनामहं मनः ।

(श्रीमद्भिावत् ्एकादशस्कांध अध्याय १६ श्लोक ।११।)

'हौं हारयो कररजतन.... ... प्रेरक प्रभु बरजै ै।।

(र्विय पबत्रका)

मि का प्रभु, मि का रािा, मि का अगधर्ाठिा 'में' आत्मा ही तो हूां। मि का स्वामी हिाेके ही िाते, े मि मुझ आत्मा के ही वश में रहता है। कहो-कैसे े? अरे ! मि मुझ आत्मा के वश में ि हो तो दो घटां सुबह और दो घटां शाम दो से चार-सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व का निरूपण होता है। तो किर तुम्हारा मि तुम्हारे कहिे िुसुि में ि चले। तुम्हारे वश में ि रहे। तो इसको ग्रहण कैसे ेकरिे ेतुम । क्योंकक मि ही तो एक िररया है। तो तुम भिविा आत्मा के वश में मि ि होय तो र्वषय हृदयिांम् ्हो सकता है ? कफर भी मशका- यत करते ेहो- मि वश में िहींहै। कौि सा यिाे साधि मि को काबू में करिे के मलए तुमिे ककया है ? यह 'म' ैं की महहमा है। तो अभी िो यह निरूपण सुि रहे हो तो व्यवहार होकर सुि रहे हो कक अव्यवहार होकर । इसीमलए तुमको ि मि का भाि है ि सुि रहे हो इसका भाि है। मि के ि रहिे पर मि का व्यवहार भी • िहींहै। इसमलए में अव्यवहाय िहूां। बस इसी का िाम परमाथ िहै।

'न तनरोिाे न चोत्पत्त्त ....।

स्वामीिाी ! एक प्रश्ि है ? क्या है भैया ! मिर इस वक्त मुझे यह भाि िहींहो रहा है कक म ैंमि का प्रेरक हूां-क्योकक में आत्मा हू । िीक है। क्योकक में आत्मा हू । अरे ! भाि ि हिाे ही तो 'म ैं'हूां'। म ैंआत्मा हूां। इसका भाि

ि हिाे हो तो में हूं और यही मि के मलये प्रेरणा है। खूब समझो । खूब ग्रहण करो। यह तो िब याद हदलाई िाती है तब तुम िािते ेहो कक म ैंसुि रहा हू। मिर सुि रहा हू, देख रहा हूं, िाि रहा हूं, क्या इि कक्रयाओ के कक्रयाकाल में भी अिुभव होता है कक सुि रहा हूं, देख रहा हू, िाि रहा हूं क्योंकक म ैंआत्मा अव्यवहाय िहू और अव्यवहाय िदेश में व्यव- हार को अिुभूनत िही होती । देखिा, सुििा यह सब व्यवहार है मिर व्यवहार के अिुभव काल में व्यवहार की अिुभूनत का सवथिा अभाव है क्योंकक में आत्मा अव्यवहाय िहूाँ। इस अिुभूनत को ही तो लेकर काररका कहती है ।

न र्ूर्ीं न ....।

यही परमाथ िहै िो जिस काम में लिा है, वह इतिा मस्त है। कक उस काम में, उसको भाि ही िहींहोता कक म ैंक्या हू और कुछ होय तब तो भाि होय । सहि पद से देखिो ेतब यह समझ में आएिा । उस वक्त कहा था हिमिंदृठटातां । साहब ! िो कुछ हम हैंवह सब िािते ेही हो । वस्तुतः में क्या हूं. यह पता िही ांऔर इसी अवस्था में पशु, पक्षी, कीट पतिां िर–िारी, बाल युवा वृद्ध आजस्तकि–ाजस्तक, पापी-पुण्यात्मा, सन्त-असन्त सब इस जस्थनत में बबिा प्रयास के जस्थत है। और सबके सब चीटाी से लेकेर ब्रम्हा पयन्ति स्व-स्वरूप में जस्थर हैं। तो कफर सवाल पैदा होता है कक तुम क्यों हदमाग्र खराब कर रहे हो। िब सब जस्थत है तो तुम क्या समझा रहे हो । यही समझा रहे हैं कक बबिा प्रयास के सब के सब स्वरूप में जस्थत है और समझिा इतिा ही है। यह समझ भी पास में ि रखिा िहींतो तुमको बेसेमि हदखाई देिा । दूसूरा ऐसी समझ में कफर ि समझ है ि बेसमझ है ि बोध है ि अबोध है ि ककसी ककस्म का व्यवहार है। मिर समझ लेिे के बाद व्यवहार िही ांहै कक व्यवहार है ? कक व्यवहार है ही िहीं।

इसमलए व्यवहार िहींहै । अरे भाई, व्यव- हार देश से व्यवहार है अव्यवहार देश से है ही िही।ां तो में भिवाि आत्मा अव्यवहाय ि हूं । इसका प्रत्यक्ष उदाहरण अिुभवकाल है। ककसी व्यवहार के व्यावहाररक काल में कता,ि कम िकक्रया तीिों का सवथिा अभाव है। क्यों अभाव है ? यहद म ैंआत्मा व्यवहार होऊं तो व्यवहार का अिुभव हो। तो में आत्मा अव्यवहाय िहोिेके कारण ककसी व्यवहार के व्यावहाररक काल में व्यवहार की अिुभूनत िही ां होती ।

"नान्द्तः प्रज्ञं ं..............सर्र्ज्ञेयः ।"

अब चार बि रहे हैं, आि का प्रवचि यहींसमाप्त होता है।

ॐ पूण िमदः पूण िपूणमदं,पूण िमुदच्यते ।।

पूणस्त्यि पूणमिादाय, पूण िमेर्ार् मशष्यते े॥

ॐ शान्द्न्द्तः ! शान्द्न्द्तः !! शान्द्न्द्तः !!!

चतुथ िहदवस का प्रवचि

(रुुर्ार हदनांकं१५नर्म्बरसन्१९७३समय१०बजे से १२ बजे ।)

अब पहले ेसारे उपनिषद के पिा सिु लो कफर व्याख्या करें-

ओममत्येतदक्षरमममदं७ सर् ि।

आत्म जिज्ञासुओ, स्व-स्वरूप भिविा आत्मा के र्वशेषणों का र्ववेचि हो रहा है।

नान्द्तः प्रज्ञं ं.........................।

कल्तक्अव्यवहाय्किी्व्याख्याहुुईथी्।्अब्अि्'अलक्षणम्'् में्िभिवि्आत्माहूां।्

अलक्षण्कहते्हैं, जिसका्कोईलक्षण्हिो्।्क्या्कहिाय्? जिसका्कोईलक्षण्हिो्'म'ै आत्मा्सतहूां्असतहूां्डिहूां्चेतिहूां, ि्आिन्द्रूपहूां, ि्दु:ख्रूपहू, ि्व्यापक्हूां् पुररजुच्छनहि, ि्पूणहिूां्अपूणहिूां।्मुझआत्माकाकोईलक्षणहैहिीहीांक्योंककमें्अलक्षणहूां।् वैसाहीहूां।्यहद्कोईकहे्"म ै' ऐसाहूां, यह्भी्एक्लक्षण्है।्मैं्अनिवाचिीयहूां् 'म'ै आककैसाहूां अवाङ्ग मिसिगोचरहूां।्वाणीमुझ ्आत्मा्का्कथिि्हीां कर्सकती्।्यहद्में्ऐसा्कहें्तो्यह्भी्तो् एक्लक्षण्है।्"म'ै' मि्वाणी्का्वषय्हिी्हूांयह्भी्एक्लक्षण्है।्क्या्यह्कहिा्सकता्है् कक्'म'ै क्याहूां? और्कैसाहूां? इसमलए्ककसी्चीी्का्वरोध्किरिा्हीमुझआत्मा्बा्लक्षण् है।्यहद्वरोध्करते्हो्कक्'म'ै यहहूांऔर्यह्हीांहूाँ।्यह्लक्षण्है्तो्वरोध्ही्करो्।्िमी् आए्कहो्क्योंकक्'में्अलक्षणहूांऔर्यह्अलक्षण्वशेषण्हिैइसकी्अिुवृत्ति्कहा्से्आती्है

"ओममत्येतदक्षरममदांसव"ि 'म'ै' सवूं ां, मुझ्आत्मा्से्मभत्र्कुछ्हैहिीहीांतो्भैय्यिा्ब्में्सवः्हूांतो् जिसकिो्लक्षणहै.्वह्लक्षण्मेर ा्ही्तो्है।्ऐसा्तो्हैहिीहीां ककयह्लक्षण्मुझ ्आत्मा्का्है।् ऐसा्तो्कहिा्सकतिा्ही।ां्तो्अलक्षण्की्यही्प्रभुता्है, अलक्षण्की्यही्अिुभूनत्है्कक्सि् 'में' हूवेमाहीहै।

"नासन्द्न सन्द्नःसदसन्द्नमहन्द्न चाणुनस्त्री पुमानर् नपुंसक मेकबोजम्।।

यैबम्हि तत्समनु- पामसतमेके धचत्तिान्द्या र्रेंजुररतरे भर्पाश बद्धिः।६।

िमें सत् ्हूाँ, ि 'में' असत् ्हूां ि में सत्–्असत् ्हूां। ि महि हूां ि अणु ्सूक्ष्म हूां। ि में स्त्री हूां ि पुरुष हूां, ि पिुसांक हूां। 'िासि सन्म ... . भव पाश बद्धाः'

ऐसा िो सािि ब्रम्ह आत्मा है, इसकी िो आराधिा करते ्हैं वही धन्य हैं और ब्रम्ह उपासिा (आत्मोपासिा) से िो रहहत हैं वे भवपाश में बधोंहुए हैं। इस िरज़ से मुझ आत्मा का कोई लक्षण िहीांहै। अब प्रश्ि होता है कक िब में आत्मा अलक्षण हूां, लक्षण- हीि हूां, कोई लक्षण िहीांहै तो मुझ अगधष्ठाि अलक्षण आत्मा में अध्यस्त िो प्रपचां है क्या इसका कोई लक्षण है ? 'में' अगधष्ठाि आत्मा तो अलक्षण हूां। िीक है, परन्तु मुझे ् अलक्षण आत्मा में प्रनतभामसत मिोअध्यस्त िो िते ्प्रपचां है तो कफर यह भी तो अलक्षण ही है यहद कहो कक देह लक्षण वाला है, देह सत्य है ती देह को एक सा रहिा चाहहए यहद कहो असत्य है तो हदखता क्यों है ? असत्य तो अभाव रूप होता है तो कफर कहो सत्य-असत्य दोिों है। तो यह भी कहते िहीांबिता। देहाहदक प्रपचां ि सत् ्है ि असत् ्हैि सत्यासत्य है। अलक्षण है। कोई लक्षण ही िही।ां सब अलक्षण है। अब यह िो अलक्षणत्व धम िहै। तो यह अलक्षणत्व धम िदेह प्रपचां का है या मुझ आत्मा का है, आत्मा का है। डण्डेमें िो लम्बापि, कालापि या खुदिरापि है यह तो लकडी का ही है ि भैय्या ! और यह भी सिु चुके हो िो अध्यस्त होता है वह अगधष्ठाि के अिुरुप ही होता है। अगधष्ठाि सेअध्यस्त का मभन्ि लक्षण िहीांहोता । सोिेमें िो आभूषण है तो सोिा अगधष्ठाि है और आभूषण अध्यस्त है। तो सोिेमें पीलापि, ििपि अगध- ष्ठाि सोिे का ही तो है । आभूषण तो फकी िाम है। तो पीला, ििि और मुलायमपि इसका िाम आभूषण है कक िो आकार- प्रकार है उसको

आभूषण कहते ेहैं। मिर आकार-प्रकार में भी तो सिोा है। सिोको अलि कर लिे पर आकार-प्रकार ही कहा ांरहिा ? इसमलए िो लक्षण सिो का वही लक्षण आभूषण का । तो िो लक्षण मुझ आत्मा का वही लक्षण प्रपचां का । यहद 'में लक्षण वाला हूां तो देहाहदक प्रपचां भी लक्षणविा हो यहद में आत्मा अलक्षण हूां तो प्रपचां भी अलक्षण है। इसका भी कोई लक्षण िहीांहै । यह भी अविाां मिसिोचर है । इसका भी कोई लक्षण िहीांहै। देखो, मि को । मि का क्या लक्षण है ? जिस तरह 'म'ैं आत्मा निवयिव हूां उसी प्रकार मि का भी तो आकार-प्रकार िहीांहै कुछ। बुद्दध का आकार-प्रकार िहीां, गचर्त् का आकार-प्रकार िही।ां यहद आकार-प्रकार इस प्रपचां में हदखता भी है तो बबिा मुझ अगधधिठा आत्मा के आकार-प्रकार बििा ककसमें ? और आकार-प्रकार का र्वकल्प हिोा ककस पर ? तो िि ियह है कक जिस तरह में 'आत्मा अलक्षण हूां तो उसी तरह देहाहदक सारा प्रपचां भी अलक्षण है इसका भी कोई लक्षण हिीांहै क्योंकक 'म'ैं ही हूां। अच्छा। िो सारा प्रपचां िैसे ेकक में आत्मा अलक्षण हूां, उसी प्रकार देहाहदक प्रपचां भी

अलक्षण है तो यहााँपर क्या कहिो े? 'म'ैं 'ही' हूाँ कक 'म'ैं हूाँ ? तो 'ही' तो वहााँलिाया िाता है िहा ाँपर कुछ मभन्िकी प्रतीनत होती है तो मभन्िता का अभाव करिे के मलए ही 'ही' लिाया िाता है ।

अरे ! लकडी ही डण्डा है क्योंकक िब डण्डा कहते ेहो ि, मालूम पडता है डण्डा और लकडी में भेद है। लकडी ही डण्डा है और लकडी में िब डण्डा खोिा तो डण्डा ि ममला तो 'हो' निकल िया । डण्डा खििोके पहले ेतो 'ही' लििा और लकडी देश में िब डण्डा ढूांढ़ा िया तो डण्डा ि ममला तो िब डण्डा है ही िहीांतो लकडी है। तो 'ही' ककसके मलए लिाओ,े तो 'ही' कहा ाँरहिा कफर तो 'ही' निकल िया। तो अब रहिा- लकडी है। यह बाध है। तो दरूर प्रपचां का निःसारण करिेके मलए भिो के मलए 'ही' लिाया िाता है। सिोा ही आभूषण है धिाा ही वस्त्र है, लोहा ही शस्त्र है। और िब सिोमें आभूषण ि ममला तो सिोा है। 'ही' निकल िया । इसी तरह प्रपचां को देखकर प्रपचांाभाव करिे के मलए िब प्रपचां की प्रतीनत होती है तो प्रपचां का अभाव करिे के मलए 'अहमेवेदम्सवम् ि् आत्मैवेदम्सवम्ि् ब्रह्मवेदम् ्सवम्ि् वासुदेवेदम् ्सवम्ि्सब आत्मा ही है, सब िारायण ही है, सब में ही हूाँ। िब दरूर निकल िया। तो 'म'ैं हूाँ। 'ही' की िरूरत िही ांरही। इसी तरह मि, बुद्दध, गचर्त्, अहांकार पचां महाभूत पचां तन्मात्राए,ां स्थूल- सूक्ष्म कारण तीिों शरीर सत्,् रि तम तीि िुण । बस दरूर भिा िया। िब दरूर निकल िया तो म ैंहूाँ। अब लक्षण किौ बताएिा बरे ! प्रपचां देश से लक्षण का र्वकल्प होता है या निठप्रपचां देश से? प्रपचां देश से लक्षण का र्वकल्प होता है। दरूर देश से । ससांार प्रपचां के ही अदांर धिवाि और दरूर होते ेहैं और भिांविो देश में तो ि कोई दरूर है ि धिवाि है। बबिा "अलक्षण" स्वरूप के बोध के बबिा यह दरूर िाता ही िहीां। जिसका एक बालक िहीांवह भी दरूर और जिसके ज्यादा है वह भी दरूर । अब समझलो । सब अिुभवशील बिैं हो । जिसका रहिे के मलए एक झोपडी भी िहीांबह भी दरूर और जििके बडे-बडेर्वजल्डि बिे हुए हैं वे भी दरूर हैं। जिसके यहााँ खिो ेको िहीांवह भी दरूर बौर जिसके पास लाखों हैं वह महा दरूर । अब दरूर किौ िहीां है--

"ब्ह्मानंद रसंपीत्रा येतु उन्मत्त योधर्नः ।

इन्द्रोऽर्प रंकर्त् ्भातत का कथा नृपृ कीटकाः " ॥

ब्रह्मािादां महदरा को पीकर िो उन्मर्त् है उिकी दृजठट में इन्र भी मभखारी के समाि हदखाई देता है। वही भर दररर िहीांहै। और तो सारा ससाांर दररर है। तो िब तक प्रपचां के प्रनत आस्था है। िब तक प्रपचां का अजस्तत्व है। तो भैया वह दररर ही है।

"नारायणे र्देम् ्सर्म्,् अहमे र्देम् ्सर्म्् "

वासुदेवः सव िममनत । वासुदेव ही सव िहै और िब दररर निकल िया, िब अपिे आत्मदेश में ढूांढ़ा तो प्रपचां िमिला तो 'हा' निकल िया । तो 'में' हूँ रह िया। यहाँपर 'में' आत्मा 'अलक्षण' मसद्ध होता हूँ। "ही" निकल िािो पर इस स्थिा में 'म'ैं आत्मा बलक्षण मसद्ध होता हूँ प्रपचां के रहते िहीां। प्रपचां में रहते ेपर तो िािा लक्षण वाला में आत्मा प्रतीत होता हूँ। वाह ! िो अपिे को साढ़े तिि हाथ का मािता हैं उसको साढ़े तिि हाथ का ही लक्षण वाला हदखता है। तो कफर इतिलक्षण है कक अिन्त । िो अपिे आपको ससाांरी िीव मािता है उसको िीव सा हदखता हूँ। देह मािि वाले ेको देह सा हदखता हूँ। स्त्री मािि वाले को स्त्री सा हदखता हूँ। पुरुष मािि वाले को पुरुष सा हदखता हूँ। आजस्तक को आजस्तक सा और 'है' को 'है' सा और िहीांको 'िहीां' सा । ये जितिे लक्षण हैं; ये प्रपचां देश के र्वकल्प हैं। िो प्रपचां म रहता है उसकी िैसी धारणा होती है उसके मलए 'म'ैं आत्मा वैसेही प्रतीत होता हूँ । वस्तुतः वैसा 'म'ैं िहीांहूँ। यहद आत्मा होकर या 'में' होकर 'म'ैं को देखा तो 'म'ैं आत्मा में ककसी ककस्म का लक्षण िहीांहै। परन्तु अपिेआप को कुछ मािकर वह देखता है इसमलए कोई ि कोई लक्षण देखता है तब वह लक्षण बताता है। श्रुनतया ाँभी तो सिाति ब्रह्म आत्मा के लक्षण का र्ववेचि करती है।

"न चक्षुषा र्हृयते नार्प र्ाचा नान्यैदेर्ैस्त्तपसा कमणिा र्ा ।

ज्ञान प्रसादेन र्ंशुद्सित्त्त्प्त तस्त्तुतं पश्यतेतनष्कलंध्ंयायमानः "   ॥८॥

(मुण्डक उप० (तृतीय) खडां प्रथम मां सां ॥८॥)

"एष देर्ो र्ंश्र् कमा िमहात्मा सदा जानानांहृदये संतनर्ंष्टः ।

हृदा मनीषा मनसामभक्लृप्तो य एतद् र्ंदुरुमृतास्त्ते ेभर्न्द्न्द्त ।१७।

(श्वेताश्वतरोपनिषद् अध्या० ४ मां सां ॥१७॥)

ये सब लक्षण ही तो हैं। परन्तु श्रुनतया ाँिो हैंइ बेचाररयों को क्या कहा िाय ? क्योंकक श्रुनतया, ाँ वाणी रूप हैं और वाणी का वहाँमि िहीांहै। तो श्रुनतया ाँिो लक्षण बताती हैं वह भिवाि आत्मा को 'इद् ममत्थम्'् ऐसाही है कहिे में कोई श्रुनुत समथ िहीां है।

रामायण में चापाई आती है कक--

आहद अंत कोऊ जासु न पार्ा, मतत अनुमान तनर्म असर्ार्ा ।

अपिी बुद्दध के अिुसार । परन्तु िैसा है वैसा ही है। इस चौपाई में अलक्षण भी है और लक्षण भी "आहद अ ांत कोऊ िासु पावा" यह िैसा है और मनत अिुमाि निम अस िावा “यह ऐसा है । इद ममत्थम् ्कहह िाय ि सोई" इसमलए 'म ैं आत्मा अलक्षण हूाँ। कोई भी कहिे में समथ ि िहीांहै। और मुझ आत्मा के अनत- ररक्त िो कुछ भी है, सब र्वकल्प ही तो है और र्वकल्प सर्त्ाहीि होता है। तो सर्त्ाविा का लक्षण वह क्या बता सकता है ? श्रुनतया ांस्मृनतया ांसर्त्ाहीि हैं । इिका अजस्तत्व ही िहीांहै। मुझ सर्त्ाविा आत्मा का लक्षण कोई क्या बता सकता है ? इसमलए अलक्षणम् ्। और मुझ अलक्षण आत्मा का लक्षण बतािा अरे अल- क्षण पर कलकां है, लाांछि है। िी हााँ! और बतािे तक ही तो है वह । श्रुनतया,ाँ स्मृनतया,ाँ शास्त्र वेद लक्षण बतािे तक ही तो जिन्दा भी हैं और कहते– कहते िब पार ि ममला स्वयां ही अलक्षण हो िाते ेहैं। क्या कोई कह सकता है ? देखो - देह है। देह 'है'। यह िो "है" है यही सर्त्ा है। अग्रेंिी पढ़े मलखेलिो इसको "युनिव्हसलि िूथ" कहते ेहैं। व्यापक सत्य । यह अजस्तत्व इतिा र्विाल है। इतिा घि है। वाह । मिोयह िो है 'है' अजस्तत्व है, यही सर्त्ा है। 'हैं' हुआ अगधष्ठाि और सारा प्रपचां हुआ अध्यस्त और यह हम पहलेबता चुके हैं कक िो अध्यस्तुपदाथ िहोता है, वह अगधष्ठाि के अिु- रूप ही होता है, अगधष्ठाि स्व-स्वरूप ही होता है। अगधष्ठाि से अध्यस्त की सर्त्ा मभन्ि िहीांहोती । तो जिस तरह अगधष्ठाि के मलए ऐसा िहीांआता उसी तरह अध्यस्त प्रपचां के मलए भी 'ऐसा' िहीांआएिा 'मशव' हाांिी ! जिस प्रकार अगधष्ठाि, उसको कहते ेहैं जिसके बबिा िो ि रहे, वही उसका अगधष्ठाि है। लकडी के बबिा डण्डा िहीांरह सकता इसमलए डण्डेका अगधष्ठाि लकडी है। तो उसी तरह यह िो 'है' हे, अगधष्ठाि । यह अगधष्ठाि 'है' है और सारा चराचर देहाहदक प्रपचां यह सब प्रपचां है। तो 'है' मिो अगधष्ठाि 'है' अगधष्ठाि पर िैसे ेकक लकडी में डण्डा, उसी तरह अजस्तत्व में देह है। जिसके बबिा प्रपचां की मसद्दध ि होय वही प्रपच का अगध- ष्ठाि है। िैसे ेलकडी के बबिा डण्डेकी मसद्धी िहीांइसमलए डण्डेका अगधष्ठाि लकडी है । तो 'है' के बबिा कुछ है ही िहीां। प्रपचां है, देह है, मि है, बुद्दध है, गचर्त् है। एक नतिका सेलेकर ब्रम्हा पयांत । सत्य है, असत्य है, िड है, चेति है, व्यापक है, खडां है, पूण िहै, अपूण िहै िीव है, ब्रम्ह है। तो यह िो अजस्तत्व है, सर्त्ा पद है, उस अजस्तत्व पर िो कुछ मि वाणी का र्वषय है वह सब अध्यस्त है। और यह कजल्पत प्रपचां है। अच्छा तो । मिो। िैसे–लकडी के बबिा डण्डा िहीां, सोिे के बबिा आभूषण िहीां, उसी तरह अजस्तत्व के बबिा प्रपचां िहीां। अच्छा-अब यह समझिा है कक िैसे ेअजस्तत्व अलक्षण है, 'िैसा है', उसी तरह से प्रपचां भी 'िैसा है' ऐसा िहीांहै। अब प्रश्ि होता है- अगधष्ठाि 'है' के बबिा अिर 'ऐसा' मसद्ध हो िाय अब ऐसा िो दररर है इसका निस्सारण करिा है। 'है' िो अजस्तत्व है, 'सर्त्ा' उसके बबिा 'ऐसा' मसद्ध हो िाय, तब तो ऐसा है। अरे ! ऐसा है कहते ेहो कक िहीां? तो ऐसा को कौि मसद्ध करता है। 'है' मसद्ध करता है तो 'ऐसा' कहाां है ? अरे, 'है' के बबिा ऐसा भी तो िहीां। 'ऐसा' िो शब्द है उसको कौि मसद्ध करता है? 'है' तो कफर 'है' अगधष्ठाि पर ऐसा भी तो अध्यस्त है। तो 'हैं' के बबिा ऐसा को कौि मसद्ध करिा। इसमलए ऐसा-वैसा कुछ िहीांहै। 'है' ही है। तो भैय्या - यह सब अजस्तत्व ही भास रहा है प्रपचां िहीां भास रहा है। लकडी देख रहे हो, डण्डा िहीांदेख रहे हो। तो 'म ैं अजस्तत्व आत्मा ही हूां। अजस्तत्व, 'आत्मा' । यहााँ पर बुद्दध खिोिाती है। 'ऐसा' को बुद्दध ग्रहण करती है ि । िब 'ऐसा' भी निकल िया तो अजस्तत्व का अजस्तत्व ही तो रह िया शेष । शान्त पद है यह। यहाांपर 'अलक्षणत्व धम ि मसद्ध होता है। अब कहिो े- साहब, देह तो आकार प्रकार वाला है तो कफर वही युजक्त आएिी । हाथ है, पावां है, िाक है, िाम है । 'है' के बबिा आकार और प्रकार तुम्हारा मसद्ध हो तो

ायि । ककसी की मसद्दध िही,ां अजस्तत्व के निकाल लेि पर तो ि ो कुछ. है, 'है' ही है। अजस्तत्व ही है। त्रपचां है, डण्डा है। तो डण्डा कहिे से डण्डेका बोध होता है कक डण्डा कहििेसे लकडी का ? तो प्रपचां है, तो प्रपचां कहिे से अरे, प्रपचां का बोध होता है। कक अजस्तत्व का ज्ञाि होता है तो िब अजस्तत्व का ज्ञाि होता है तो जिस तरीके से 'म'ैं अजस्तत्व आत्मा अलक्षण हूां। तो इस प्रपचां का भी कोई लक्षण िहीांहै। अरे ! प्रपचां देश से लक्षण की मसद्दध होती है ि। ककसी के लक्षण की मसद्दध प्रपचां देश से होती है। डण्डा ऐसा होता है, सीधा होता है, चौडा होता है तो डण्डा देश से लक्षण कहा िाता है तो प्रपचां देश से भिवाि आत्मा का लक्षण बताया िाता है परन्तु आत्म देश में देखो तो लक्षण है ही िहीांतो कहाां से बर्त्ा- एिा । बतिो वालेसब दररर (मान्यताए)ां तो भिा िए इसमलए 'अलक्षणम् ्'म'ैं' आत्मा अलक्षण हूां और कफर बात यह है ि, कक यहद अिर मेरे मुहां, सीिां, पूछां होतेतो भिवाि में भी सीिां, पूछां की कल्पिा होती । िो िैसा अपिेआपको मािता है वही मान्यता भिवाि पर भी आरोर्पत करता है। यह अटल मसद्धाांत है। िो िैसा अपिे आपको मािता है, तो वही मान्यता, अलक्षण भिवाि आत्मा पर भी आरोर्पत करता है, कक भिवाि ऐसा' है। अिर में हहन्दू ूमािता हूां अपिे को तो भिवाि को भी मशखा, सूत्र वाला मािता हूां कक भिवाि भी चदां लिातेहैं वह भी िेऊ पहहिते ेहैं। अिर हमारा व्याह होता है तो उिका भी व्याह होता है मिर भिवाि आत्मा िैसा है वैसा ही है। वह अछूता है यह तो हमारी धारणा है। हमारा र्वकल्प है, हमारी कल्पिा है कक म ैंभिवाि को इस प्रकार से मािता हूां मिर वह िैसा है वैसा ही है ।

'ईसाई में र्ो ईसाई सा है, ईसाई र्ो तो मशहर ही नहीं
हहंदू ूमें हहंदू ूसा दीख पडे, र्ें हहंदू ूपने का असर ही नहीं
इस्लाम में र्ो इस्लाम सा है बर्ां दीन की कोई कफ ही नहीं।
हर जात में जात उसी की है, पर जात की उसको खबर ही नहीं।ं'

तो भिवाि आत्मा की वास्तर्वकता का पता कैसेलििैा ? भिवाि होकर देखो । भिवाि की हकीकत यािी सच्चाई का पता कैसे लििैा कक भिवाि कैसा है ? भिवाि होकर देखो ।

अिर ककसी की सच्चाई का पता लििाा है तो उससे अलि होकर पता िहीांलिा सकते िबकक वही ि हो िाओ । हाां, िो बडे बडेशनतया ांबदमाश होते ेहैं, अच्छे-अच्छे काबबल, तो िव्हिमेन्ट की तरफ से िो सी. आई. डी.
डडपाटिमेन्ट होता है तो चोर का पता लििो के मलए उसकी फोटो रखता है. अपिेसाथ में और साथ में उसके चोरी करिे िाता है, अपिेहाथ में हथकडी भी पहि लेता है और चोर के साथ िेल भी िाता है क्योकक र्विाि ही ऐसा है । भैय्या ! चोर पकडिे के मलए चोर बििा पडता है वैसेबाहर से पता िहीांलिा सकता क्योंकक िो चोर होिा वह चोर ही बताता है कक म ैंचोर हू, कानतल हूां इसी तरह भिवाि लक्षण वाला है कक, अलक्षण है। भिवाि कैसा है, इसका पता लििो के मलए भिवाि ही होिा पडता है तो कफर भिवाि होिा क्या है ?

अरे ! कुछ ि होिा यही भिवाि होिा है, कुछ भी ि बििा यही भिवाि होिा है अपिेमे को कुछ मािकर भिवाि कैसा है। इसका पता िहीांलि सकता। अपिे 'म'ैं को कुछ मािकर तुमिे अपिेआपको कुछ ि मािा 'मे' का म ैंही िा तो 'में' को म'ैं हो ििा यहाांवास्तव में भिवाि होिा है और 'म'ैं को कुछ मि लिैा यही

 िबा है। इसको िबा कहतेहैं तो दरअसल में. 'आत्मा' लक्षण- वाि हूं कक अलक्षण हूं इसको पता

िलिा है।

अलक्षण का दशि करिा है तो कफर िैसे ेहो वैसेहो रहो । बिो मत । देखो ! मुसलमािों के यहाांमशठटाचार के रूप में कोई बडेआदमी के पास िाता है तो कहता है हुिूर में तो एक िाचीि हूं यह उिका मशठटाचार है। यह खाकसार िाचीि है।

ककतिा सुन्दर मौके की चीि है म ैंतो िाचीज़ हूँ। मिोमें कुछ िहीांहूँ, । उिर में कुछ कहूँ कक में फला ाँहूँ, यािो अमुक हूँ इस मलए में कोई चीि िहीांहूँ। िो हूँ, सोई हूँ ककतिा सुदांर भाव भरा हुआ है इस शब्द में । हुिूर में तो िाचीि हूँ तो भैय्या िाचीि तो भिवाि के मसवाय दूसूरा िही ां। अरे ! भिवाि भी तो िाचीि है कहो कक ऐसा है तो ऐसा िही ांहै तो लक्षण तो चीज़ में होती है, िाचीि िो होता है अलक्षण होता है–िैसे ेअपिे आपको मािा कक म ैंदेह हूँ तो देह का लक्षण तुमको बतािा पडेगा यहद िीव कहिोतो िीव का भी लक्षण है। िीव अल्पज्ञ है, िीव पुण्यात्मा है, पापी है, िीव छोटा होता है और अिेक होता है। पररजच्छन्ि होता है। ये सब िीव के लक्षण हैं। अपिे 'म'ैं को िीव मािोिे तो िीव का भी लक्षण है और ब्रम्ह मािो तो इसका भी लक्षण है-व्यापक है, अखडां है, सत् ्है, गचत है, आिन्द है ये सब ब्रम्ह के लक्षण हैं। यह भी एक चीि है और चीि ि हो तो लक्षण ि हो । अरे, भाई ब्रम्ह का लक्षण बहते ेहैं ि, व्यापक है, पूण िहै, सत् ्है, गचत् ्है आिन्द है, तो 'ब्रम्ह' हुआ एक 'चीि' और 'चीि' हिोसे ब्रम्ह का भी लक्षण है। िैसे ेकोई कहता है म ैं'पुरुष हूँ तो पुरुष का भी लक्षण है। कोइ िकहता है में स्त्री हूँ तो स्त्री का भी लक्षण है, ििर यह है कक अपिेको कोई चीि मािोिेतो उस चीज़ का कोई ि कोई लक्षण िरुर हिोगा और

जिस वक्त मै 'िाचीज़' हूँ तो िाचीि 'अलक्षण' का पररयायवाची शब्द है। म ैंका म ैंही रह िया । इसमलए श्रुनत कहती है अलक्षणम् ्। कोई लक्षण िहीांहै। िब 'म'ैं आत्मा अलक्षण हूँ, तो मुझ आत्मा पर यह िो चराचर प्रपचां है यह भी अलक्षण है, इसका भी कोई लक्षण िहीांहै। प्रपचां िहीांहै इसमलए प्रपचां अलक्षण है और 'में, हूँ' इसमलए अलक्षण हूँ । प्रपचां िहीांहै िब हो तब ि लक्षण है। िब प्रपचां है ही िही ांतो लक्षण क्या हिोगा । इसमलए प्रपचां अलक्षण है । तब मुझ आत्मा का लक्षण किौ बतावे े? अरे ! िो लक्षण बतािे वाला था वह तो चला िया । अब मुझ आत्मा का लक्षण किौ कहे ।

लक्षण से अलक्षण है कक अलक्षण से लक्षण है ? लक्षण से अलक्षण है मािो लक्षण-अलक्षण को मसद्ध करता है कक अलक्षण- लक्षण को मसद्ध करता है ? कफर एक बार सुिो-प्रपचां भाव रूप है। कक अभाव रूप ? अभाव रूप । तो अभाव रूप हिोके िाते ेप्रपचां लक्षणवाि है कक अलक्षण है। क्योकक िब है ही िही ांतो उसका लक्षण क्या

हिोगा ? इसमलए प्रपचां अलक्षण है और िब प्रपचां है ही िही तो मुझ आत्मा का लक्षण किौ बताएगा कक भिवाि आत्मा ऐसा है । देहाहदक प्रपचां-ससार प्रपच, िाित प्रपचां ये अभावरूप हैं। कक भावरूप ? अभाव रूप । अभावरूप हिोके कारण प्रपचां अलक्षण है क्योकक िब होय तब ि, उसका लक्षण बिे । तो िब है ही िहीांतो प्रपचां लक्षण क्या हिोगा इसमलए प्रपच-अल- क्षण है और 'मै' इसमलए अलक्षण हूँ कक बतािे वाला कोई िहीांअलक्षणम् ्। में भिवाि आत्मा अलक्षण हूँ। ये सब वलक्षण चीिहैं भैया !

"नान्द्तः प्रज्ञं ़ ़ ़ ं................................।

प्रपचां में िो अलक्षणत्व धम िहै, यह मुझ अगधष्ठिा का है कक प्रपचां का ? अगधष्ठिा का । क्योंकक प्रपचां हदया । यिो अभाव रूप है ि । बन्ध्या पुत्र वत् ्शशश्रिृांवत् ्प्रपचां को िो को अलक्षणत्व धम ि हदया ककसिे? मैं कहा िया है कक प्रपचां अलक्षण है तो ेअलक्षण है तो अलक्षण भी तो िही ांकह सकते ेक्योंकक िो है ही िही ांउसको अलक्षण कैसे ेकहा िा सकता है। अभाव रूप प्रपचां को अलक्षणत्व धम िममला कहा ाँसे ? मुझ आत्मा से। क्योंकक मुझ आत्मा अगधष्ठिा पर ही तो प्रपचां अध्यस्त है अलक्षणत्व धम ितो मुझ आत्मा का ही है।

रुरुर्ार हदनांकं १५ नर्म्बर सन् ्१९७३ समय २ बजे से ४ बजे ।

नान्द्तः प्रज्ञं ं...............................सर्ज्ञेयः ।

उस समय अलक्षण का र्ववेचि हुआ था। अब इस समय अगचन्त्य का है 'म'ैं भिवि आत्मा अगचन्त्य हूँ । भैया ! अगचन्त्य कहते ेहैं। जिसका गचन्ति ि ककया िा सके । अब प्रश्ि होता है आत्म गचति ककसे ेकहते ेहैं ? जिसका गचतांि ि होय उसको अगच- स्व कहते ेहैं। तो आत्म गचतांि भिवत् ्गचन्ति क्यों कहा िाता है और श्रुनत कह रही है- अगचत्य है। चीज़ यह है कक एक गचतांि तो हाता है गचर्त् से। तो यहद गचर्त्ा करके आत्मा का गचन्ति मिाा िय तो कफर वह अगचन्त्य िहीांक्योंकक गचर्त् से िो गचन्ति होता है वह गचर्त् का ही होता है। बबिा गचर्त् से

िि

गचन्ति होता है वह 'गचत' का गचन्ति है। गचर्त् का िो गचन्ति होता है वह र्वक- ल्प का गचन्ति होता है। िो वैकजल्पक पदाथ िहोता है, जिसके आकार-प्रकार का र्वकल्प ककया िाता है। चाहे िो भी र्वी हो। स्थूल हो अथवा सूक्ष्म हो । िो वैकैजल्पक पदाथ िहोता है उसका गचन्ति गचर्त् से होता है। और उसका सम्बन्ध गचर्त् के निरोध से होता है। िब तक र्वर्त् का निरोध है तो गचर्त् के निरोध-काल तक ही उसका गचति है और गचर्त् िब चचांल हुआ तो वह गचन्ति भी िया। वह गचन्ति िहीांरहता 'एक' दूसूरी चीज़ यह है कक यावत्काल गचर्त् है। गचर्त् िििृत् अवस्था म भी रहता है और स्वप्ि में भी रहता है। िब तक वह गचर्त् है तब तक बह गचर्त्- िम्य है और गचर्त् का ही बिाया हुआ वह गचन्त्य है। वह गचत्य गचर्त् करके ही कल्पिा ककया हुआ है। गचर्त् का हा वह दूसिू स्वरूप है। गचर्त् द्वारा ि कल्पिा ककया हुआ गचन्त्य पदाथ िहै ।
तो आगचन्त्य कहतेहैं आत्मा को और गचन्त्य िाम प्रपचां का है। प्रपचां गचन्त्य है और आत्मा अगचन्त्य है। िी हा ाँ! तो गचर्त् द्वारा िो काल्पनिक पदाथ िहै, तो उसका गचन्ति गचर्त् के निरोध से सबांगांधत है। गचर्त् को रोक कर ही उस पदाथ िका गचन्ति ककया िा सकता है अन्यथा िहीां। चाहे कोई देवी हो चाहे देवता हो, चाहे कोई िर हो चाहे िारी हो । िरि यह है कक गचर्त् द्वारा जिसका गचन्ति ककया िाता है वह काल्पनिक है, िश्वर है और वह मिाा हुआ है। इसमलए बबिा गचर्त् के उसका गचन्ति िहीं हो सकता। यहााँपर अगचन्त्य का गचतांकिरि है। 'म'ैं आत्मा िो हूँ, अगचन्त्या हूँ । िब आत्मा अगचन्त्य है, तो अगचन्त्य के गचतांि का क्या स्वरूप है ? िैसे ेकोई कल्पिा करता है। जिसका िो इठट होता है उस इठट के िाम-रूप की कल्पिा करके, िो जिसका इठट होता है िैसे– भिवि र्वठणु ुहुए, मशव हुए, भिवि राम हुए, भिवि कृठण हुए शजक्त हुई। ऐसा िाम है रूप है और उस

काल्पनिक इठट की हृदय में धारणा करके गचर्त् में उसका गचन्ति करता है। उस आकार-प्रकार वाले इठट का गचर्त् ही आधार है। क्योंकक वह गचर्त् का ही मिाा हुआ है। तो िब तक गचर्त् एकाग्र ि हिा तब तक हृदय में उस आकार-प्रकार वाले इठट का गचतां हिो िहींसकर्त्ा और यही कारण है कक कोई िब ध्यिा करिे के मलए बैिता है, अपिे इठट का और गचर्त् िब चचांल हो िाता है तो हृदय में िबदिस्त ग्लानि होती है तब सोचता है कक ककसी सतां महात्मा के पास िाकर गचर्त् की जस्थरता का साधि पूछें िब उसका आधार ही ि रहिा तो वह इठट कहा ाँरहिा? भाई : हृदय में तो बडा दुःख होता है, ऐसेध्यिा में। क्योंकक अगचन्त्य का तो कभी र्वचार ककया िहींऔर गचन्त्य अगचन्त्य िहीं। यिाी मतलब यह है कक अगचन्त्य का गचन्ति उससेहोता िहीं। अगचन्ति का गचन्ति होता िही ां और गचन्त्य के गचति में गचर्त् एकाग्र िहींहोता इस तरह दिोंों तरह मुसीबत है ि । तात्पय ियह है कक अगचत्य का गचन्ति िहीं, अगचन्त्य गचन्ति उससेहोता िहींऔर गचन्त्य के गचन्ति में उसका गचर्त् एकाग्र िहीं, इसीमलए होती है, ग्लानि । अगचन्त्य का गचति उससिेही ांहोता जिसकी काल्पनिक इठट में निठिा होती है, जिसकी उसमें श्रद्धा है वह अगचन्त्य सेबहुत दूरू है । िाम रूपात्मक, आकार प्रकार वाला िो गचन्त्य है उसका गचति बबिा गचर्त् एकाग्र हुए होता िहींतो साधक को इतिी ग्लानि होती है कक उसका साक्षी स्वरूप है ? िैसेकोई कल्पिा करता है। जिसका िो इठट होता है उस इठट के िाम-रूप की कल्पिा करके, िो जिसका इठट होता है िैसे-ेभिवा र्वठणु ु हुए, मशव हुए, भिवा राम हुए, भिवा कृठण हुए शजक्त हुई। ऐसा िाम है रूप है और उस काल्पनिक इठट की हृदय में धारणा करके गचर्त् में उसका गचन्ति करता है। उस आकार-प्रकार वाले इठट का गचर्त् ही आधार है। क्योंकक वह गचर्त् का ही मिाा हुआ है। तो िब तक गचर्त् एकाग्र ि हिा तब तक हृदय में उस आकार-प्रकार वाले े इठट का गचतां हिो िहींसकर्त्ा और यही कारण है कक कोई िब ध्यिा करिे के मलए बैिता है, अपिेइठट का और गचर्त् िब चचांल हो िाता है तो हृदय में िबदिस्त ग्लानि होती है तब सोचता है कक ककसी सतां महात्मा के पास िाकिर गचर्त् की जस्थरता का साधि पूछें िब उसका आधार ही ि रहिा तो वह इठट कहा ाँरहिा? भाई : हृदय में तो बडा दुःख होता है, ऐसेध्यिा में। क्योंकक अगचन्त्य का तो कभी र्वचार ककया िहींऔर गचन्त्य अगचन्त्य िहीं। यिाी मतलब यह है कक अगचन्त्य का गचन्ति उससेहोता िहीं। अगचन्ति का गचन्ति होता िहींऔर गचन्त्य के गचति में गचर्त् एकाग्र िही ांहोता इस तरह दिोंों तरह मुसीबत है ि । तात्पय ियह है कक अगचत्य का गचन्ति िहीं, अगचन्त्य गचन्ति उससेहोता िहींऔर गचन्त्य के गचन्ति में उसका गचर्त् एकाग्र िहीं, इसीमलए होती है, ग्लानि । अगचन्त्य का गचति उससे िहींहोता जिसकी काल्पनिक इठट में निठिा होती है, जिसकी उसमें श्रद्धा है वह अगचन्त्य से बहुत दूरू है । िाम रूपात्मक, आकार प्रकार वाला िो गचन्त्य है उसका गचति बबिा गचर्त् एकाग्र हुए होता िही ांतो साधक को इतिी ग्लानि होती है कक उसका साक्षी वह स्वय ांहै और प्रायः ज्यादा तादाद में गचन्त्य के ही गचन्ति करिे वाले पाए िाते ेहैं। अगचन्त्य गचतां करिेवाले तो बबरले ही होते ेहैं। क्योकक अगचन्त्य का गचति बबिा स्वरूपात्मा के बोध हुए नितातां असभांव है। अगचति का गचति तो वही कर सकता है जिसिेअगचन्त्य दशि ककया है और गचन्त्य का गचन्ति तो सिु करके ही होता है, देख करके िहींहोता । सिुते हैं कक भिवा राम का स्वरूप ऐसा है, शजक्त ऐसी है । तो सिुा है, देखा तो िहींहै। ि गचत्र बिािे वाला ही उसको देखा है मसफि कल्पिा है । तुम िो गचत्र देखते हो ककसी भी देवता का, वह गचत्रकार की कल्पिा ही तो है । तात्पय िहै कक, सिुकर के वैसेही कल्पिा कर ली िाती है और कफर गचर्त् द्वारा उसका गचति करते ेहैं परन्तु अगचन्त्य का तो गचतां होता है दशि

करके । अब यहा ॅपर समझिा है कक अगचन्त्य का गचतांि। अगचन्त्य-गचति का गचर्त् के निरोध और अनिरोध से कोई सबधां िहीांहै क्योंकक अगचन्त्य-भिविा का गचति है, वह गचर्त् की एकाग्रता और उसके निरोध से स्वरूप भिविा आत्मा का कोई सबांधां िहीांहै । अब आत्म गचन्ति का स्वरूप बताएांि और उसमें बबिार्लेंि।

गचर्त् के निरोध में िो गचतांि होता है उसमें देशकाल की सीमा है। कहा ॅपर गचतांि करें ? गचन्ति के मलए एकातां की रूिरत पडती है। एकान्त कमरा हो । कोई हल्ला-िुल्ला ि हो सुि-सिा हो। ककस वक्त करिा चाहहए तो गचर्त् का निरोध करके िो गचति ककया िाता है उसके मलए देशकाल की सीमा िहीांरहती, भिविा आत्मा का गचति हर वक्त होता है, क्योंकक अगचन्त्य के गचर्त् के मलए गचर्त् एकाग्र हो तब क्या, गचर्त्चांिल हो तब क्या ? गचर्त् की एकाग्रता चांिलता से उसका सबांधां िहीांहै। श्रीकृठण भिविा तो यहाांतक अिुि से कहतेहैं-

"तस्मात्सरे्षुकालेषु मामनुस्त्मर युद्‌ च ।
मयापित मनो बुद्धिमािमेरै्ष्य स्त्यसंशयम् ्॥

।। िीता अ. (८) ।। 11

भिविा ि ककतिी आिादी दे रखी है अिुि को । अिुि: सवकाल में मेरा स्मरण भी कर और युद्ध भी कर । युद्ध ऐसा कहिि काय िहै, िबकक युद्ध करिे वाले ेपर इतिी जिम्मेदारी होती है, अपिी रक्षा, रथ की रक्षा सारथी की रक्षा, घोडों की रक्षा और शत्रु ुको मारिा । यह सब काय िकरते ेहुए भिविा का गचतांि। भिविा िे यह तो िही ांकहा कक हदि भर तो युद्ध हो रहा है । और िब युद्ध बदां हो तब एक दो घटां शाम को मेरा स्मरण कर । (आि कल युद्ध का कोई समय िहीांहै परन्तु पुरािे िमािे में शाम होिे पर दोिों तरफ से शखां बि िाते ेथे ेऔर लडाई बदां हो िाती थी । सब सैनिक अपिे-अपिेडेरकों में चलेिाते ेथे। खािा पीिा, आराम करिा और सबेरे युद्ध में डट िाते ेथे) ऐसा िही ांअहा। "सवेषु, कालेषु" अथात् ्सवकाल में- िाग्रत, स्वप्ि सुषुजप्त में, मूच्छा िऔर समागध में, तथा सुख-दु:ख में । मेरा स्मरण भी कर और युद्ध भी कर। कैसा गचतांि है भाई ! तो भैया : वह कौि सा स्मरण है ? 'माम्'्-कोडथ ि: ? आत्मिाम् ्! माम्–यह कम िकारक है। सवकाल में मुझ आत्मा का स्मरण भी कर और थुद्ध भी कर । क्योंकक आत्मा ही-

'अहमात्मा गुडाकेश सर्भूताशयन्द्स्त्थत :
अहमाहदश्च मध्यंच भूतानामन्द्त एर् च।२०।

(िीता-अ. १० श्लोक २०)

अिुि सारे चराचर में जस्थत िो आत्मा है, वह म ैंहूाँ। जिसका र्वेचि हो रहा है, चार हदि से । 'माम्'् शब्द कमकारक है, सव– काल में मुझ आत्मा का स्मरण भी कर और युद्ध भी कर । तो भैयैया' सवकाल में उसी का गचति हो सकता है िो सवकाल में हो । और कभी रहे और कभी ि रहे, तो सवकाल में उसका गचति िही ां

होता और काम-कािा करते ेहुए भी िहीांहोता क्योंकक ऊधोः मि ि भए, दस बीस ! और एक ही काम करिा एक वक्त में चाहे युद्ध ही कर चाहे स्मरण कर अिर सवकिाल में भिवाि का गचति होता है, उस गचन्ति का सबांधां गचर्त् से होता तो सवकिाल में मेरा स्मरण कर और युद्ध कर, ऐसा िहीांकहते े। इससे प्रत्यक्ष है कक भिवत गचन्ति का सम्बन्ध मि से िहीांहै। इसमलए िो पदाथ िसवर्– काल में रहता है उसका सवकिाल में गचति हो सकता है । िाग्रत स्वप्ि, सुषुजप्त, मूच्छा िऔर समागध आहद अवस्थाओांमें । अच्छा। कफर देखो-यहद समागध अवस्था को आत्म गचन्ति की अवस्था मािी िाय और समागध ही आत्म गचन्ति होता तो कफर असमागध में आत्म गचतांि िहीं होता ऐसा मािा िाय तो सवकिालीि स्मरणि हुआ और दूसूरी बात तो भिवाि िे इसमें कहा है-समागध में युद्ध ।। समागध में तो ि युद्ध होय ि देखिा होय, ि सुििा होय जिसको कक लोि समागध कहते ेहै क्योंकक मि के निरोध हो िािेपर इजन्रयाँ भी निरुद्ध हो िाती हैं। तो युद्ध कौि करिा । कफर मि का व्यापार वर हुआ इांहरयों का िो स्वामी है वह मि है और मि ही इजन्रयों का प्रेरक है। मि के ही कहिेसुििे में इजन्रयाांचलती हैं तो िब मि का व्यापार शून्य हो िाता है और इसी को समागध कहते ेहैं । िो समागध निष्ठ पुरुष है, िब ऐसी अवस्था में बोलिा-चालिा सि िब एकाग्र हो िया, मि का निरोध हो िया अथात् िब मि का व्यापार शून्य हिो पर इजन्रयों का भी व्यापार ही बदां हो िाता है तो युद्ध कैसे ेहिो।

दुकाि में बैठे हो सौदा तौल रहे हो, आत्मगचतांि हो रहा है, भििि कर रहे हो, आत्मगचतांि हो रहा है।

क्योंकक हमको सवकिाल की मयादिा रखिी है। सवकिाल में मुझ आत्मा का स्मरण भी कर और युद्ध भी कर । तो कफर ककसका गचति? वया लक्षण है ? अरे ! कोई लक्षण िही ांहै क्योंकक अलक्षणम् ्। िात्र में आत्मा अलक्षण हूां ता मुझ आत्मा का गचन्ति भी तो अलक्षण है, भैय्या । और लक्षण वाला गचन्ति हर काल में हो िहीांसकता । भिवाि कृष्ण िैसे ेटेढ़े हैं उसी प्रकार उिका उपदेश भी टेढ़ा है भैय्या । इिको ििािा, भिवाि योिेश्वर के इस रहस्य को समझिा साधारण िहीांहै ।

देखो कौि सा ऐसा टाईम है, कौि सी ऐसी अवस्था है िब में आत्मा ि रहूां । अरे ! सबेरे सोकर उठिऔर करीबि रात दस बिे ेसोते हैं तो पाचां और दस के बीच कोई ऐसा टाईम है िब में आत्मा ि रहूँ । पाचां और दस के बीच िो टाईम है उसको िाग्रत अवस्था कहते ेहैं । तो िाग्रत अवस्था के प्रपचां को कौि िाििेा, कौि अिु- । भव करिा। तो म ैंरहता हूँ। 'म'ैं आत्मा । सवकिाल में िो रहिेवाला िो आत्मा है उसकी यह अिुभूनत कराई िा रही है। गचन्ति श्री बाद में बताया िायिा । तो. िाग्रत में 'में' रहता हूँ और िो 'में' आत्मा िाग्रत अवस्था में रहता हूँ, िाग्रत अवस्था तो बदल िाती है कफर में वही का वही रहता हूँ । यहद माप्त काल में म ैंिहीांरहूांिा तो स्वप्ि के प्रपचां को कौि िाििेा । श्री में' िाग्रत में और स्वप्ि में रहता हूँ वही म ैंआरमा िाडी निरा भुषुजप्त में रहता हूँ। जिस अवस्था में िाग्रत और स्वप्ि दोिों अवस्थाओ ांका अभाव हो उसको सुषुजप्त कहतेहैं। म ैंकहा ाँपडा हूां इसका होश िही ांरहता । िो म ैंिाग्रत में वही में स्वप्ि में, िो िाग्रत और स्वप्ि में वही िाढ़ी निरा में रहता हूां । क्योंकक सबेरे'म'ैं कहता हूां कक ऐसा सोया कक कुछ पता ही िहीांरहा। अिर में सो िाता तो बताता कौि ? तो म ैंसोया िही।ां िाग्रत अवस्था सुषुजप्त अवस्था मि की है। बुद्गध की है। अिर म ैंसो िाता तो पता का पता ककसको रहता । दूसूरी चीि यह है कक कहतेहैं कक बडा आिदां आया म ैंआत्मा वहाँिहीांरहता तो बडा आिन्द आया, इस आिन्द

का किौ अिुभव करता । तो इसमलए िाग्रत में, स्वप्ि में सुषुजप्त में ि रहूाँ । स्वप्ि में ि रहूाँ तो स्वप्ि प्रपचां को किौ िाििोा। तो तीिीं अवस्थाओां में म ैंआत्मा एक रस रहता हूाँ ।

अब देखो, भूतकाल, भर्वठयत् ्काल और वतामिा काल । अिा के पहले ेभी 'म'ैं था और अिौ ेभी रहूांगा और कभी भी म ैंहू। अिा के पहले ेभी म ैंआत्मा था, इसका क्या प्रमाण है ? तब इसका हो क्या प्रमाण है कक अिा के पहले ेम ैंिहीांथा ? अिर 'था' का प्रमाण मााांते ेहो तो िहीां, था का प्रमाण दो। दूसूरी चीि यह है कक िैसे ेककसी

ि केहा- अिा के पहले े'म'ैं िहीांथा। म ैंिहीांथा। 'म'ैं के अभाव को िाििोवाला, म ैंिहीां था । 'िहीांथा' को 'िहीांथा'

ि िाििा, कक 'िही ांथा' को 'था' उिििसैा ? िो थर उसे िाििा। तो म ैंिही ांथा इसका अिुभव करिे वाला तो'म'ैं

ही हूाँ। म ैंके भाव अभाव का ज्ञाता तो म ैं'ही' हूां। जिज्ञासुओ ? भिवाि को िाििोके मलए, भिवाि को देखिे ेके मलए भिवाि का अिुभव करिे के मलए तुमको ककसी प्रमाण की िरूरत िहीां। डकों की चोट पर, क्यों कक म ैं आत्मा वाणी का र्वषय ही िहीांऔर **प्रमाणमन्द्रनरस्न्यानमेक्षआन ॅंी । इत्याहद** वेद शास्त्र, श्रुनतयााँ, स्मृनतयााँ वाणी रूप है तो मुझ सत्य आत्मा का प्रमाता ये तो िही ांहो सकते ।

िो पदाथ िसत्य सिाति होता है उसकी ककसी अन्य प्रमाण से मसद्ध िहीां होती प्रमाता-प्रमाण और प्रयेय तीि चीज़ है। प्रमाता कहते ेहैं- प्रमाण देिवाले को। िैसे ेककसी ि पूछा- स्वामी िी के हाथ में क्या है ? तो स्वामी िी के हाथ में िो है वह डण्डा है। तुम हुए प्रमाता । तो सत्य भिवाि आत्मा के मलए प्रमाण देिवाला िव प्रमाण देिे के मलए आएिा तो सत्य से िो मभन्ि होिा वह सत्य होिा कक असत्य ? सत्य से मभन्ि असत्य, चेति से मभन्ि िड, आिन्द सेमभन्ि दुुःख, प्रकाश से मभन्ि अधांकार । हाांिाि प्रकाश का प्रमाता तो प्रकाश ही होिा । प्रकाश को प्रमाखणत करिे के मलए ककसी और को िमिोतो प्रकाश से मभन्ि होता है अधांकार । अधांकार प्रकाश का प्रमाता तो हो िहीांसकता । सत्य का प्रमाता सत्य ही होता है। तो िरि यह है कक अिा से पहले ेभी म ैंथा। तो इसका प्रमाता में ही हूां।

कम िऔर उपासिा कफलासकी िीव िित की है। सत्य सबका एक हैं। अिर कहो हहन्दुओ ांका सत्य अलि है, मुसलमािों का सत्य अलि है तो ऐसा िहीांहै। िो सत्य है वह सारे र्वश्व का एक है और सत्य परमात्मा का र्ववेचि हो रहा है। हहन्दू ूकफलासफी तो िपुिन्मि को मािती है, मिर इस्लाम धम ििपुिन्मि को िहीांमािता । यह उिका स्वय ांका मसद्धाांत है। और सत्य की अिुभूनत उन्हें भी करिी है। अिर सामिे यह दलील रखते ेहो तो िपुिन्मि ककसका होता ? तो यहाांपर मज़हब आ िया । तो यह कम िकफला. सकी पर रखो । इसमलए इसको प्रमाखणत करिे के मलए अन्य प्रमाण की िरूरत िहीां। िो यह कहते ेहैं कक वेदशास्त्र भी तो अपिे अपिेहदमाि का फुिला निकालते ेहैं। और में िैसा हूां वैसा ही हूाँ। इस- मलए भिवाि सत्य परमात्मा को लखिे ेके मलए सत्य ही उसका प्रमाण है। म ैंका प्रमाता में ही हूां। प्रकाश को देखिे ेके मलए प्रकाश ही उपकरण है। तो िरज़ यह है कक प्रकाश को प्रमाखणत करिे के मलए दूसूरा िहीांहै। प्रकाश को प्रकाश ही देखता है। उसी तरह में आत्मा का प्रमाता में ही हूां। अहम् ्करके अहम् ्का ज्ञाि होता है। में िाि वक्त कहा करता हूां- म ैंब्रम्ह हूां इस ज्ञाि को प्राप्त करते ेके

मलए बुद्गधमिा और र्वद्विा हिोकी िरूरत है क्योंकक िब तुम्हारी प्रखर बुद्गध हिोी I तभी वेदान्त के ग्रथांों को लिा सकते हो तो पहले ेव्याकरण पढ़ो कफर उसके बाद न्याय शास्त्र पढ़ो I इसके बाद वेदातां पढ़ो I कफर वेदान्त के ग्रथां तुम्हारी समझ में आ सकते ेहैं आि कल भी िो कृनतयाांर्वद्विों िे िो सस्ांकृत में थी, उसका हहन्दी करहदया है- र्वचार सिार है, वृरूर्त् प्रभाकर है I तो वेदान्त के ग्रथांों क लिो के मलए तो बुद्गधमिा, र्वद्विा हिोकी िरूरत है। प्रब बुद्गध िे हिोी तब तक वेदान्त के ग्रथांों को लिा िहीांसकते I वेदा ांके ग्रथांों को पढ़िे ेसे यहाांतक वह आता है र्वद्विा, कक 'में ससाां िीव िहीां, शरीर सेमभन्ि्'म'ें व्यापक ब्रम्ह हूां।' इसी का पिि पिपा होता है। हम सब पापड बेले हैं I

पिांाब में एक फरीद कोट स्थिा है। फरीद कोट में एक फक रहते ेथे ेउिका िाम था बाबा फरीद I एक हदि उिके साथ मम के मलए एक शायर ममया ांशेख शादी आए थे।

ममयाँशेखे शादी उिके बैक खिो ेमें िहा ांवे एक पलिां पर बै हुए थे िये, और उिके सामिेफश िपर हिा,ाँ पिवै ेके मलये उन्हें आसि हदया िया था बै िये, इसके बाद परस्पर चचािहो लिी अचाक, ममयाांशेखे शादी की ििर उिके पलिां के पायों (खूरों) पर िई तो उिके देखा कक उि पायों के िीचे ेचार बडी २ मोटी २ पुस्तकें दढ़ी रखीांहुई हैं। यह देख आश्चयचिककत हो पििबाबा फरीद से पूछा, कक फरीद साहब ? पलिां के इि पायों के िचे आपिे ये क्या दबा रखा है ? तब बाबा फरीद िे उन्हें उर्त्र हदया कक भाई ! ये हमारे (मुसलमािों के) चारों मुख्य ग्रन्थ हैं (तौरेत, ज़बूर, इांलिि और कुरिा) ये हमें रात-रात भर सिो िहीांदेते ेबडे शोर मचाते ेरहते ेहैंकक ये करो, ये िे करो ऐसा है, वैसा है-आहद इिके र्वगध निषेध के हो हल्ला के मारे हम चिै से सो भी िहीांपाते थे े इसमलये इन्हें चारपाई के पायों के िीचे दबा रखा है कक चुपचाप शान्त-दये पडेरहो तुन्हें शोर मचिो की िरु- रत हिी।ां कुछ मत बोलो। िब तक मुसदि की मेहर िही हुई थी, तब तक ककताबों िे मुझे कुछ िहीांबताया और अब, बिकक मुशदि को मेहर हो चुकी है तब इिकी िरुरत िहीं है। तात्पय ियह है कक वेदे शास्त्र वाणी रूप ही हैंऔर भिवाि आत्मा वाणी से परे है, तब इिकी िब वहाांतक पहुाँच हो िहीांहै तब ऐसी जस्थर्त् में इिका -शोर शराबा वहाांपहुाँचे ेहुए "मुकािमिों" (िो मुकाम पर पहुाँच िये हैं) के मलये व्यथ िही तो है। वे उिका कब पिसुे वाले हैं। हा ाँ वेद िो हैं व्यथ पििहीांहै। मिर पििकी बुद्गध में तकि है वे इसका पिप-पिपा करते ेहैं और आखखरी इि शास्त्रों के पडिेका यही ररिल्ट होता है। कक म ैंससांारी, िीव िहीांहूाँ, व्यापक ब्रह्म हूाँ I और यहीं तक वेद शास्त्रों की मयादिा है और िहा ाँपर 'में I िब म ैंआत्मा को देखिे ेऔर अिुभव करिे का मौका आता है तो यह सब ककिारा काट िाते े है। भिवाि को पिििोके मलए र्वद्वर्त्ा और मूखिता से इसका कोई सबांधां िहीांहै। अरे यार ! 'में 'हूाँ' इसको किौ हिीांपिताि ? िो बडेसेबडा र्वद्विा है वह भी 'म'ें हूाँ कहता है और िो निरक्षर भट्टाचाय िहै वह भी म ैंहूाँ कहता है। इसमलए उसको पििो के मलए र्वद्विा हिोा कोई आवश्यक िहीांहै। पििाा तो इतिा ही है। चाहे जिदांगी भर पढ़ो I खोदिे ेको पहाड और निकलिेको वुहहया I इसको पििो के मलए अन्य कोई सािधि िहीांहै। 'में को पििो के मलए में ही सािधि हूाँ I 'म'ें ही 'म'ें का प्रमाता हूाँ। जिसका प्रमाण ससांार में कोई िे दे सके तो 'म'ें भिवाि के मसवाय किौ हिोा I भिवाि सबका प्रमाता है भिवाि सत्य सिाति है और अिन्त है िन्मों से इसी परम तत्त्व

को ि्िो के मलये िो कुछ भी लिो ककए हैं ओि भी िो कुछ कर रहे हैं ओि िो कुछ करें ेहर एक की मजांलि मकसूद यही है। जिसका कक अिुभव कराया िा रहा है। िेल

तो भैया ! िरि यह है कक अिन्तकाल से एक ही मजांलि की तरफ सवका बहाव है यिी सभी िा रहे हैं।

कोई आि पहुाँचा, कोई कल पहुाँचा । मिर सबकी िो आखखरी मजांलि है वह यही है कक में हूाँ आत्मा । इसे ेही देखिा है, इसका ही अिुभव करिा है और इसका ही गचन्ति करिा है तो भिवाि के इस मत्रां की व्याख्या की िा रही है अगचन्त्य पर ।

'तस्मात् ् सर्ेषुकालेषुमामनुस्मर युद् च ।'

सवकिाल में मुझ आत्मा का स्मरण भी कर और युद्ध भी कर । सवकिाल में मुझ आत्मा के मसवाय दूसूरा िहीं।ां अब यहाांपर एक प्रश्ि होता है िब अस्पताल में आपरेशि होता है और अस्पताल से डाक्टर लिो िब उसको छुटकारा दे देते ेहैं तो कहते ेहैं आपका आपरेशि बडा सीररयस था तो कहता है भैय्या ! हम तो मौत के मुहां से निकले हैं। तिी घटे तक में बेहोश रहा । क्यों िी; म ैंबेहोश हो िाता तो तिी घटें की बेहोशी का अिुभव कौि करता ? में बेहोश िहीांहुआ । म ैंतो होश को भी िािता हूाँ और बेहोश को भी िािता हूाँ । उस वक्त बेहोशी को इसमलए िहीांबता सकता क्योंकक उस वक्त बेहोशी को बतािे का उपकरण िहीांरहता । मिर में ज्यों का त्यों रहता हूाँ। मुझ आत्मा में ककसी ककस्म का पररवति िहीां होता । िाग्रत में, स्वप्ि में सुषुजप्त में, भूत में भर्वठयत् ् में और वतिमाि तीिों काल में, हर अवस्था और हर हालत में 'म'ैं आत्मा ज्यों का त्यों रहता हूाँ। इसीमलए-तस्मात् ् सवेषुकालेषु युद्ध च । अब गचन्ति प्रकरण आया अगचन्त्य का । आत्म गचति का क्या स्वरूप है िबकक श्रुनत कह रही है अगचन्त्यम् ्। तो कफर आत्म गचन्ति का क्या स्वरूप है ? यह तो निर्ववाद मसद्धाांत-है कक सर्व- काल में में ही रहता हूाँ तो कफर गचन्ति ककसको कहते ेहैं। मुझ आत्मा के गचन्ति का सबांधां गचर्त् से तो है िहीां। ि आखाँ के बन्द करिे से है, ि आखाँ के खोलिेसे है ि ककसी अवस्था से है ि ककसी अगचन्त्य काल से है ि ककसी देश से है । अब इसका के गचन्ति का यही स्वरूप है। ककसी भी प्रकार का गचति ि हो। ठीक । में आत्मा हूाँ, इसका भी गचन्ति ि हो। म ैंआत्मा हूाँ यह गचन्ति भी गचर्त् का ही है। गचर्त् से ही सबांगांधत है। अब यहााँपर एक चीि और बतािा है। ि-एलाक में अिला शब्द है-'युद्धच' । खाली गचन्ति हो रहता तो कोई बात ि थो। मतलब यह है कक सब काम होते ेहुए भी मुझ आत्मा का स्मरण कर । कथा सुिते हुए भी मुझ आिा का गचन्ति कर इसो माण्डू क्योपनिषद में काररका आती है-

'यदा न लीयतेधचत्तं ंन च र्क्षक्षप्यतेपुनः ।

तनङ्न मनाभासं तनष्पन्द्नं ब्र्ह्तत्सदा ॥४६॥ .

(िौ. पा. काररः. अद्वैत प्र. म. स. ।।४६।।)

भिविा आचाय िकहते ेहैं-मिाो जिस वक्त गचर्त् का लय ि हो और गचर्त् र्वक्षक्षप्त ि हो तो लय और

र्वक्षेप से रहहत िो अवस्था है वही ब्राह्मी अवस्था है, वही अचल पद है और वही भिविा आत्मा में हूां।

गचर्त् के लय का क्या स्वरूप है ? और गचर्त् के र्वक्षक्षप्तता का क्या स्वरूप है ? गचर्त् की चचांलता को गचर्त् का र्वक्षेप कहते ेहैं चचांलता का िाम-र्वक्षेप है और िीदां आ िाा यह गचर्त् का लय है। अभी इस वक्त गचत के लय में सिु रहे हो या गचर्त् के र्वक्षेपे में सिु रहे हो या लय-र्वक्षेपे दोिों से रहहत अवस्था में सिु रहे हो क्योंकक यहद गचर्त् लय हो िाएिा, तो झोंके लेिेंिो े। और र्वक्षक्षप्त हो िाएिा तब भी िहीं सिु सकते ेऔर लय र्वक्षि से रहहत अवस्था ही ब्राह्मी अवस्था है।

सशांत सर् िसंकल्पा या मशभार्द् अर्न्दस्त्थतत ॥

जाग्रन्द्न्द्नरा र्ं नोमुक्तिा सा स्त्रूपन्द्स्त्थतत परा ॥

िाग्रत और सुषुजप्त दोिों अवस्थाओं से परे की िो अवस्था वही स्वरूपस्थता है। तो अभी िो सिु रहे हो यह निरूपण तो स्व- रूप में जस्थत होकर सिु रहे हो या स्वरूप से बाहर होकर ? स्वरूप में जस्थत होकर ही यह निरूपण सिु रहे हो। तुम्हारे जितिे भी काय िहैं समाांर में व्यावहाररक िित के अन्दर, वे सब स्वरूपस्थता में होते े हैं कक स्वरूपस्थता के बाहर ?

तो यही तो भिविा आत्मा का सवकिाल में स्मरण है। मिर तारीफ यह है कक ककसी भी काय िके कक्रयाकाल में यह भी तो गचतांिि िहीं होता कक म ैंआत्मा हूां और अिर यह गचतांि करो कक में आत्मा हूां, तो म ैं 'अगचन्त्य' िही।ां यही तो भिविा आत्मा का स्वरूप है । कक यह भी स्मृनत ि रहे कक म ैंआत्मा हूां। यही आत्म गचन्ति है और अगचन्त्य पद है। श्रुनत िो कह रहो है आत्मा अगचन्त्य है । तो क्या मतलब है? अिर पिोिशि बिाकर बिैो तो म ैंऐसा िहीं ।

'नान्द्तः प्रज्ञं ं.... ....सर्र्ज्ञेयः

इसी विह से अगचन्त्य पद में जस्थत होकर ही िित प्रपचां का सारा काम होता है । लय और र्वक्षेप िही ां तो मि कहा ांहै ? तो अमिस्क पद में जस्थत होकर तुम्हारा सारा व्यवहार होता है और र्विा प्रयास के अमिस्क पद में जस्थत होिे के मलए क्या तुम कोई साधि करते ेहो अमिस्क तो तुम स्वय ांहो अब हम तुमको ककस पद में जस्थत कराए ांअरे ! तुम खुद अमिस्क पद में तो तुम बबिा प्रयास के बबिा साधि के स्वाभार्वक जस्थत हो तो कफर हम क्या करते ेहैं ? जिसमें तुम हो पहले ेसेउसमें रहो तुम्हारी िो कोमशश है ि, उसको हम खतम करते ेहैं। कोमशश करते ेथेतब भी वही थे। और कोमशश मत करो तब भी वही हो । मिर तुम्हारा िो र्वकल्प था कक म ैंअपिे स्वरूप में जस्थत हो िाऊां, बस इसी र्वकल्प को सतां महात्मिा लखाते ेहैं, िो तुम हो िहा ाँपर हो वहीांलखाया िा रहा है और अिर म ैंयह र्वकल्प करू, कक में तुमको अपिे पास से कुछ दे रहा हूां तो कफर म ैंब्रम्ह र्वद्या का प्रवक्ता िहींहूां, मेरे अदांर पोल ही है कफर । अरे तुम भिविा हो, तुम्हें किौ दे सकता है तो िहा ांपहले ेथे, िो थे, अरे िो

भिविा है उसको भिविा कहा ियिा या खचेड़ू को भिविा कहा ियिा? ि वास्तर्वक गचन्ति है भि- विा का वह यहो है। कक 'मामिुस्मर युद्धच ।

.

अब चार बि रहे हैं, आिेा का प्रवचि यहींसमाप्त होता है।

ॐ पूण िमदः पूण िममद, पूणात्पूिण िमुदच्यते ।
पूणस्त्यि पूणमिादाय, पूण िमेर्ाि् मशष्यते े।।
ॐ शान्द्न्द्तः ! शान्द्न्द्तः ! ! शान्द्न्द्तः ! ! !

पचांम हदवस का प्रवचि

(शुक्रर्ार, हदनांकं१६नर्म्बरसन्१९७३समय१०बजेसे १२ बजे तक)
् (

ओममत्येत दक्षरममद७ सरि्............. तदप्योङ्गकार एर् ।

नान्द्तः प्रज्ञम्ॅ.....................सर्ज्ञेयः

'सोयमात्मा ....मकारतत,

आत्म जिज्ञासुओां ? कल के प्रसिां में भिविा स्वरूप आत्मा को महारिरी श्रुनुत ि अगचन्त्य बताया है-

'नान्द्तः प्रज्ञम्...ॅ.....................

यहद में आत्मा अदृठट हूाँ और अदृठट होते ेहुए अग्राह्य हूाँ, अग्राह्य होते ेहुए अव्यवहाय िहूाँ। अव्यवहाय ि होते ेहुए अगचन्त्यम् ्। म ैंआत्मा अगचन्त्य हूाँ। अगचन्त्य यिो होता है ककसी के द्वारा जिसका गचन्ति ि ककया िा सिके उसका िाम अगचन्त्य है। िो मि द्वारा, गचर्त् द्वारा, इांहरयों के द्वारा जिसका गचन्ति ि ककया िाय उसको अगचत्य कहते ेहैं। तो म ैंआत्मा अगचन्त्य हूाँ। कुछ लिो िब ध्यिा करि बैिते हैं तो ध्यिा में िब कुछ हदखाई देता है, कोई दृश्य, तब तो प्रसन्िता िाहहर करते ेहैं कक आि ध्यिा में मैंइस चीि का दशि ककया। आि हमको प्रकाश हदखाई हदया और अिर कुछ िहीांहदखता तो ध्यिी िो है साधक, उसका निराश होकर मुहां लटक िाता है। आि हमको कुछ हदखाई ि हदया। अरे भैयै्या ! तुझे देखिा ही है तो आखां क्यों बदां करता है। ये बबिा कुछ ककये ही देख रहा है। तो आखां बदां करके भी वह साधक देखिेकी कोमशश कर रहा है। तो आश्चय िही तो है िो कहता है हमको बडा भारी प्रकाश हदखता है। तो प्रकाश hat pi तो हदख ही रहा है। तो वास्तव में ध्यिा, ध्यिा है। उस ध्यिा को ध्यिा कहते ेहैं कक कुछ ि कुछ हदखाई दे। ि ये शब्द, ि स्पश'ि ि रूप, ि रस, ि िधां, यिाि भी हदखाई ि दे। तो कुछ ि हदखिै पर, कुछ ि हदखाई दिेपर, देखिैवाला ही तो वहाांरहता है और किौ रहिा ? अरे िब कुछ िहीां हदखता तव म ैंतो हदखता हूाँ कक में भी िहीां'हदखता अरे कुछ िहीांहदखिा ही तो म ैंका हदखिा है जिस वक्त कुछ ि हदखाई दे ध्यिा में, तो कुछ ि हदखाई दिेपर ये तो अिुभव होता है कक कुछ िही ां हदखता, कुछ हदखता है उसका भी अिुभव करता है।. और कुछ िहीांहदखता इसका भी अिुभव करता है। हदखिै, और ि हदखिै ेदोिों को िो देखता है वह तो हदखता है। यही तो पक्का ध्यिा है। मिर बबिा सोचेसमझेलिो निराश हो िाते ेहैं। िो असली ध्यिा है उसकी तो लिो उपेक्षा करते ेहैं और िो िकली ध्यात है उसकी अपेक्षा करते े हैं। िब कुछ िहीांहदखाई देता। सिुा र्वल्कुल। ये भी बता हदया िया है कक अिर तुमको कुछ हदखाई देता है तो म ैं का डडांा मारो। कुछ हदखाई दिा आत्म गचन्ति का बाधक है। स्वरूप गचन्ति का, आत्म गचन्ति का, ब्रह्म गचन्ति का बाधक हैं। इसमलए िब कुछ खुरि, खरां मालूम पडे, र्वचार, कल्पिा या कोई दृश्य तो फट से म ैंका डडांा मारो। इसका िो आदर है डडांा लिाओ उसके ऊपर। मार ही दो। तुमको पाप िहीांलििैा क्योंकक उसकी अन्यथा मसद्धी है ि। कफर शातां मुरा में बिैा। आख खुली रहें या बदां रहें। आखां का कोई मतलब िहीांहै। ि तो ये आखां है, ि ये किा है, ि ये मुह है। ये सब िोलक है। आखां उसके अन्दर है। र्वचार दृजठट से देखो तो इांहरय एक ही है-मि। शब्द र्वषय का भिो करि के मलए ये िो मि है, इस प्रदेश में आता है, तो इसी मि का िाम कण िइहांरय हो िाती हैं। िब इस प्रदेश म ैं- आता है'तो आखां िाम हो िाता है। इहांरय देस िहीांहै। अिर -इांहरय दस हों या पाचाँ ेहों तो एक ही समय में हर एक इांहरय अपिेअपिेर्वषये को ग्रहण करें। आखां देखिै ेलिती है तो किो काम िहीांकरता।

अिोर ये इांहरया ांदस या पाचाँ है तो कफर एक ही टाईम में जिस इांहरय का िो र्वषय है वह इांहरय एक ही ांकॉल में अपिे- अपिेर्वषयों की ग्रहण करे। मिर ऐसा िहीांहोता क्योंकक मि एक ही है। इसमलए ये तो िीवि भर सिुों हम तुमको सिुायेंगे बहढ़या- बहढ़या ाँचिीं। मिर ककसी को शब्द िाले ेमें िहीांफांसिा है क्योंकक जिदांगी बहुत थोडी है इसमलए वेदाांत में हम तिी ही चिी समझाते हैं। स्थूल, सूक्ष्म और कारण। स्थूल पदाथ िमें शरीर समझ लो । सूक्ष्म में मि समांझ लो और स्थूल सूक्ष्म का कारण िो आत्मा है उसको समझा हदया।

तो भैय्या ! कहिे का मतलब यह है कक जिस समय आत्म गचन्ति करिे के मलए बैिे तो यह कल्पिा तो म ैंआत्मा की कल्पिा है। सो जिससे िो चीिें पैदा होती है उसी से वो मरती भी है। सप िबाहर से िहीांआताां इसमलए रस्सी का ज्ञाि ही सप िकी मृत्यूहै। तो यह सकल्प र्वकल्प िो भी पैदा होता है उिकी मुझे ेआत्मा से ही उत्पर्त्त् है। तो में ही इिका िाशक हूाँ। िहााम ैंका डडांा लिा, वहीांिाश भी हो िाता है। इसमलए कोई गचताां ि करो । शाताँ बबलकुल । कुछ देखिेका र्वकल्प ि करो कक ध्यिा में हमको कुछ हदखाई दे। ये ध्यिा िहीांहै ये र्वकल्प है। उस ध्यिा काल में ध्यिाावस्था में िः शब्द, ि स्पश िि रूप, ि रस, ि िधां, ि देश, ि काल, ि वस्तु । वस्तुतः यही आत्म गचन्ति है। हालाकांक बबिा बोध के इस प्रकार के गचति में हरएक की आस्था िहीांहो सकती। क्योंकक अिाहद काल से िाम रूप में आस्था िमी हुई है और िाम रूप में मि को रखते ेहैं तो आखाँ बदां करके भी िाम रूप देखिे ेके ही कोमशश करते ेहैं लोि। ये िलत ख्याल हैं। जिस समय आत्म गचति में बैिे उस समय में ध्यिा करिे बैिा हूाँ या "ध्यिा कर रहा हूाँ। इसका भी गचन्ति ि हो क्योंकक में गचति करिे बैिा vec R तो ये गचताां सवकिाल वाला िही ांहै। िो गचति भिवाि आत्मा का स्व- भाव में होता है वही सवकिालीि होता है और िो पर भाव में होता है वह कभी होता है और कभी िहीांहोता । तो भिवाि आत्मा का गचति सवकिालीि है और सवकिालीि होिेके ही कारण स्वभाव में होता है । स्वभाव । स्व मिोआत्मा के होते ेहै, म ैंके । िो गचति आत्मभाव में या में भाव में होता है वही गचति सवकिालीि होता है। उसो के मलए भिवाि ि कहा है- 'सव िकालेषु मामिुस्मर युद्धच ।

भिवाि का वही गचति स्वभाव में होता है परभाव में िहीांहोता । अपिेआत्मा को कुछ मािकर गचन्ति ककया िाय बही पर भाव है। और अपिेआप आत्मा को कुछ ि मािकर गचताां ककया िाता है उसे ेस्वभाव का गचति कहते ेहैं। तो िो स्वाभार्वक गचति है भिवाि का वही सवकिाल में हो सकता है। परभाव का िो गचति होता है वो करिे से होता है स्वभाव का र्विा ि करिे से होता है । क्योंकक अपिेआप को कुछ मािकर गचति करिे बैिेतो उसके मलए कुछ ि कुछ करिा पडेिा, आख बन्द करिा पडेिा. आसि लिािा पडेिा, देश-काल ढूांढिा पडेिा, तो परभाव के गचति में कुछ करिे की िरूरत होती है और स्वभाव के गचति में- स्वभाव में िो गचताां होता है बबिा कुछ ककये है और परभाव का गचताां करिेसे होता है। तो बबिा कुछ ककए िो गचताां होता है, वही सहि गचताां है और वही सच्चिदािांद है, वही सहि समागध है और वही सहि पद है । िब तक आत्म तत्व का पूण िरूप से बोध िहीांहो िाता तबतक स्वभाव का गचताां असम्भव है। हााँतो िीक है। आत्म िैजठिक या ब्रम्ह िैजठिक का ब्रम्ह गचति अथवा आत्म गचति स्वभाव में होता है। और आत्म वेत्ता या ब्रम्ह वेत्ता का आत्म गचति पररनच्छन्ि होता है । सवकिालीि िहीांहोता। सबसे पहले ेतुम्हें ये बता दें िकक आत्म िैजठिक ककसको कहते ेहैं, और आत्म वेत्ता ककसको कहते ेहै ।

देखो शाहदयांतो सभी लडककयों की होती है। चाहे १८ साल में, चाहे २० साल में, चाहे पच्चीस साल में, शाहदयांतो सभी लडककयांकरती हैं। शायद हिारों में कोई एकाध अर्ववाहहत हो िाय । मिर इि शादी शुदा में पनतव्रता ? होती सभी पनत वाली हैं। मिर पनतव्रता कोई-कोई होती है। पनतव्रता के तो दशि ही दुलुभि है ।

'उत्तम के अस-बस मनमाहीं ं। सपनेहु आन पुरुष जर्नाहीं।'

चाहे पनत कुरूप हो, रूपविा हो, मूख िहो, र्वद्विा हो, या दररर हो। आरोग्य हो या रोिी हो- मिर 'सपिेहूं अिा पुरुष िि िाहीं' पनतव्रता के समक्ष (र्वठणु भिवाि भुवि सुन्दर कहे िाते ेहै) कोई भी सामिे आ िाय तो पनतव्रता उिके तरफ भी दृजठट उिाकर िहींदेखती । आ, हा-हा ? वैसेसभी पनत वाली हैं। सात भावांर सबके साथ पडती है। पनतव्रता का दशि ही दुलुभि है। चाहे पनत िैजठिक कहलो । उसी तरह बोध हो िािा दूसूरी बात है। िािा मलया म ैंआत्मा हूँ. म ैंव्यापक हूं, अखण्ड हूँ । बोध हो िया है लेककि भिवाि आत्मा के प्रनत निठिा हो िािा, दूसूरी बात है। ब्रह्म को िािा मलया उसका िाम हुआ ब्रह्मवेर्त्ा और स्वरूप आत्मा में निठिा हो िाय उसको कहते े हैं ब्रह्म िैजठिक या आत्म िैजठिक । ब्रम्ह िैजठिक तो शायद ही कोई ममले े। िैजठिक िहींममलते । िो ब्रह्म िैजठिक होता है, िैसे ेभिवाि राम, भिवाि कृठण सुन्दर से सुन्दर कहे िाते ेहैं मिर पनतव्रता उिके तरफ िही ां देखती उिी तरह आत्म िैजठिक िो पुरुष है तो दुनिया ांकी दृजठट में उसके मलए ि कोई देवी ि कोई देवता । और ब्रम्हा, र्वठणु, ु शकांराहदक के भी चमत्कार देखकर उसका गचर्त् र्वचमलत िहींहोता । उसको आत्म िैजठिक कहते े हैं। ये बात िहींहै कक बिी िाश हो िाय, लेककि बािार िही ांहै उिका। िो आत्म िैजठिक का गचतांहै- वह करता हिीं, होता है। और िो गचतांहोता है वो होता है स्वाभार्वक । बबिा कककये होता रहता है। इस पर र्वश्वास िमिा एकाएक नितातां असम्भव है । अरे भाई- आत्म िैजठिक यिो भिवाि । आत्म िैजठिक कह लो चाहे भिवाि । क्या भिवाि भी अपिेआप से मभन्ि देखता है ककसी को ? तो स्वाभार्वक गचति । स्वभाव में गचति । 'स्वभाव', यह गचतां। सुिो ! अब इसका अिुभव करो । कल भी इस पर थोडी रोशिी डाली िई थी । शब्द, स्पश,ि रूप, रस और िंध । ये पाचाँ हो र्वषय कहे िाते ेहैं। जिति र्वषय हैंइिमें से ककसी र्वषय का भी अिुभव करता हूं। तो भैय्या, परभाव में अिुभव करता हूँ कक स्वभाव में करता हूं ? स्वभाव में । अरे भाई अभो िो कथा सुि रहे हो वो स्वभाव में कक परभाव में ? स्वभाव में । क्या प्रमाण ? र्वषयों के अिुभव काल में कत्र्ता, कक्रया, कम िितीिों की अिूभूनत होती है तो वह परभाव है। और यहद कता,ि कम,ि कक्रया तीिा की अिूभूनत का अभाव है, तो समझिा स्वभाव है। यही परभाव और स्वभाव का लक्षण है। और यह लक्षण अकाट्य है। परभाव और स्वभाव का । शब्द, स्पश,ि रूप, रस और िंधां । और इन्हींपाचाँों र्वषयों त्त्का अिुभव होता है । इन्हें चाहे ससांार कहो चाहे, प्रपचां कहो, माया कहो । िो मिी आये कह लो । बस ये पाचां र्वषय हैं और इन्ही पाचां र्वषयों के अजस्तत्व में इजन्रयों का अजस्तत्व निहहत है। पहलेर्वषय का र्वकल्प होता है। िब र्वषय का र्वकल्प होता है तो उस र्वषय का ग्रहण करिे के मलए इजन्रय पैदा हो िाती है। पहले ेइजन्रय िहीं रहती । इसका निपटारा बाद में करेंिे।

र्वषयों के अिुभव काल में यहद कता,ि कम,ि कक्रया की अिुभूनत होती है तो वो परभाव है। और अिुभव काल में कता,ि कम,ि कक्रया इि तीिों की अिुभूनत िहींहोती तो वह स्वभाव है। अब कर्त्ाि,कम,ि कक्रया ककसको

कहते ेहैं ? कता,ि कम,ि कक्रया िो देखता है उसको कता िकहते ेहैंऔर िो चिी देखी िाती है उसको कम िकहते ेहैं
ाि दैखिा है वो कक्रया। िैसेअब ये डण्डा देख रहे हो तो तुम देखिे ेवाले हुए कता,ि डण्डा हुआ कम िऔर तुम्हारा
देखिा हुआ कक्रया। तो शब्द, स्पश,ि रूप, रस और िधां ये पाचां र्वषय हैं। और हर एक में तिी चिीं रहती है। कता,ि
कम,ि कक्रया। तो जिस तत्त शब्द का स्पश िका, रूप का, रस का, िधां का, तो ककसी भी र्वषय का म ैंआत्मा
अिुभव करता हूां। म ैंयिो में, म ैंयिो तू िही।ां क्योंकक म ैंआत्मा सब में ही हूां। म ैंतो सब कुछ हूां। जिस समय ककसी
भी र्वषय का अिुभव करता हूां तो र्वषय के अिुभव काल में यह अिुभव िहीांहोता कक में देख रहा हूां। ये फ़िी
चिी है। कता,ि कम,ि कक्रया तिीीं के अभाव का िो भाव है वही स्वभाव है तो ककसी र्वषय के अिुभव काल में मुझ
भिविा आत्मा को यह अिुभव िहीांहोता कक ये अमुक र्वषय है और में अिुभव करिे वाला हूां या इस र्वषय का
में अिुभव कर रहा हूां। कति, कम,ि कक्रया तिीीं भावों का अभाव रहता है। ये तिीि भाव का अभाव ही तो स्वभाव है।
वस्तुतः यही आत्म गचति। कोई काम छोडकर यिो सुििा छोडकर, देखिा छोडकर, यिो कोई काम छोडकर िो
गचति है ये सवकिालिी भिविा आत्मा का गचति िहीां है। ये पर भाव का गचति है। बहुत वारीक चिी है ये।
"अािन्द मिान्द करम प्रसन्िि" वाह ! तो कफर कता,ि कम,ि कक्रया िब तिीि भावों का अभाव हो िया तो तिीीं
भावों के अभाव के बाद किा रहा ? स्व का भाव रह िया। तो पर भाव में कुछ हो रहा है कक स्वभाव में। और कता,ि
कम,ि कक्रया िब में परभाव है, और कता,ि कम,ि कक्रया के भावों में कुछ हो रहा है। व्यवहार। कता,ि कम,ि कक्रया का
बि र्वकल्प हिाि तभी तो कुछ हो रहा है, ऐसा करेंिेऔर कता,ि कम,ि कक्रया इि तिीीं र्वकल्पों का अभाव रहता है
र्वषयािुभव में। तो म ैंअिुभव कर रहा हूां ये भाव रहता है ि ? तो कफर क्या हल हुआ। म ैंआत्म गचति कर रहा हूां
ऐसा है ही िही ां। अभी तो तुम्हें पक्का करिा है ि। र्वषय ककतिे है ? पाचां शब्द, स्पश,ि रूप, रस और िधां। इन्ही
को प्रपचां कहते ेहैं और इन्ही र्वषयों का ही र्वषय करिेका िाम व्यवहार। तो भय्या ! ककसी र्वषय के अिुभव
काल में या ककसी र्वषय के र्वषय काल में ऐसा अिुभव होता है कक में सुि रहा हूं, म ैंदेख रहा हूां। ये अिुभव िहीां
होता। यिो कता,ि कम,ि ककया तिीीं का उस समय अभाव रहता है िब तिीीं का अभाव रहता है तो भाव ककसका
रहता है? में आत्मा का। उसी भाव का िाम हो िया स्वरूप। म ैंका भाव रह िया आत्मभाव ! और आत्म भाव में
यिो आत्म देश में कता,ि कम,ि कक्रमा तिीीं का लेश िहीां है। सवथिा अभाव है अिर उस समय ककसी र्वषय के
अिुभव काल में में आत्मा ि रहें तब तो कता,ि कम,ि कक्रया का अिुभव हो। स्वभाव ि रहे तब तो कता,ि कम,ि कक्रया
रहे। तो उस समय स्वभाव रहता है। स्वभाव में यह निश्चय है कक कता,ि कम,ि कक्रया तिीीं का अभाव हो िाता है।

बि तिीीं भावों का अभाव हो िाता है स्वभाव देश में, तो कफर देखिा, सुििा, बोलिा, चलिा, उििा,
िबैिा ये व्यवहार ही कहा ाँहै ? इसमलए प्रशातां महासािर लहरा रहा है। लिाओ िोता उसमें, तो कफर क्या म ैंकुछ
बोल रहा हूाँ या तुम कुछ सुि रहे हो ? हो िया कफर। इस स्वभार्वक पद में सगचत प्रारब्ध कक्रयमाण का उन्मूलि
हो िाता है। इसकी अिुभूनत में सब िया। खत्म। ि पुण्य कम ि पाप कम ि। िब कमों का उन्मूलि हो िया तो ि
स्वि िलोक, ि िरक लोक, व चरां लोक ि सूय िलोक। ये आखखरी पद है। और भैय्या, िब तक हिाेका अजस्तत्व है,
पर भाव है। और िब तक हिाेका अजस्तत्व है तो तुम अपिे घर में रहो कक म ैंआत्मा अिन्मा ब्रह्म हूाँ। मिर कम ि
अपिेदेश में है तो, कम िहदख िन्हा है। अभी िहीांयिा। घर में बिैा। िहीांयिा। तो उसी वक्त कमों का उन्मूलि
होता है-हुआ ही िहीांतिीकाल में िब हुआ िहीांतिीकाल में। िब हुआ िहीांतो ककया ककसिेकफर ? ककसी ि

हीि। परभाव में तो होता है। अरे यार ! कम िकरिे वाले अपिे आपको कुछ मािकर ही तो कम िकरते ेहैं ि । चाहे अपिेको साढ़े तीि हाथ का देह मािकर करें, चाहे ससांारी िीव मािकर करें मिर मािकर ही तो करते ेहै। क्योकक कम िकाडंी देहात्मवादी होता है अपिेको देह मािकर कम िकरता है और अपिेको में िीव है। मािकर उपासिा करता है। तो बबिा मािे कम िउपासिा हो है। िहीांसकते। तो परभाव हो तो है ि, और स्वदेश में कोई ि रहा। सब उन्मूलि हो िया कमो का, ि सुख रहा ि दुखु रहा ।

'पुण्य पाप जब दोऊ नाशै। तब नर मम पुर पारै् बासे ॥'

पुण्य, पाप, बाधांयो िित, को काटि समरथ्थ । ऐसा ज्ञाि र्ववेक है। ये सब अपिे हत्थ ।' तो में हूाँ, अपिे आपको कुछ मािकर कहतेहो तो कुछ हो रहा है और स्व को ििाकर कुछ िहीांहो रहा है। तो िब कुछ िहीांहो रहा है तो गचताांकिहा ाँहो रहा है। इसीमलए तो में आत्मा अगचन्त्य हूाँ । गचन्न्त भी तो एक हिाि ही है। पर- भाव और स्वभाव । तो परभाव में तो होता है। र्वकल्प देखिे- ििुैका । यह र्वकल्प परभाव से होता है मिर िब अिुभव करिे चलता हूाँ तो परभाव ि रहकर म ैंस्वभाव में आ िाता हूाँ। इस प्रकार 'अिोदां मिादां करम प्रसन्ि्'् हो िया । तभी तो बाबा ि खा िये । मिो से मालपूवा । यहाांमसद्धान्त तो है। सुिादें कफर ।

एक बार िोर्पयों ि ककसी शुभ पव िमें महात्मा दुवुासिा के पिू के निममत्त्ं अच्छे-अच्छे स्वाहदठि पकवाि बिाया और यमिुा उस पार उिकै आश्रम में िािेके मलयेतैयार हुईं, परन्तु यमिु में भयकांर पूर था, तब उि लोिों ि भिवाि कृठण से कहा-भिवि हम लोि महात्मा दुवुासिा के पिू के निममत्त्ं उिकै आश्रम में िा चाहती हैं, परन्तु यमिुा में पूर है, इस कारण हम वहा ाँिा सकते असमथ िहो रही हैं, कृपाकर हमें वहाांिािेके का कुछ उपाय बताइये, ताकक हम लोि वहााँिाकर उिकी पिूा कर सकें इस पर भिवाि कृठण ि उिसे ेकहा कक तुम लोि, यमिुा के पास िाकर कहिा, कक यहद कृठण बालब्रह्मचारी हों, तो ऐ यमिु ! हमें उस पार िािे के मलये मािि िदे दो ।

यहद कृष्णो बालयततःसर्दोर्षर्न्द्जतः ।
तणणनिों देहह मार्ं िबै, कामलन्दै सररताम्बरै ॥

तुम लोि इस मत्रां के बल से उस पार िा सकती हो िोर्पयों ि िाकर यमिुा से यही मत्रां कहा, यमिुा ि िोर्पयों को उस पार िािे के मलये मािि िदे हदया अथाति इस ककिारे से उस ककिारे तक िल र्वहीि पिडण्डी बि िई, जिस पर चलकर िोर्पयाां उस पार चली िई, इसके बाद यमिुा कफर ज्यों की त्यों हो िई ।

िोर्पयों ि उस पार पहुांचकर, महात्मा दुवुासिा के आश्रम में उिकी बडी श्रद्धा और भजक्त से पिूा की, और उन्हें मिों स्वाहदठि पकवाि का भोि कराया, बाबा िी ि खूब िी खोलकर भोि सककया, पूरे साल िटक ि ये, िोर्पयों के मलये प्रसाद तक ि छोडा । अयह सब काय िपूरा हो िािेके बाद िोर्पया ांवापस िािेको तैयार हुई

तब गोपिमहात्मा दुवासिा से कहा-महारिा! हम लोग वापस जाना चाहती है, यमुिा में भारी पूर है, कृपा कर हमें उस पार जाने के मलये कोई उपाय सुझाइये ।

दुवासिा ने कहा तुम लोग आई ककस तरह से हो ? गोपियों ने कहा-भगवि ! भगवाि कृष्ण ने एक मत्रां बताया था उसी मत्रां के बल पर हम लोग यहाँआई हैं।

महात्मा ने पूछा-वह कौन सा मत्रां था ?

तब गोपियों ने कहा-वह मत्रां था-

यहद कृष्णो बालयततः, सर्दोष र्ृन्द्जतः ।
तणणनों देहह मार् ंबै, कामलन्द्दै सररताम्बरै ।

तब महात्मा ने कहा अच्छा तो अब तुम लोग यमुिा से हमारा यह मत्रां कहिा कक यहद महात्मा दुवासिा अभी कुछ भी न खाये हो, एक टुकडा भी न छुए हों, तो ऐ यमुिे । हमें उस पर जानेको मार्ग दे दो ।

गोपियों ने यमुिा के पास आकर यही कहा और तुरन्त यमुिा ने उन्हें उस पार जानेको मार्ग दे हदया, गोपिया उस पार आ गई। गोपिया जाते समय तो महात्मा के भोजन के ध्याि में मग्ि थी, अतः उिके मि में कोई र्वचार पैदा नहींहुआ, परन्तु अब वे, इस पार आकर मसर में हाथ रखकर बैठ गई, और र्वचार कर आपस में कहिे लगी, देखो, इन्होंने का बिार कैसा गुरम है, भगवाि कृष्ण इन्होंने, जिनकी १६१०८ रानियां और एक एक से दस दस पुत्र हैं वे बाल ब्रह्मचारी बिें हैं।

महात्मा दुवासिा झूठे, जिन्होंने अभी अभी हमारे सामिे, मिों से मालपुवा और हलुवा गटक मलया, हम लोगों के मलये प्रसाद तक नहीं छोडा, वे कहते हैं कक हमिे कुछ भी नहींखाया, और यह नौडी यमुिा भी झूठी, जो इि दोनों की (साक्षी) गवाही दे रही है, इस तरह वे र्वचारों में तल्लीि हो गई ।

भगवाि का वास्तर्वक रूप, यह जो भास रहा है। नाम मलय कक प्रपचां खडा हो गयिा । ये भगवाि का आगधभौनतक रूप है।

'हम सकल होकेत ाते,े हम सकल नो कुछ भी है। खुद मसवा सब कुछ नहीं, ससाांर कहि भ्रम ै है ॥ तो भैय्या, ये भगवाि की आगधभौनतक रूप है। राम, कुठणाहद भगवाि का आगध दैर्वक रूप है। यिो रि वीय का शरीर नही ांमिाा ाता । इच्छामय । और तुम्हारा तो स्वरूप, भगवाि आत्मा का, निरूपण ककया ा रहा है। यह भगवाि का वास्तर्वक रूप है। यह सारे चराचर को धारण कर रखा है। तो गोपिया ांभगवाि कृठण के आगधदैर्वक रूप की उपामसका थी।ां भगवाि के वास्तर्वक स्वरूप का उन्हें ज्ञाि नहींथा। गोपियों को ब स्वरूप ज्ञाि हुआ तब ये रहस्य समझीांकक भगवाि कृठण बाल ब्रम्हचारी हैं। तो आत्म देश में तो कुछ हो हो नहींरहा है। न में कुछ बोल

रहा हूं ि तुम सुि रहे हो। तो परभाव और स्वभाव का र्ववेचि हो रहा है। कथा सुिि के मलये िब तुम घर से चले े हो तब परभाव को लेकर चले ेहो सुिीिां, ये र्वकल्प लेकर । और यहा ांबिै तब भी श्रोता बिकर और सुिि का मौका आया तो परभाव निकल िया । अव स्वभाव में बिै हो । और िब कथा बदां हुई तो ककसी िे पूछा- कक क्या सुिे ? तो पहले ेवाला र्वकल्प कफर आ िया और िो र्वकल्प िीि–ी के मरता है स्वभाव में तो मर िाता है अरे िो िीि–ीकर मरे वो परभाव है और िो ि िीये, ि मरै वो स्वभाव है। मतलब की बात होती है तो िी िाता है। जिति बहरे होते ेहैं। वो बडेमतलबी होते ेहैं उसके मतलब की बात कहो तो धीरे से भी कहो तो सुि लेंि े। अिर उसके मतलब की बात िहीांहै तो कफर बहरे वि िाते ेहैं ।

तो िो िीि–ी के मरे वो परभाव है और िो कभी ि िीये ि मरे वो स्वभाव है ।

"स्वभावे ब्रम्ह ब्रम्हखण-योऽमस सोऽमस जस्थरोभव"

अरे िैसे ेहो वैसेही रहो । 'पर' मत बिो। स्व तो हो ही आिन्द का िब अिुभव करते ेहो तो स्वभाव में ही करते ेही आिदां का िो अिुभव होता है तो स्वभाव में ही होता है। परभाव में आिन्द की अिुभूनत िहीांहोती। देखो। अब स्वभाव में स्वभावावस्था होकर सुि रहे हो । स्वभाव में स्वभावावस्था होकर देख रहे हो। सारे व्यवहार तुम्हारे स्वभाव में ही होते ेहैं। मिर उस वक्त ये भी तो अिुभव िहीांहोता कक में आत्मा हूां।

'न्द्जसको तुम भूल र्ये, उसकी याद कौन करे ।
और न्द्जसको तुम याद हो र्ई और ककसेयाद करे ।'

और में हूां ये याद है कक िहीांतुमको । तो इसका गचति करिे की क्या िरूरत है। जिसको तुम याद हो और ककसेयाद करे ।

तो में आत्मा हूां। स्वभाव का क्या मतलब । में अमुक हूां ये परभाव, और म ैंहूां, ये स्वभाव है। मिर ककसी भी र्वषय के अिु- भव काल में म ैंहूां इसकी भी याद िहीं रहती । मसफि स्वभाव हो स्वभाव रह िाता है। अच्छा । बि स्वभाव ही स्वभाव रह िाता है तो कफर स्वभाव के मसवाय क्या मि भाव रहता है । मिभाव, गचत्भार्व, अहांकारभाव, देहभाव, िीवभाव, आत्मभाव, परमात्मा- भाव । ससांार रूपी बिार के जिति भाव है। उि सब भावों का अभाव हो िाता है। तो ये जस्थनत क्या तुमको बिािी पडती है ? और ये भिवाि श्री कृठण क्यों कहते ेहै :-

'तस्मात् ्सर्ेषु, ु कालेषुमामनुस्मर'

ये िो स्वभावतः है बबिा प्रयास के सबको मसद्ध है। सबको करतल ित है। बस । यही महात्मािण लखाते ेहैं। इसकी अिुभूनत करातेहैं जिसके गचतांि में मसर पर बोझा लिे, ककककर पैदा हो जिसके गचति में, वह भिवाि का गचति िही ांहै। वह पर का गचति है। - जिसके गचन्ति में मसर हल्का हो िाय। ककसी ककस्त का भार ि रहे. हकीकत में वही भिवाि का गचन्ति है।

ये कफकर लिी रहती है- अभ्यास में लिबा है। गचति करिा है। स्वामी िी? हां िी, तुम तो सब िठट करिे आये हो, भैय्या ! अपिा तो िठट हम कर ही हदयेहैं। तो तुम क्यों छूटो कफर । अभी तो में कफकर से उतिा था चार बिे अब तुम सब के सब का बिाधार करिे आये हो । कहते हो कफकर ही ि करो। हांलाकफर ताकत है तो ग्रहण करो कफर हमारे उपदेश को । है ककसी की ताकत कक कुछ ि करे ? और लिो उपदेश करते हैं, सब कोई, करें ! और हम उप- देश करते हैं- कोई-कोई करें। हमतो कह हदया परभाव िीिी के मरता है। तो भैय्या ! साधु-सन्यासी, गृहस्थ-वरक्त सबका यही उपदेश है । सबरे िहा-धोके दो घटें भिविा का ध्यािा करिा चाहहए । इसको लििो के मलए सत्र तैयार हो िाते हैं। क्योकक िािते हैं कक बबिा कठट ककए भिविा िहीांममलता और िो हम कहते हैं, ि करिे को तो कोई िहींलििा । कोई-कोई शायद तैयार हो िाय ।

क्योंकक, बबिा कुछ ककये भिविा िहींममलता ये िीव का वर्कल्प है कक भिविा का । क्या भिविा भी कुछ करता है ? तो हम तुमको आजस्तक लिबो आए हैंकक िास्तिक । पडडताइि िैसी उल्टी खोपडी है।

एक स्त्री थी, वह हमेशा अपिेपनत की आज्ञा के प्रनतकूल काय िककया करती थी, पनत जिस काम को करिे के मलये मिा करता, वह उसे अवश्य करती ।

एक हदि िदी में पूर था, पनतदेव िे स्त्री से कहा- आि घर ही में स्िाि कर लो, क्योंकक िदी में पूर है, वहा ांिाििािा खतरे से पूण िहै।

पनत की बात सुिते ही उसिेअपिे कपडे उिाये और वह िदी की ओर चल पडी । स्त्री को िाते देख बेचारा पनत निराश पूण िेत्रों से उसकी ओर देखकर कहिे लिा- िाती ही हो तो वहांघाट में पत्थर पर बैिकर ही स्िाि कर लिा, पािी के भीतर, कमर तक या िले तक पािी में िहिमत उतरिा । बस कफर क्या था, स्त्री िदी में िई और िले तक पािी में िहि िाकर पूर में वह िई। लोिों िे िाकर उसके पनतदेव को इस घटिा की सूचिा दी वह तुरन्त बासां लेकर घाट पर दौडा आया और लोिों से पूछा कक भाई ! वह कहा ांपर डूबी है ?

लोिों िे बताया कक घाट पर पत्थर सेआि पन्द्रह बीस कदम दूर । उस मिुठय िे डूबिे के स्थाि से ऊपर चढ़ाव की ओर अपिी स्त्री को खोििा शुरू ककया। लोिों िे कहा- भाई ! इधर ऊपर की ओर उसे क्या खोि रहे हो, वह डूबिे के बाद तो िदी की बहाव अथात्ि्िीचे की ओर ही िायिी, अतः िीचे बहाब को ओर खोिो । इस पर पनत महोदय बोल उिे- भैय्या ! तुम लोि इसका रहस्य िहींसमझ सकते, यह स्त्री बडी उल्टी िनत वाली थी, सीधापि तो इसके स्वभाव में था ही िहीं, सदैव उल्टा ही उल्टा काम ककया करती थी, अतः वह डूबिे के बाद िीचे की ओर िैसा कक उसे सचमुच ही िािा चाहहये, िहींिई होिी, वह ऊपर ही ममल सकती है। ये तुम्हारा सौभाग्य है कक आत्म गचति के मलए कुछ मत करो। बशतेकक उसको अच्छी तरह से िाि लो । िब तक तुम्हारी िीव धारणा है तब तक बदां हो ही िहींसकता। क्योंकक िीव की इज्ित इसी में है कक कुछ ि कुछ करता रहे । िीव को अिर जिन्दा - रखिा चाहो तो करो। करिा ही तो िीव की जिन्दिी है और ि - ककया तो िीव की मृत्यु है। ि करिे से

ीवि मर ििाता है और ि - करिेसे भिवाि हो ििाता है। अब िो साइड तुम्हें पसन्द हो चिु लो। अिर िीव भिबे में सुख हो जिसके साक्षी तुम स्वय ंहो। और भिवाि हिो में सुख है- शानांत है तो भिवाि तो हो ही तुम ।

स्वामी िी ! एक शकांा और दूरू करो। अिर इस बात को ग्रहण कर मलया िाय िो तुम बता रहे हो ? तो इससे बडे-बडेअिथ िभी हो सकते हैं । बुरे काम भी हो सकतेहै इससे तो। क्योंकक तुम कहते ेहो स्वभाव में सारे कम ि होते ेहैं। सारी कक्रयाएंहोती हैं और स्वभाव में होते ेहुए भी िहींहो रही हैं तो करिे से बुरा काम भी हो सकता है । भैय्या ! पहले ेइस बोध को प्राप्त कर लो कफर बुरा काम करिेका सकांल्प उिे तब हमारे पास मशकायत करिा । अरे, िब िीव बुरे काम से डस्ता है तो भिवाि होकर बुरा काम करिे ? ये शकांा कहा ंसे हो रही है ? िीव देश से । अरे ! िो साक्षात् ्िारायण है उससे कभी अिैनतक काय िहिो, उसे ेर्वकल्प हिो कक म ैंबुरा काम करू ? ये लित ख्याल है तुम्हारा । इसमलये भिवाि अगचन्त्य है उसके गचन्ति के मलए कोई देश काल की िरूरत िहींहै। इसी अगचन्त्य के गचन्ति का िाम अमिस्क पद है।

ग़िल

पी मलया र् जाम तो, कफर याद करना जुमु िहै।
कर्ब् में पडकर के चीखै, मारना कफर जुम िहै। १।

सोचना था पहहले ेही, होना था जो कुछ हो चुका ।
कट र्या र् सर जमीं ंपर, देखना कफर जुम िहै। २।

दो जख बहहश्तों का ए नक्शा देखना तू बद कर ।
रे् रु्नाह, रु्नाहों के, चक्कर में पडना जम िहै । '३।

न्द्जन्द्र्ी कश्ती ए दररया, पार हो हरधर्ज न हो ।
होकरके बेपरर्ाह कफर, परर्ाह करना जम िहै । ४।

हम शकल होनेके नाते, े हम शकल जो कुछ भी है।
खुद मसर्ा जर् कुछ नही, संसार कहना जुम िहै ।५।

खुद त्रबना हस्ती खुदा की, कभी हटक सकती नहीं।
खुद खुदा दो मुखतमलफ, ऐसा समझना जुम िहै। ६ ।

हदल रुबा है जबकक हदल का, और में हदल का सकून ।
र्जीरे आजम हदल है मेरा, रोकना कफर जुम िहै । ७ ।

कानून ए पैर्ाम' 'मुक्ता' को फकीरों से ममला ।
अमल करना है सभी को, र्् न करना जुम िहै। ८ ।

अब बारह बि रहे है, मध्यावकाश के बाद दो बिसे प्रवचि पुि: प्रारम्भ हिोा ।

शुक्रर्ार हदनांकं १६ नर्म्बर सन १९७३
समय- २ बजे से ४ बजे तक

भिविा आत्मा का र्वशेवेण श्रुनत िे अगचन्त्य हदया है जिसका र्वर्वेचि कल से हो रहा है। अगचन्त्य पद को अमिस्क पद भी कहते ेहै। बबचार वे करिा है कक ककसी र्वषय के शब्द, स्वण,ि सय, रस, वा में िो र्वषय हैं, इिमें से ककसी र्वषय के अिुभव काल में कता,ि कई, कक्रया तीिीं की अिुभूनत िहीांहोती । इसका कारण वे है- । बेहया कता,ि कम,ि कक्रया ये तीिों ही मि कजल्पत हैं। और ककसी र्वषय के अिुभव काल में मि रहता िहीां, अमिस्क जस्थनत रहती है। यिाी सवथिा र्वषयािुभूनत काल में अमिस्क जस्थनत हिो के हो कारण कता,ि कम,ि कक्रया तीिीं की अिुभूनत िही ांहोती । क्योंकक यहद मि रहे, र्वषय के अिुभवकाल में तब तो कता,ि कम,ि ककया तीिीं का अिुभव हो क्योंकक तीिीं की कल्पिा मि िे हो तो ककया है। अच्छा । तो मि िहीांरहता । अमिस्क जस्थनत रहती है। क्यों िहीां रहता ? अब ये दूसूरा प्रश्िहै। इसमलए कक मि तो परभाव में पैदा होता है । स्वभाव में, आत्मभाव में तो मि िाम की चीिी हो िहीांहै। कोई ि कोई साधि करिे से मि अमि िहीांहोता, मि निरोध होता है। साधि करिे में मि का निरोध होता है अथवा मि का लय होता है- क्योंकक -

ािदािुसधांिर्मेंमि्काल्यबतायाहै।्गचर्त्कातय्करिे के्मलएिादािुसधांिस्िेबढ़कर् कोई्साधििहीां्है।्साधि्करिे्सेसाधिोंसे्याातोसर्त्का्र्वरोधहोताहै्याकोईऐसासाधिहै् ािजिके्करिे्सेमिलयहोताहै्मिर्अबअमिहीां्होता।्अमि्कहतेहैं, मिका्अजस्तत्वहो् खतम् हो् िाय् ।् मि् का् बिद् हो् ममट् िाय् इसको् अमि् पद् या् अमिस्क् पद् कहते् हैं।् अमि् कहते् है्आत्मा्को्।्मुझ ्आत्म्देश्मिांिामि्की्कोई्चीि्हि्ही।ां ्बिािमिहीं तोमि् द्वारा्कजल्पत्प्रिपचांहै्वह्भी्मुझे्आत्म्देश्में्हिांहै्इसमलये्इसको्अमिस्क्पद्कहतेहैं।

क्योकक मि अमि करिे का साधि िहीांहै। मि के निरोध का साधि है और मि के लय का साधि है परन्तु मि को अमि करिे का साधि िहीांहै। मि तो उसी समय अमि होता है िहा ांअपिे स्वरूप में जस्थत हुआ

 तो मि अपिेआप अमि हो िाता है। स्त्ररू- पस्थ हो पर मि अमि हो िाता है। अच्छा ! अब स्वरूपस्थ कब

होता है ? इस प्रश् से यह मालूम होता है कक क्या स्वरूपस्थ िहींरहता ? िहीं, स्वरूपस्थ तो रहता ही है। स्वरूपस्थ है ही । सारा चराचर स्वरूपस्थ है। मिर स्वरूपस्थता का अिुभव कब होता है ? ऐसा कहो । स्वरूपस्थ होते ेहुए भी स्वरूपस्थता की अिुभूनत िही ांहोती क्योंकक सभी स्वरूपस्थ है। स्वरूपस्थता का अिुभव करिे के ही मलए मि को अमि ककया िाता है। स्वरूपस्थता का हो अिुभव करिे के मलए बबिा िािे समझेलो मि का निरोध करते ेहैं। योिदशि में सूत्र आता है-

योर्श्चित्तर्रृत्त तनरोः । अभ्यास रै्राग्याभ्यां तन्द्र्त्त्ररीः ।

मि का निरोध क्यों ककया िाय ? तो योि दशिकार कहते ेहैं"तदारठटुः स्वरूपेऽवस्थािम्"् मि का िो रठटा है उसको स्वरूप में स्थाि ममल िाता है। मि का निरोध हो िािे पर साधक को, मि का िो रठटा है, उस रठटा के स्वरूप में साधक को स्थाि ममल िाता है, मिोइसकी अिुभूनत हो िाती है मि के रठटा को, इसमलए मि का निरोध ककया िाय । तो इस कथि से यह मसद्ध होता है कक स्वरूप में जस्थत होिेके मलए मि का निरोध ककया िाता है। मि के निरोध का वर्कल्प योिी कल्पिा परभाव में होती है या स्वभाव में ? मि का में निरोध करू ? िब म ैंअपिे आपको िीव मािता हूां तभी ये वर्कल्प उठता है कक मि का निरोध करू । तो योिा मि के निरोध का िो वर्कल्प है वो भी स्वभाव का िही ांहै, परभाव का है। तो अब ये समझिा है कक स्वरूप में तो म ैंपहले ेसेही जस्थत हूां। स्वरुपस्थ तो मै पहले ेसेही हूां। अब क्या प्रमाण है कक में स्वरुपस्थ हूां । परन्तु स्वरुपस्थ में िहींहू योिी स्वरुपस्थता के अज्ञाि में ही तो स्वरुप में जस्थत होिेका वर्कल्प निहहत होता है । य श्रृखांला समझ में आ िई ि ? अब िािु ! इस विह से मि के निरोध करिे का वर्कल्प होता है। साधि से । देखो भैय्या ! यों तो प्रकृनत िे 'मुक्त' को सारे वर्श्व के कोिेकोिेमें तत्व का प्रचार करिे के मलए पैदा ककया है परन्तु खास छत्तीसिढ़ में इसमलए भेिा है कक यह बडा आलसी देश है। पचास वष िके करीब हो िये यार तुम्हारे यहा ां वर्चरते। पांिाब ऐसा पुरषाथी और छत्तीसिढ़ के ऐसा आलसी कही ांि पावो े। यहाांपर एक िाडा धिा ककसी के यहाांहो िाय तो राठरपनत हो िाता है। अिर कोई हिारों में एक आध पुरषाथी निकल आता है छत्तीसिढ़ में तो वो मसद्धान्त िहींहै, अपवाद है। बडा आलसी देश है। भिव ि के भरोसे ेबीि फेंक देते ेहैं खेत में, पािी बरस िया तो ठीक है, िहींतो हररहर है। तो कुदरत िे सोचा-अिर साधि बतािे वाले महात्मा को छत्तीसिढ़ भेिें िेतो कर ि सकेंिे तो ऐसेको भेििा चाहहए िो आलस्य धुरीण पद का प्रवक्ता हो उसको इस प्रदेश में भेििा चाहहए । क्योंकक कुछ करिे को तो बतातेिहींहै। और करिे वाला यहा ांहै िहीं। मिा करो कफर क्या है ?

व्यापारे णखद्यतेयस्तुतनमेषोन्मेषयोरर्प ।
तस्यालस्य ुरीणस्य सुखनान्यस्य कश्चन ।।

आखां के खोलिे और बदां करिे का िो व्यापार है, तो श्रुनत कहती है आखां के खोलिे और बदां करिे में भी जिसको थकावट मालूम पडे, ऐसा िो आलस्य घुरीण पुरुष है ससांार में वही सुखी है। तो ये लोि आलस्य धुरीण हैं।

कुछ िही ांकरि धरि, बस थोडा सा धि पैदा हो िया। साल के साल िौकर छोड देता है। शायद वैशाख में बि िाता है। तो बडे-बडेबाबुओ ांको हमिेदेखा है। िौकर िब सोया रहता है तो उसके पीछे खडे ेहोते ेहैंऔर िाते ेहैं- खेदू, ू बैसाखू ू? बोलता ही िहीं है। क्योंकक पा िया हैं ि, आलस्य धुरीण पद। तो भिवा ि सोचा, प्रकृनत ि सोचा, कक हम दूसूरे साधू ूको यहां भिे ेतो ये काम िहींहिा। तो ऐसेमहात्मा को भिा िाए िो आलस्य धुरीण पद का प्रवक्ता हो। क्योंकक हम कहते ेहैं। कक मि का निरोध मत करो क्योकक तुम्हारा ककया वह हिा िही।ां

तो मि के निरोध में मि अमि िहींहोता, मि बिा रहता है। साधि द्वारा मि का िो निरोध ककया िाता है उसमें मि का अजस्तत्व खतम िहींहोता। साधि काल तक ही मि निरुद्ध होता है। साधि काल के बाद वह कफर चचांल हो िाता है। और मि को रोको तो मि, मि रहता है। चन्द वक्त के मलए रुक तो िाता है साधि से मिर मि का वृिदू िहींममटता। और इसको ि रोका िाय तो ये रहता ही िही।ां तो मि को अमि बिािे का यही साधि है कक मि को मत रोको। मि के अमि करिे का यहो चाहहए। क्योंकक कुछ करिेको तो बताते िहींहै। और करिे वाला यहांहै िहीं। मिा करो कफर क्या है ?

व्यापारे खखद्यतेयस्तुनिमेषोन्मेषयोरर्प।
तस्पालस्य धुरीणस्य सुखिान्यस्य कश्चि ।।॥

आखां के खोलिे और बद करिे का िो व्यापार है, तो श्रुनत कहती है आखां के खोलिे और बदां करिे में भी जिसको थकावट मालूम पडे, ऐसा िो आलस्य घुरीण पुरुष है ससांार में वही सुखी है। तो ये लिो आलस्य धुरीण हैं।
कुछ िही ांकरि धरि, बस थोडा सा धि पैदा हो िया। साल के साल िौकर छोड देता है। शायद वैशाख में बि िाता है। तो बडे-बडेबाबुओ ांको हमिेदेखा है। िौकर िब सोया रहता है तो उसके पीछे खडे ेहोते ेहैंऔर िाते ेहैं- खेदू, ू बैसाखू ू? बोलता ही िहीं है। क्योंकक पा िया हैं ि, आलस्य धुरीण पद। तो भिवा ि सोचा, प्रकृनत ि सोचा, कक हम दूसूरे साधू ूको यहां भिे ेतो ये काम िहींहिा। तो ऐसेमहात्मा को भिा िाए िो आलस्य धुरीण पद का प्रवक्ता हो। क्योंकक हम कहते ेहैं। कक मि का निरोध मत करो क्योकक तुम्हारा ककया वह हिा िही।ां

तो मि के निरोध में मि अमि िहींहोता, मि बिा रहता है। साधि द्वारा मि का िो निरोध ककया िाता है उसमें मि का अजस्तत्व खतम िहींहोता। साधि काल तक ही मि निरुद्ध होता है। साधि काल के बाद वह कफर चचांल हो िाता है। और मि को रोको तो मि, मि रहता है। चन्द वक्त के मलए रुक तो िाता है साधि से मिर मि का वृिदू िहींममटता। और इसको ि रोका िाय तो ये रहता ही िही।ां तो मि को अमि बिािे का यही साधि है कक मि को मत रोको। मि के अमि करिे का यही परम साधि है कक मि को मत रोको। िी हाँ! अरे देखो ि ! अभी तक मि को रोकिे का साधि तुमिे ककया है और रोकिे से िो कुछ ममला है इसके साक्षी तुम्ही हो। तो अब मि ि रोको। वहां से श्रृखंला चली है कक स्वरूपस्थ होिेके मलए ही मि का निरोध ककया िाता है।

ा होती है कक क्या म ैंस्वरूप में जस्थत ही हूाँ। निरोध के पहले े। हाांहूाँ तो, मिर स्वरूपस्थ हूाँ इसका अज्ञाि है तो और इसी के मलए मि का निरोध ककया िाता है । तो स्वरूप आत्मा में, अपिे आप में तो म ैंपहले ेसे ही जस्थत हूाँ। तो इसका प्रमाण क्या है ? कक में पहले ेसे जस्थत हूाँ ।

'स्वरूपस्थता की अिुभूनत मि के अनिरोध में निहहत है' । यदि मि ि रोकिेतो मि िहीांरहिे। और मि के ि रहिे पर तो प्रत्यक्ष अिुभव करिे ेकक में स्वभावतः स्वरूप में जस्थत हूाँ। मि के निरोध में क्षण मात्र के मलए स्वरूप की झलक तो आती है मिर वह झलक अजस्थर है, गचर िहीांहै। साधि काल तक है। सीममत है इसमलए स्वरूपस्थता की अिुभूनत मि के अनिरोध में निहहत है। क्या प्रमाण है ? यहाां पर दो पक्ष हम बतायें े। स्वरूपस्थता से मि का अनिरोध होता है और अनिरोध से स्वरूपस्थता की अिु- भूनत होती है। कफर देखो । स्वरूपस्थता से स्वरूप में जस्थत होिे पर, मि का अनिरोध होता है यदि मि को निरोध करिे का र्वकल्प िष्ट हो िाता है। एक, अथवा मिको ि रोकिे पर स्वरूप- स्थता की अिुभूनत होती है। दोिों का अिुभव करायें े। एक बार और सुि लो । स्वरूपस्थता से, स्वरूप भगवाि आत्मा में जस्थत होिे पर मि के निरोध का िो र्वकल्प है उसका अभाव हो िाता है। कफर उसको ये र्वकल्प िहीांउठता कक मि का निरोध करो और मि को ि निरोध करिे पर, मि को ि रोकिे पर स्वरूप- स्थता को अिुभूनत होती है क्योंकक मि को ि रोकिे पर मि अमि हो िाता है।

अब इसका अिुभव करो । निरोध का बोध और निरोध का अिुभव ि करायेंक्योंकक वो साधि प्रकरण है। अभी यह कथा सुििे आये हो और कथा सुि रहे हो । आिन्द ले रहे हो। कोई पूछिे-स्वामी िी ! बबिा रोके कैसे ेमि रुकिा? तो भैय्या ! हम यहाांरोकिा िहीांबता रहे हैं। हम कहते ेहैं मत रोको । तो यह आिन्द िो ले रहे हो वह मि के निरोध में कक अनिरोध में ? समाांर के तुम्हारे जितिे काय िहोते ेहैं, मि के अनिरोध में ही तो होते ेहैं। अिुभूनत िीवि में चल रहे हो भला । अब ये र्वचार करिा है कक मि को ि रोकिे के मलए भी कुछ करिा पडता है कक िही ां? अरे यार, स्वरूपस्थ होता भी तो मि को िहीांरोकते ेतुम । मिर तुम भगवाि आत्मा स्वरूपस्थ ि होते े तो मि को रोककर के तुम सब काम करते े। ये स्वरूपस्पथता का अिुभव करा रहे हैं कक तुम स्वभावतः स्वरूपस्थ हो, िािते ेभर िहीांहो । और स्वरूपस्थ होिेके ही कारण तुमको मि रोकिे की िरूरत िहीांपडती । अगर तुम भगवाि आत्मा स्वरूप में जस्थत ि होते ेतो कोई भी काय िकरिे के मलए तुमको मि को रोकिा पडता । भगवाि आत्मा की देि है । स्वरूपस्थर्ता ही तो भगवाि आत्मा का सतत गचन्ति है। मशव । 'तस्मात्सवेषु कालेषु मामिुस्मर युद्ध च (गीता) । यहद में आत्मा, में स्वरूप भगवाि आत्मा स्वरूपस्थ ि होता तो ककसी भी काय िके करिे के मलए मि के निरोध के मलए कोई ि कोई साधि करता में। साधि करिा पडता। यही स्वरूपस्थता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अब कौि सा काम रह गया बाकी, जिसके मलए में मि का निरोध करूं । अच्छा, ये स्वरूपस्थता का ज्ञाि कराया गया अभी । अब र्वचार ये करिा है कक । तो इसमलए मि के र्वरोध के मलए कोई साधि यहद करूं ? मि को रोकिे ेतो मि को मािकर रोकिे ेकक िािकर ? मािकर । मि है ऐसा मािकर ही तुम मि को रोकिे का प्रयास करते ेहो । और मि अब रोका िहीांिाता तो 'है' ही रह िाता है। मि को रोक्ते ेहो तो मि है, ऐसा मािकर ।

और मि ि रोका िाय तो कफर 'है' रह िाता है। मि िही ांरहता। यिो अजस्तत्व रह िाता है। है अिर ि हो अजस्तत्व तो मि िमिोककसको ? कोई ि कोई र्वकल्प का आधार तो हिा चाहहए । मि है इसका र्वकल्प अपिेपर करते ेहो कक िैर पर ? अपिेआप पर । अिर और भी जितिे काय िहैं, कोई भी काम करिे के मलए, ककसी र्वषय का अिुभव करिे के मलए मि की याद हो िहीांआती । मि की िब याद िहीांकरतेहो तो, मुझ आत्मा के याद करिे में मि पैदैा होता है या ि याद करिे में ? मि को याद करिा, मि का स्मरण करिा, यहाांतो मि को पैदा करिा है। सबेरे िो हाल में बैिते ेहो िब, सबके सब, आि से साढे आि तक तो मि के निरोध में बैिते ेहो कक मि के अनिरोध में ? अनिरोध में । मि की स्मृर्तृ में बैितेहो या र्वरमृनृत में । मि का अनिरोध ही तो अिभ्यास है मि को रोककर िो ककया िाय उसका िाम अभ्यास है और मि किो रोककर ककया िाय उसका िाम अिभ्यास है। और अिभ्यास ही भिवाि आत्मा का गचन्ति है, िो अगचन्त्य रूप का निरूपण हो रहा है। अब एक प्रश्ि होता है कक िब में सवथा अपिेस्वरूप में जस्थत हूँ और स्वरूपस्थ होकर हमारे सारे व्यवहार हो रहे हैं तो िो तुम बैाते ेहो आधा घटा हाल में, तो क्या िरूरत है बैििे ेकी। ऐसा प्रश्ि करिा स्वाभार्वक है। और रात हदि सब काम स्वरू- पस्थता में हो रहे हैं तो एक घटां दो घटे अिभ्यास में बैििे ेकी क्या िरूरत है ? कोई िरूरत िहीां। अिर यह िम िाय तुमको । कोई िरूरत िहीांहै: इसका अिुभव करिे के मलए ही िरूरत है ।

अिर ये बात है, अिर तुम बीतरिा हो, प्रपचां से अलि हो, आिे ेपीछे कोई रोिे वाला िही ांहै, कोई र्डा पिीिी दिवाला िहीांहै, मरिे के पहले ेकक्रया कम िकर सकतेहो तो । िरि ये है-

बीतरार्भय क्रोिमुतिनमभरे्द पाररै्: ।
तनर्वकल्पो ह्ययं दृष्टः प्रपञ्चोपशमोडद्र्य: ॥

(िौ. पा. काररका वैतथ्य प्रकरण ३५)

िो बिडेबडेबीतरिा महात्मा हैं, कल्पिा रहहत जििका हृदय है, िो अमि लिो हैं और वैराग्य की मस्ती में रात हदि घूम रहे हैं। ससांार जििकी दृजठट में है ही िहीं, ि िीमें खुशी है ि मरिे में िमी है, ऐसेलिो चाहे बैिे चाहे ि बैिे । मिर भैय्या! तुम लो रात हदि प्रपचां में रहते ेहो, आि कोई िन्मता है तो कल को मरता है. आि बि रहे हो तो कल बबिड रहे हो । ये बवडांर है और वैराग्य है िही ां। या तो िृहस्थ हो रहो या बाबा ही बतो रात हदि तुम रहते ेहो प्रपचां में, बवडांर आता रहता है तुम लिो के ऊपर । उड िािेो बवडांर में । इसमलए अिभ्यास करिा बहुत िरूरी है। रात हदि िो सुि रहे हो, उसको कायाजिन्वत करो िहीांतो बद्ध ज्ञािी रहोिे। मुक्त ज्ञािी िहीांहोिे ेे। इसमलए बडी िरूरत है इसकी । और तुम लिोों में, िृहस्थों में ही हम प्रचार करते ेहैं। क्योंकक िृहस्थ दयिीय होते ेहैं। ककतिी ककतिी मुसीबतें िृहस्थों के ऊपर आती हैं। और इतिी मुसीबत झलते हुए भी सत्सिां में िाते ेहैं, िो कुछ बिता है दिा पुण्य करते ेहैं तो हम तो िृहस्थों का कल्याण करते ेहैं। तुम सबों के मलए ज्यादा िोर है। ये िो अलौककक ज्ञाि है कक तुम सब लिो आिन्द ले रहे हो। तो घटांा दो घटा इसका अभ्यास करिा बहुत िरूरी है। अभ्यास से ज्ञाि की जस्थनत पररपाक होती है। िुरु कोई मत्रां बताते ेहैं तो कह देते ेहैं, इसका एक लाख िप करिा, दस लाख िप करिा तो ये मत्रां मसद्ध हो िाता है। तो ये बताया िा रहा है, अिभ्यास करिेतो ये जस्थनत पररपाक

हो ािएँगे। कफर एक रस जस्थनत हो िायेगी । कफर कुछ करिे को तो हम बता ही िहीं रहे है। और कहो कक िबैमें कमर दुखुता है हम रोगी हैं। हम तो यह बता रहे हैंकुछ ि करिेकी िो अभ्यास में बैठें हो, बै िये आिन्दा में । िो वरक्त हैंउिके मलए वैराग्य साधि है जस्थनत पररपाक करिे के मलए और िृहस्थों के मलए अभ्यास का अभ्यास साधि है।

र्ैराग्य बोिौपुरुषस्त्य पक्षक्षर्त् ्पक्षौर्जानीतत र्चक्षणत्र्म

र्मुन्द्क्त सौिग्रतल धिरोणंताभ्या र्नानान्द्यती रणंमसध्यतत ।।१७।।

है िैसे ेकही ंपर पक्षी बैठा हो, एक पखां से कोई गचडडया िहीं बती्, उसी तरह मुमुक्षु रूपी पक्षी के दो पखां बोध और वैराग्य मोिस्वरूपज्ञाि और वैराग्य । अब वैराग्य का स्वरूप हम बताते ेहै। सुिो। 'अत्यतां वैराग्यवतः समागधः'

कहते ेहैं कक निर्वकल्प समागध का लाम ककसको होता है ? अत्यतां वैराग्यवाि को । अन्यतां वैराग्य का क्या स्वरूप है? क्या अत्यत वैराग्य ही है िो रामिी िे बताया है। यािी मुझ भिवाि आत्मा से मभन्ि कुछ िही ां। म सब हूाँ । वैराग्य का मतलब त्याि ही है ि ! वैराग्य के मािे त्याि । तो त्याि दो प्रकार का होता है। एक तो वर्षय के अजस्तत्व का और एक प्रपचां के वर्लास का।

जातनय तबहह जीर् जर् जारा् ।
जब सब र्षय र्लास र्रा् ।।

वैराग्य के दो प्रकार हैं। एक पर और एक अपर । वर्लास वैराि, िकक वर्षय वैराि । सन्त महात्माओ के सत्सिां से, शास्त्रों के वर्चार सिे प्रपचां से । आत्मा नित्य है प्रपचां अनित्य है, पुिः पुिः वर्चार करिे से वर्वेककी बुद्गध द्वारा प्रपचां के वर्लास का त्याि कर दिया, गचर्त् का खखन्ि हो िािा ये अपर वैराग्य है। पर िजि िजि वर्षयों का त्याि ककया है, उिउि वर्षयों का हृदय में अजस्तत्व बिा है । ये अपर वेरोग्य है। इस वैराग्य से गिर िािेका भय रहता है। लोि िब घर छोडते ेहै तो भिवाि के पास प्रनतज्ञा करते ेहैं कक हम ककसी के सामिे हाथ िही ांफैलायेंिे ेधि की यािचिा करेंिे ेपेड के िीचे ेसो िायेंिे े। ये प्रनतज्ञा करके निकलतेहैं। मिर भिवाि की माया बडी वर्गचत्र है। वो वैराग्य गिर िाता है। िैसे ही मक्खि निकालो और घी बिा लो तो इतिी खुशबू होती है कक घर महक िहा िाता है। और उसी मक्खि को दो माह रख लो तो कीड पड िायेंिे े। तो वैराग्य हुआ मक्खि और ज्ञाि हुआ घी । तो िब वैराग्य िि तो वैराग्यवाि के मलए सतां महात्मा ससांार में वर्चरिे की आज्ञा िहीं देते े। ऐसा ि हो कक वैराग्य मदां पड िाय । कफर प्रपचां िबो लिे ेतो इस वर्चार से वैराग्यवाि को ससांार में वर्चरिे की आज्ञा िही ांदेते े। खुठट न्याय सेवैराग्य को एकान्त में रहकर पकािा चाहहए और सद् शास्त्र मोिवेदान्त शास्त्र का वर्चार करे और इस खोि में रहे कक आत्म िैजठिक सर्त् ममले तो उिकी शरण में होकर आत्मा का अिुभव करे । िब तक बोध िहीं तब तक गिरिेका डर है। अब ज्ञाि का स्वरूप सुिो ।

'जातनय तबाहि जीर् जर् जार्ा,
जब सब र्ृषय र्ृलास र्ृागा ।।

ये अपर वैराग्य हैं। पर वैराग्य कहा ांहै अरण्यकाडां में

कहहय तात सो परम र्ृार्ृी, तृणृ सम मसद्धि तीतन रु्ण त्यार्ृी ।

यहााँपचां के अजस्तत्व का ही त्यिा हो िया । जिस ससाांर को छोडकर म ैंनिकला था वो हैं ही िही ां तीिकाल में । एक पखां तो ये हो िया। अब ज्ञाि का क्या स्वरूप है ? अपिेमें आत्मा को कुछ ि मािकर म ैंका म ैं ही िीिा, ये ज्ञाि है। मो मुमुक्षुपक्षी के दो पखां हैं। वैराग्य और बोध । तब तो निहदिठट स्थाि में पहुाँ- चता है। इसमलए अभ्यास करो िरूर ।

तो अगचन्त्य पद का वववेचि हो रहा है। तो में आत्मा अमिस्क हूाँ-

आत्मसत्यानुबोि न संकल्पयतेयदा ।
अमनस्तां तदायातत र्ा्ह्याभार्े तदग्रतम् ्।।

सत्य आत्मा के बोध हो िािेपर िब यह मि सकांल्प िहीांकता िसकांल्प रहहत होते ेही अमि पद को प्राप्त हो िाता है और ग्रहण त्यिा से रहहत हो िाता है। सत्य भिवाि आत्मा का बोध हो िािेपर मि सकांल्प और ववकल्प से रहहत हो िाता है, मि को ि रोको तो मि के ि रोकिे पर कफर मि ही कहा ांहै िो सकांल्प और ववकल्प करे। रोकिे पर तो सकांल्प ववकल्प है और ि रोकिेपर यह मि सकांल ववकल रहहत होकर अमिस्क पद िाम ैंहूाँ। आत्मा, उसको प्राप्त हो िाता है। कफर ि ग्रहण रह िाता है ित्यिा रह िाता है तो अभ्यास हम इसमलए समझा रहे हैं। परन्तु इतिा ख्याल िरूर रखिा चाहहए ।

दूसूरा प्रमाण-में स्वरूपस्थ हूाँ, स्वरूप में ही जस्थत हूाँ इसका क्या बात प्रमाण है ? इसका यही प्रमाण है कक ववचार के उदय और अिुदय आ में, ववकल्पो के उदय और अिुदय में मि के आिेऔर िािेमें, मि होत की जस्थरता में और चचलता में िब हष िशोक ि होय तब में स्व- अ रूपस्थ हूाँ। तब समझ लेिा कक यही स्वरूपस्थता की अिुभूनत है बत क्योकक मि को चचांलता और जस्थरता म, मि के आिेऔर िािे प्र में मि के उदय और अिुक्ष्य में िब ग्लानि और प्रसन्िता, यािी हष िऔर शोक तभी होिा िब पर भाव में रहिे। और िब स्वरूपस्थ हूाँ म।ैं िैसे ेमस्ती में बैिे होऔर कही ववशष आवाि आई तो मि चला िाता हैतो मि के चले िािेम क्या तुमको ग्लानि होती है या उसको रोकिे का प्रयास करते ेहो? और मि िब आ िाता है अपिेपास ही तब क्या हष िहोता है? िही।ां यही स्वरूपस्थता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। य अमिस्क पद समझाया िा रहा है। िब अभ्यास में बैिते ेहो, अभ्याि करिे के मलए तो तुमको देश काल की िरूरत है, कहाांबैिें, मिर अभ्यास का अभ्यास करिे के मलए तो बाआर में भी बैि सकते हो क्योंकक प्रपचां होिा तब ि हष िशोक होिा ।

एकमेर्ाद्र्तीययद र्ुरोर्ाक्येन तनन्द्श्चतम् ्।

एतदेकान्द्तममत्युक्त न मठो न र्नान्द्तरम् ्।।

ुरु के वाक्य द्वारा िब ऐसा र्वश्वास हो िया कक मुझ आत्मा के ममवाय दूसूरी सत्ता है ही िहीं तो कफर यही एकान्त है। यही र्निि है और ि मि एकान्त है ि वि एकान्त है। अब अभ्यास में िबि ेपर ये शब्द िैसे े(ताली) सुिाई पडी तो ये िो (तालो) सुिाई पडी या अक्षर वाला कोई शब्द सुिाई पडा । मिोहरलाल ये अक्षर बाला शब्द है । तो सुिाई तो पडे मिर िो शब्द सुिाई पडेउसके आकार में मि पररखणत ि हो। उसके आकार में मि अिर पररखणत होता है तो उसका िाम ही ससार है। और सुिाई पडिेके बावूद अिर मि पररखणत िहींहोता तो में भिवा आत्मा हूं। दोिों बातें बताई िा रही है। कफर सुिो। प्रपचां से हष िऔर शोक होता है तो प्रपचांाकार िब मि हािा तभी हष िऔर शोक हािा और हष िशोक ि हो यहद तो वो मि िहींहै, में आत्मा हूं।

बि देखो, प्रपचांाकार मि ि हो और प्रपचां के आकार में मि पररखणत हो ििो पर ही हष िशोक होता है। तो प्रपचाकार मि ि हो उसके मलए वही डडंा रखो- 'में हूं', शब्द में हू, स्पश िमें हूं, रुप में हू, रस िधां में हूं । "ओममत्येक्षर ममदां सवम्ि् । कुछ ही काल के इस तरह प्रयास से चाहे भैय्या तुम्हारे काि के पास कोई ढोल बिे,े उससेतुम्हें ग्लानि ि हािी । एक रस जस्थनत हो िायिी । हम वही र्वि बता्ििें जिसका हमेिअिुभव स्वय ां ककया है और हिारों साखों पर ककया है। ये साहहत्य िहीं है। ये प्रेजक्टकल है और स्वािुभव है। वो हगथयार ि फैकिा, िरुर रखिा वो हगथयार। प्रपचाकार िहींहोता तो हगथयार अपिे पास रखो। म ैंहूं कहिे की िरुरत िही ं है। और मि िबि लिेप्रपचां, म ैंहूं का मारो डडंा अरे मि ही ि रहिा। ये अगचन्त्य के गचन्ति के मलए ही है।

प्राणापानयोमध्यिे धचदात्मानयुयास्त्यते।
मननो मननंयत्य बुद्र्रेकिार् बोिनम् ्।

िो मि का मि है, बुद्गध की बुद्गध है और प्राण और अपाि दोिों के मध्य में िो बिा है उस गचदात्मा ब्रम्ह की हम उपासिा करते ेहैं। वही हमारा आराध्यदेव है ।

ऊध्र्व प्राण युन्द्नपर्त्यपानंप्रत्यस्र्यतत ।
मध्येर्ामनभासीनं र्ंश्रे् ेदेर्ा उपासते।।

िो प्राण को ऊपर फेंकता है और अपाि को िीचे फेंकता है प्राण और अपाि के बीच िो बिा है, ब्रम्हाहदक जिसकी उपासिा करतेहैं ।

िो बाहर से सासां लेतेहो, िो आक्सीिि है उसका िाम प्राण है। भोतर से िो हवा निकलती है उसका िाम अपाि है। िो प्राण और अपाि के मध्य में बिा है, प्राण भीतर िया और िाकर अस्त हो िया । अब िब तक अपाि का उदय ि हो, वायु िब तक बाहर िहींनिकला, दोिों के बीच में देखो, अब कौि है ? एक पल भर के मलये प्राण को रोककर देखो कफर । कोई सकांल्प िहीं, र्वकल्प िहीं। हमेशा रोकिे की िरुरत िहींहै। ये तो तुमको

अिुभव करिो के मलए बता रहे हैं। बबल्कुल सकांल्प रहहत अवस्था है। यही सता- ति ब्रम्ह अपिा स्वरुप आत्मा है। बबल्कुल कलिा रहहत अवस्था है । निस्सकांल्प । ये महात्मा भुशुद्दध की समागध है। ये भी भिवाि आत्मा के गचन्ति का एक प्रकार है। इसमें प्राण अपिा कुछ िहीांरोकिा पडता । प्राण वायु खट से जस्थर हो िाता है। ये ब्रम्ह पद है। परम पद है। साक्षात् ्सिाति ब्रम्ह का स्वरुप है। और हाथ से पकडकर थोडी बताया िाता है। स्वय ांही इसका अिुभव करिो।' अब झपिा उदय हुआ । अब िब तक प्राण का उदय ि हो, अब िब तक प्राण ि आवे,े काल िो खाता है वो प्राण को ही खाता है। इस अभ्यास के अभ्यासी को काल भी िहीं खाता । हम तो हमेशा लालानयत रहते ेहैं, तुम्हारे अन्दर क्या भर दें। अब इसकी कदर करिा, ि करिा तुम्हारे ऊपर है। वायु खीचिेका िाम पूरक है। िब तक ि निकले ेकुांभक और िहा ांनिकला रेचक ।

सगांध में िो ब्रम्ह का ध्यािा है, यही सध्या है। इसी पद को पािकर ही मािवता सफल होती है और मािव िीवि की यही सफ- लता है। प्रपच रुत्री ध्यािा अदा हो िया, म ैंही म,ैं मूल रह िया । इसी में िीओ । बस ।

नान्द्तः प्रज्ञम्् .... सर्र्ज्ञेयः

अब चार बि रहे हैं, आिा का प्रवचि यहीांसमाप्त होता है ।

ॐ पूण िमदः पूण िममदं, पूणात्पूिण िमुदच्यते ।
पूणस्त्यि पूणमािदाय, पूण िमेर्ार्मशष्यते े॥
ॐ शान्द्न्द्तः ! शान्द्न्द्तः !! शान्द्न्द्त !!!

षठ्मि् ्हदवस का प्रवचि
(शतनर्ारहदनांक१७नर्ंबरसन१९७३समय१०से १२ बजे)

ओममत्येदक्षर ....ओकारेर्

(सपूंाण िउपनिषद् पिा)

नान्द्तः प्रज्ञम् ्.... स र्ज्ञेयः

म ैंआत्मा ि भीतर को िााता हूां, ि बाहर को िााता हूां, ि म ैंप्रज्ञि हूां ि अप्रज्ञि हूां। म ैंभिवि आत्मा अदृठट हूां । अदृठट होते ेहुए अग्राह्य हूां, अग्राह्य होते ेहुए अव्यवहाय िहूां, अव्यवहाय िहोतेहुए में आत्मा अलक्षण हूां। और अलक्षण होते ेहुए में अगचन्त्य हूां। अगचन्त्य का र्वषय परसों भी हुआ था और कल भी हदि भर चला यहो र्वषय । िब म ैंआत्मा अगचन्त्य हूां। क्योंकक इस मत्रां में भिवती श्रुनत ि क्रमशः भिवि आत्मा का र्वशेषण हदया है । अदृठटम् ्में अदृठट हूां। ककसी करके देखा िहींाा सिकता। म ैंअदृठट हूां इसके बाद आता है अग्राह्य हूां । व्यवहार में िब िहींआता तो अलक्षणम् ्। अलक्षण ह ते हुए और अगचन्त्यम् ्(आकारु प्रकार ही िहींहै। ककसी प्रकार का मुझ आत्मा का लक्षण हो िहींहै तो अगचन्त्य हिाा स्वाभार्वक बात है इसमलए म ैंआत्मा अगचन्त्य हूां । तो िब में आत्मा अगचन्त्य हूां तो आत्म गचन्ति का क्या स्वरूप है ? आत्म गचन्ति का क्या लक्षण है जिसके सबांधां में कल खूब र्ववेचि हुआ है और सुन्दर सुन्दर अिुभूनतयाांआई हैंऔर कराई िई है। अगचन्त्य होते ेहुए अव्यपदेश, जिसके मलए ककसी ककस्म का सकेत ि हो । व्यपदेश के मिहोते ेहैं सकेंात के । में आत्मा अव्यपदेश हूां मिोसकेंात रहहत हूां । यानि जिसके मलए कोई इशारा है ही िही।ां ि तो दृजठट से कोई सकेंात ककया िा सकता है, हाथ से कोई सकेत िहीं, मि सेकोई सकेंात िही ांककया िा सकता, गचर्त् से जिसके मलए कोई सवेत िहींहै, और ि वाणी ही द्वारा कोई सकेंात है । वाणी द्वारा यहद मुझ आत्मा के मलए कोई इशारा हो तब तो ये भी कहा िा सकता कक में आत्मा सत् ्हूाँ, गचत हूाँ, आिन्द हूाँ, में आत्मा कूटस्थ हूाँ, साक्षी हूाँ, नित्य हैं, वाणी द्वारा कहिा भी तो एक सकेंात है ि । वाणी कह ही िही ांसकती जिसको ।

यतो र्ाचो तनर्तन्द्ते अप्राप्य मन सासत ।

आनन्द ब्र्ह्मणोर्द्रान नत्रबभोतत कुतश्चनेतत ।

'तैर्त्रीयोपनिषद'

अत्यपदेश में आत्मा क्यों अगचन्त्य हूाँ, क्यों कक अव्यपदश हूाँ । कुछ कहा ही िहीं िा सकता । जिस तरह । जिस प्रकार में आत्मा सहि हूाँ तो िब म ैंआत्मा सहि हूां तो मुझ आत्मा को िाििा भी सहि है। िो सहि होता है उसको िाििा भी सहि होता है। काल्पनिक पदाथ िको िाििा सहि िहींहोता, कहिि होता है। मिर िो

कल्पितातीत पदाथ िहोता है, तो कल्पित ित तो मसवाय मुझ आत्मा के र्वश्व में कोई पदाथ िहै िही।ां इसमलए में आत्मा सहि हूाँ तो मुझ आत्मा का ज्ञाि भी सहि है। िब में आत्मा सहि हूां तो मुझ आत्मा का गचति भी सहि है क्योंकक सहि का ज्ञाि सहि, सहि का गचन्ति सहि. सहि की प्राजप्त सहि, सहि का अिुभव सहि । सब सहि ही सहि है। और सहि की समागध भी सहि है। देखो जिति बिे हो दिोंों समिा में। म ैंहूां, अमुक र्वद्वाि, रि, िारी, बालक, युवा, वृद्ध, आजस्तक, िाजस्तक, में हू, ककसी को सहि हो और ककसी को कहिि हो ऐसा तो िही ां

है। िो म ैंहूां, ये जिस प्रकार एक प्रकाडां र्वद्वाि के मलए सहि है उसी तरह एक महिा् ्मच िके मलए भी सहि है। जिस तरह एक महिा आजस्तक के मलए में हूाँ जितिा सहि है उतिा ही ये कट्टर िाजस्तक के मलये भी सहि है। तभी तो सावभिौम है। सावभिौम उसको कहते ेहैं जिसका ससांार में कोई र्वरोधी ि हो । हरेक मसद्धातां के, हरेक मत के, हरेक मान्यता के जितिी भी चीिें हैं, म ैंआत्मा के मसवाय सब का कोई ि कोई र्वरोधी होता है परन्तु में हूां, इसका र्वरोधी र्वश्व में कोई िहीांहै। और किौ है िो अपिे में का र्वरोधी हिो। भाई । म ैंआत्मा सबके अिुकूल हूां । इसका र्वश्व में कोई र्वरोधी िही।ां कही ांभी चलिाओ, इस मसद्धातां की अव्याहत िनत है। अव्याहत िर्त् उसको कहते ेहैं कक कही ांभी िाि के मलए पासपोटि लेिकी िरूरत ि पडे। इसमलए इसकी िनत अव्याहत है । कोई

भी ससांार में इसका र्वरोधी िहीां।

िौ से पाांच छः साल की बात है। हम आखाँ की िाांच कर- वािे िए थेलुगधयािा । डाक्टर पिाक हैं। आई स्पेजश्लस्ट है। वो कुछ िीता विैरह पढ़ते ेरहते ेहैं । उन्हििे कहा । स्वामी िी ! आप क्या काम करते ेहैं मिैकहा निर्वरोध मसद्धान्त का प्रचारक हूां।

ससांार में सबके र्वरोधी ममलिें ेपर िो में हूां आत्मा, सबके अिुकूल हिोके कारण, इसका र्वरोधी कोई हिीांहै। यह निर्व- रोध मसद्धान्त है। और निर्वरिोध हिो के ही कारण में भिवाि हूां। िो में िाम से अमभव्यक्त हो रहा है, निर्वरोध हिोके ही िाते ेमें आत्मा भिवाि हूां। इसमें तुम्हें लक्षण मिलिो की िरूरत िहीांहै और वेदान्त की प्रकक्रया समझिो की िरूरत िहीांहै । अिर काई म ैंका र्वरोध करता है तो 'म'ैं भिवाि िहीां, और 'म'ैं का कोई र्वरोध िहीांकरता, ससांार में एक चीटी से लेकेर ब्रम्हा तक फोई र्वरोधी िहीांहै तो डकों की चोट पर में आत्मा भिवाि हूाँ । इतिा कह दिेा काफी है। अब में आत्मा भिवाि हूाँ. में भिवाि है तो ये लिो खझझकतेक्यों हैं? इस निश्चय में, इस धारणा में, इस मसद्धान्त में, इसकी अिुभूर्त् में लिो खझझकतेक्यों हैं-क्योंकक में का मतलब साढ़े तीि हाथ का लिाते ेहैं, इसमलए खझझकतेहैं। शरीर दृजठट को लेकर खझझकते हैं-में आत्मा सहि हूाँ और भिवाि भी सहि है ।

'जाहह न चाहहय …………….. सहज सनेह'

अिर भिवाि राम सहि ि होते ेतो वाल्मीकक िी ऐसा िहीांकहते े।

'जाहह न चाहहय कबहुुँ कछु, तुम सन सहज सनेह'

ीं सहि होता है उसके प्रनत प्रेम भी सहि होता है। बिावटी पि का काम ही िही ां है। सहि का ही सोंहि होता है। सहि में ही सहि समागध होती है और सहि का आिन्द भी सहि होता है। तो म ैंहूाँ इसका वरोधी कोई हीं ांहै । सवमिान्य मसद्धान्त है, इसकी - प्राजप्त भी सहि है । प्राजप्त सहि इसमलए है कक जिसको प्राप्त करिे के मलए ककसी प्रकार का साधि ि करिा पडे, भिविा आत्मा को पीिो के मलए ककसी प्रकार का, कुछ भी साधि ि करिा पडे। साधि तो कहिि के मलए करिा पडता है परन्तिु सव िहै, सव िका अपिा आप है, उसको प्राप्त करिे के मलए उसे ेहामाँसल करिे के मलए कुछ भी करिे की िरूरत िहीं ांहै। कफर ये कहो कक इसकी सरलता ही कहििाई है। िैसे ेराज्य वैभव, ये सब कहिि है, तो लोि इसके मलए साधि करते ेहैं, इसी तरह सहि स्वरूप भिविा परमात्मा भी कहिि होता तो लोि इसको कहिि ि मािते े। ककसी के पास धि िहीं रहता तो ककतिा कहिि पररश्रम करिा पडता है, धिविा बििे के मलए । स्त्रीविा बििे के मलए, रूपविा बििे के मलए । ये सब कहिि हैं। किर इिकी प्राजप्त करिे मलए लोि कहिि सेकहिि साधि करते ेहैं। इसी तरह भिविा भी यहद कहिि होता तो ये निर्वव द है कक लोि इसेकहिि िहीं ांमािते े। ये इतिा सहि है। स्वरूप आत्मा इतिा सरल है कक इसकी सर-लता ही कहििाई है। अब में आत्मा सहि का ज्ञाि भी सहि है । और उस ज्ञाि को पीिा भी सरल है ।

देखो-सहि ज्ञाि उसे ेमूख िमें, वद्वाि में, िर में, एक सा हो । िो सत्र में एक कहते ेह, िो सब में, पशु में, पक्षी में, िारी में, कीट में, पतिां में, िो सबमे रस हो । िो ज्ञाि कभी घटे और बढ़े िहीं, िो ज्ञाि कही ांबाहर से आता िही ांउसे ेसहि ज्ञाि कहते ेहै और यह सहि ज्ञाि ब्यापक होकर रहता है सबमें । सामान्य होकर और सहि रूप में । ककसी शाकाहारी के सामििेयिी िो घास फूस खाते ेहै िािवर, उिके सामििेतुम मासां रख दो, उसे ेज्ञाि हो िायिा कक ये मेरा खाद्य िहीं ांहै। ककसो मासांाहारी िािवर के सामििेघासां रख दो तो कभी ि खायिा । ये ज्ञाि उसमें भी है। देखो-तो पशुपक्षी में भी ज्ञाि है, तो ये ज्ञाि व्यापक होकर है। यह ज्ञाि उसमें व्यापक होकर है ।

एक बार हदल्ली की बात है। हमारे पास एक इजांनियर आये िवयुवक । कहिे लिे, स्वामी िो ! में कुछ समस्या हल करिे आया हूाँ । अच्छा ! में ये पूछता हूां कक क्या ईश्वर है ? मैंिेकहा- िी हाां। ररश्वतखोर में भी है ? िी हााँ। दूकािदार में भी है िो ममलावट करता है ? िी हाां । साधुओ ांमें भी है ? कहिा ही क्या। िब पापी के अन्दर ईश्वर है तो पापी को पाप करिे सेईश्वर क्यों िहीं ांरोकता ? ये प्रश्ि िरा िहटल है। अिर पापी के अदर भी ईश्वर है, तो पाप करिे से उसको क्यों िहीं ांरोकता, अिर उसके अन्दर व्यापक है? मैंिे कहा रोकता तो है किर वो मािता ही िही।ां कैसे ेरोकता है ? सुिो- कोई पापी, िैसे ेचोर है, दुरािचारी है, िो व्यजक्त पाप करिे के मलए िब तैयार होता है तो उसको इस बात का ज्ञाि होता है कक िो में करिे चला हूां, ये अच्छा काम है कक वरा काम है, ये पुण्य है कक पाप है, इसका ज्ञाि उसको है कक िहीं? पाप करिेवाले को होता है या िहीं ? होता तो है। अब बताओ कफर ये ज्ञाि उस पापी का है कक भिविा का है ? और क्या भिविा डडांा लिावे े। ये चोरी है, ये बुरा काम है, ये दुराचार है. िैसे ेअपिी बहू बेटी वैसेदूसरों की बहू बेटी । ये महा पाप है। ग्र हक को पीिा महा पाप है। िो तोला भर सोिा तौलिेके बिाय अिर दस माशा वो तौल रहा है, क्या इस बात को िहीं ांिािता भीतर वाला कक में दोरी कर रहा हूां । िकली चीि को ग्राहक को देता है, इस बात का ज्ञाि है कक िही।ां तो ये ज्ञाि उसका है कक भिविा का

? भोतर से धक्का देता है। खबरदार, इस काम को मत कर । करिे वाले की बुद्दध म र्ववेक रहता है तो रुक िाता है और िही हाता तो अवहेलिा करता है। उस आज्ञा का ।

सब में लबालब भरा हुआ है, िसिास । मिाो तब है, ि मिाो तब है। हर हालत में है। िो उर्त्र हदया हमिे उसको खूब स्पठट कर लिा हृदय में । िो अच्छा काम करता है, उसका भी ज्ञाि रहता है। ये िो भीतर ज्ञाि था वो ज्ञाि तुम्हारा िहीांहै। ये भिवाि का ज्ञाि है जिसका र्ववेचि हो रहा है। तो कफर ये िाि सहि है कक कहिि । भैय्या, यही सहि का स्वरुप है। य ज्ञाि कही ांसे प्राप्त िहीां ककया िाता क्योंकक भिवाि आत्मा तो ज्ञाि स्वरुप है हो । 'सहि प्रकाश रूप भिवाि ।' िहा ांकही ांभिवाि राम के मलए आया है, तो सहि ही । 'सहिहि चलेराम रघुराई ।' 'िांकर सहि स्वरुप सम्हारा ।' क्योंकक भिवाि राम सबकी आत्मा हैं और शात्मा हिोके िाते सहि हैं। अरण्यकाडां में भिवाि की स्तुनत में मलखा है, तुलसीदास िी ि । हे रघुपते ! म ैंसत्य कहता हूां कक आप सारे चराचर की आत्मा हैं। यिो सबके में हैं। रामायणी बिै हों तो देख लें । सुन्दर काांड का है ये श्लोक ।

नान्द्यास्त्पृहा रघुपते हृदयेऽस्त्मदीये सत्यं दार्मम च भर्ानणखलान्द्तरात्मा ।
भत्ररतं प्रयच्छ रघुपुंर्र्तनभरिां में कामाहददोष रहहतंकुरू मानषं च ॥

तो िो सव िका म ैंहो, िो सव िका सव िहो, सव िमें सव िरुप से होकर रहे वही भिवाि है, िो भिवाि है, वो
सहि है। िो सहब है, निर्वरोध है, िो निर्वरोध है, सावभौम है। सब में लबालब भरा हुआ है। अिर भीतर से ये ज्ञाि ि हो कक िो तू कर रहा है रो भला है कक बुरा है, िीनत है कक अिीनत है। अिर ये ज्ञाि िहीांहै तो समझिा उसके अन्दर भिवाि िहीं है। ये निर्त्ात असभव है। कोई झूि बोलता है तो भीतर वाला समझता है कक में झूि बोल रहा हूां। कोई भी शराब पीिे के मलए तैयार होता है तो िाता है। कक समिा इसका र्वरोध करिा। पररवार इसका र्वरोध करिा । ये अच्छी चीि िहीांहै, ये ज्ञाि शराबी का िहीांहै। ये ज्ञाि भिवाि का है। तो भैय्या िो चौपाई में सहि प्रकाश शब्द आता है, तो सहि प्रकाश से ज्ञाि को लिा, वो भिवाि का रुप है । भला इसमे प्रत्यक्ष भिवाि क्या हदखाया िाय । यह िाि ि पढ़िेमलखिे से ममलता है, ि कोई इसको मसखाता है.ि ककिो साधि से ममलता है तभी तो सहि है ।
ये िो सहि ज्ञाि है, यही तो में हूां। अब यहाांपर एक शका बारीक आ िई । स्वामी िी ! िो पुण्य पाप का कता िहै, वो क्या म ैंिहीां, अिर में आत्मा हूां सहि ज्ञािस्वरुप हूां तो सहि ज्ञािस्वरूप में आत्मा से पुण्यपाप करिे वाला मभन्ि है? िी हाांमभन्ि है। क्योकक अपिेआपको कुछ मािकर ही पुण्य पाप करता है तो फट से में से अलि हुआ ।

सहि ज्ञाि स्वरुप में आत्मा हूां, पुण्य पाप िो करिा है तो पुण्य पाप करिे वाला सहि ज्ञाि स्वरुप आत्मा से क्या अलि है ? िी हा अलि है। कैसे े? वो कुछ मािकर ही तो पुण्य पाप करता है। और िहा अपिे को मािा तो भिवाि से फट से अलि हो िया, मभन्ि हो िया और मभन्ि हिोवाले से ही भिवाि भीतर से कहता है कक िो ये कर रहा है, य पुण्य है और ये पाप है। धन्य है इस अध्यात्म को कक र्वश्व में भिवाि का साक्षात् ्दशि

करा दिवाला यहद कोई मसद्धातां है तो वेदात ही है। बबल्कुल दूधू का दूधू और पािी का पािी कर हदया। और देखो यहद अपिे आपको कुछ ि मिाा तो कफर वही भिविा है और उस भिविा से ि पुण्य हिाा रुपाप । उस भिविा के देश में ि पुण्य है और ि पाप है । प्रपच ही िहीांतीिकाल में । तो भैय्या ! आिा ससाांर के जितिे भी क्षत्र है. क्या धाममकि, क्या सामाजिक, क्या राििैनतक, इस अध्यात्म चेतिा से शून्य हो रहे हैं। और अध्यात्म चेतिा से शून्य होिेके हो कारण हरेक क्षेत्र में अिाचार हो रहे हैं, तो िरुरत आि के समार को इस चीि की है। आि का ससाांर, आि का युि, आि का ििमाि, हाथ फैलाकर तुमसे अध्यात्म ज्ञाि की याचिा कर रहा है। ककसी का हृदय िािू से िही ांबदला िा सकता । इस बहहरांग िािू से, वाह्य ििित के िािू से अतांििि का िो हृदय है उसका पररविि िहीांहो सकता । अतांििि का िािू यही है िो सुि रहे हो । और यह अतांििि का िािू सब पर लािू होता है.। कुछ लोि हमें कभी कभी कहते ेहैं, पढ़े मलखे वद्विाि- स्वामीिी ! आप का िो भाषण है, निरुपण है, प्रवचि है, इसका तो ब्राडकास्ट होिा चाहहए । में कहता हू्ां- िाम तो हमें चाहहए िहीांऔर ि हमको कीनत फैलािी है दुनिया ांमें । पेंडाल भर के मलए िही ांहो रहा है ये ब्राडकास्ट । देखो मांिलाचरण में सुिते हो- अिन्त िाम-रुपों में अमभव्यवत्, अहम्त्वे प्रस्फुररत, सकल चराचर, तो यहीांतक के मलए थोडेहै । ये आवाि तो तीि लोक तक िा रही है। ब्रम्हलोक तक िा रही है।

समझो वषय । सहि ज्ञाि । सहि ज्ञाि ये है जिसकी अिुभूनत अभी कराई िई । सब में बबल्कुल यह ज्ञाि ककसी से ममला िही।ां इस ज्ञाि को ककसी िे पढ़ाया िही ां। इस ज्ञाि को ककसी िे मसखाया िहीां। ये ज्ञाि सब में बबिा प्रयास के ओतप्रोत है । और यह म ैंआत्मा हू्ां । ये िो सहि ज्ञाि है, वह मुझ आत्मा का सहि स्वरुप हैं और ये िो सहि ज्ञाि है, यही तुलसी का राम है, सूर का श्याम है, िोवपयों का कृठण है, मीरा का गिरधर है, ईसाइयों का ईसा है। आजस्तकों का 'है' है और िाजस्तकों का 'िहीां' है। यह सहि ज्ञाि है। बबल्कुल ओतप्रोत । लबालब भरा हुआ है। मिर अव्यपदेश, जिसके मलए कोई सकोंत िहीां। य सहि ज्ञाि के मलए क्या सकोंत है-कोई सकोंत िही,ां कोई इशारा ही िही ां। और इस सहि ज्ञाि का ज्ञाि महात्मिा कराते हैं। िो सहि ज्ञाि स्वभावतः मसद्ध है उसको िुरुिि लखातेहैं। िैसे ेतुम लख रहे हो और हम लखा रहे हैं। और इसी अिुभूनत को सहिािुभूनत भी कहते ेहैं। इसका आिन्द भी सहिािन्द है । परन्तु देखो भैय्या-एक आिन्द तो ऐसा होता है कक जिसमें मि वभोर हो िाता है। मि और इजन्रयाांसबके सब वभोर हो िाती हैं। और एक आिन्द ऐसा होता है कक मि भि-वि हो िाता है। मि वभोर हो िाता है। मिर मि वभोर हो ििोके बाविूद मरता िही ां। मि मरता िहीां, मि बिा रहता है। जिसमें क्षखणक आिन्द कहो, िश्वर वषयािन्द । मोिसमागध तक का आिन्द भी वषयािन्द है भिला । समागध भी वषयािन्द ही है। वो चाहे घटों भर की समागध हो चाहे एक कल्प की हो । क्यों कक समागध तो कभी ि कभी टूटेिी । और समागध का आिन्द िो है वह भी वषयािन्द है । मि मरता िही,ां मि कायम रहता है। मिर िो सहिािन्द है, िो सामान्य आिन्द है उसमें तो मि रहता ही िहीां, मि में हो िाता है। मि सहि हो िाता है। मि का बूिद हो खतम हो िाता है। क्षखणक आिन्द में वषयािन्द में तो लोंटि खडे ेहो िाते ेहैं। आ-हा-हा। मि के वभोर होिेकी ये िाति है। मिर िो महिािन्द है उसमें ि आ-हा-हा है ि ओ- हो-हो। शान्त । इसमें शाजन्त का अिुभव होता है। अरे मि हो िहीांरहता तो वभोर कौि होिा । इसमलए एकाएक इस पर वश्वास िहीां होता क्योंकक इसमें रसास्वाद है िहीां। शून्यता की प्रतीनत होती है। जिस तरह ककसी व्यजक्त को राबत्र के अधांकार

में, िििनि प्रदेश म उसको वैताल का भ्म होता है, उसी तरह भि- बिा आत्मा के अज्ञिा के कारण अज्ञिाी को, यद्यर्प सब कुछ है, िूिन्य िहीांहैं, पूण िहै परन्तु वह पूणतिा में शून्यता का अिुभव करता है। यही सहिावस्था है। ये ही सहि पद है और यहो राम, कृठण, मशव, अपिा आप है, स्व स्वरूप भिविा आत्मा में हूां इसमें कोई सकोंत हिीांहै और सकोंत रहहत हिो के कारण अव्यपदेश है। इशारा कुछ िहीांहै इसके मलए ।

महारिा ! तुम तो ज्ञिाी पुरुष हो, म ैंतो अज्ञिाी हूँ, ये कह कैसे रहे हो तुम ! अरे, तुझे ेज्ञिा का भी ज्ञिा है, अज्ञिा का भी ज्ञिा है जिस ज्ञिा से ज्ञिा अज्ञिा दििों को िििा रहा है वो भिविा आत्मा ििाी और अज्ञिाी कैसे े ? सहि ज्ञिा के अिुभव में ज्ञिा और अज्ञिा दििों का अत्यन्ता भाव है। देखो-

हष िर्र्ाद ज्ञान अज्ञाना, जीर् िरम अहममतत अमभमाना ॥

तो भैय्या इस सहिािन्द में, इस सहिािुभूनत में िोस्वामििी ि कहा है-

शोक मोह भय हरष हदर्स तनमश, देश काल जहें नाहीं।
तुलमसदास अस दशाहीन संशंय तनमूलि न जाहीं ं॥
रघुपतत भर्तत करत कहठनई ।।

यहााँपर ये प्रपचां है ही िही ां। बबल्कुल अर्वचल, अर्वरल, अटल, अचल, ऐसा है ये पद, इसमलए में आत्मा सहि हूँ । मुझ आत्मा का अिुभव सहि है । सहि ज्ञिा स्वरूप का िो अिुभव ककया है उसके मलए कुछ ककया था या कभी कुछ करके अिुभव ककये हो ? िही।ां ये बात । हमें तो अिुभव करिे में कोई मेहित िहीांपडती । अिुभव करिे वाले को भलेहोय । हमें कोई पररश्रम िहीां। इसमें क्या मेहित है। इस पर अिर कोई कलई हो, कोई बिावटी पिा हो तो कफर इसको देखिे ेऔर हदखािे ेमें मेहित हो। अरे िैसा है वैसा ही लखा हदया ।

हाांिि ! सहिािन्द, सहिावस्था, सहि समागध । सहिािुभूनत की अिुभूर्त् कराई िई । अब सहि समागध का अिुभव करो ।

िि समागध बबिा लिाये लिी रहे, िो समागध लििी ि पडे, जिसके मलए देश काल की अपेक्षा ि हो, िो स्वाभार्वक लिी रहे, बबिा प्रयास ही, इस समागध को सहि समागध कहते ेहैं ।

सहि समागध गचर्त् की िहीांहै, सहि समागध बुद्गध की िही ांहै, सहि समागध मि की िहीांहै। सहि समागध तो मुझ आत्मा की है। सम मिोबराबर हो िाय धी मिोबुद्गध जिस अवस्था में उसका िाम ही सहि है। बि में हूँ इसकी अिुभूनत की तो बुद्गध भी सम हो िाती है। कल तो हदि भर यही र्वषय चला है। िो कुछ भो तुम व्यवहार करते ेहो, सहिावस्था में करते ेहो कक बिा- वटी में ? सहिावस्था में । िब सहि ज्ञिास्वरूप में आत्मा हूँ तो ककसी भी व्यवहार के पालि करिे में म ैंआत्मा सहि ज्ञिा स्वरूप रहता हूां कक िहीां ? रहता हूां। तो व्यवहार हो रहा है ? व्यवहार का हिोपिा बिावटी पि में मसद्ध है या सहिावस्था में मसद्ध है ? बिावटी पि में । िििाा

बिावटीपिा है और ि मिंाा सहिपिा है वो त मिंोमें कुछ िही ां और मिंोमें व्यवहार हो रहा है। मिा कैसे े हो अपिे आपको तो व्यवहार हिोा मसद्ध होता है। और मिा- कर के ही व्यजक्त व्यवहार में सलांग्ि होता है। और व्यवहार हो मिंोके बाद उसका अपिेआपको कता िमिाता है, मिर व्यवहार के व्यवहार काल में कतापिि का मिा िही ांरहता। वही तो सहिावस्था है, वही सहि समागध है। घर से िब चलो-कहा ांि रहे हो दाऊ ? कथा हो रही है-महामाया महांदर में, वहाां िा रहे हैं। बिेतेतक तुमि मिाा कक में श्रोता हूाँ । यह व्यवहार पिा है। मिर कथा के श्रवणकाल में श्रोता, श्रवण और शब्द ये तीिों का अभाव हो िया । ये सहिपिा है। यह बताया िहीां, पकडाया िा रहा है। ये सहिपिा है। अब कथा बदां भई, तब इसके बाद श्रवण की िो मान्यता थी उसकी स्मृनत कफर आ िई कक इतिी देर सुिा। वही िी िी के मरिा । एक ढक्कि तो पहले ेवाला और एक ढक्कि बाद वाला, दोिों ढक्किों के बीच ये सहिपद छुपा है। भला कोि िािोइसको । इसमलए ये कृपा साध्य है । साधि का र्वषय िही ांहै। एक मान्यता रूपी ढक्कि पहलेका, इतिी देर मैंसुिा । ये व्यवहार है तो ये दोिों ढक्कि है। दोिों ढक्किों के बीच में ये सहिपद छुआ है ।। इसमलए ढक्कि को उभारिा सन्त शरण की दिे है। चाहे मलखो, पढ़ो, चाहे योि करो, समागध लिाओ, वैरिा लो । सन्त शरण से ही ये पद सुलभ होता है । कफर शकांा हो िई। अब यहाांहोती है शकांा–िब अिुभव कर मलया, सतां शरण से ये सहि- पद की अिुभूनत हुई तो क्या मान्यता िहीांरहती ? िहीां। मिाा ऐसा ही रहिा । परन्तु मान्यता में िो आस्था है, सत्यता है वह िहीांरहिी । तो वह िो बीच वाली अवस्था है, ढक्कि वाली वह रह िाती है। वह तो रहती है। बाकी दोिो ऊपर िीचे ेके ढक्कि हैं उिके प्रनत आस्था िहीांरहती ।

जासु सत्यता ते जड माया । भास सत्य इर् मोह सहाया ।।
ये प्रभु प्रसाद कोउ पार् ।

मृि तृठृणा का िल सबको हदखता है, मिर मिुठय िो है उसमें पािी को िहीांिाता क्योंकक िािता है कक है । दरअसल यहााँपािी िहीं है बूदां भर भी। मिंृल में आस्था िहीांहोती क्योंकक उसको सूय िसूय िका कररश्मा मिर उसको उस का ज्ञाि है। और िािवर को मो हररण को इसमें आस्था होती है और उसको सत्य मािकर वो पािी के मलए दौडता है उसी तरह से िो िित प्रपच है, व्यवहार है, मिंृल है, भिवाि सहि ज्ञाि स्वरुप सूय िके समाि स्वय ांप्रकाश आत्मा का ये कररश्मा है, ये चमत्कार है कक प्रपचां व्यवहार तीि काल में ि होते ेहुए भी सत्य सा भासता है। तो इसमें बोधवाि की आस्था िहीांरहती। बाकी बोलता है, चालता है। िैसैसरािि की दुकाि में िब आभूषण खरीदिे िाते ेहो तो सोिा हो खरीदा िाता है और सोिा ही बेचा िाता है। आभूषण ि खरीदा िाता है, ि आभूषण बेचा िाता है। सरािि की दृजठट स्वणांकार होती है ।

मिर वो कहिा तो, कहिा कक भैय्या-आलमारी से हार निकाल दो । ये ि कहिा सोिा निकाल दो । काि की बाली तो निकाल दो, झूमका निकाल दो । देखिे ेके मलए बोलचाल में जिस आभूषण का िो िाम है, कहो कहिा, मिर आस्था आभूषण में ि रहिी। उसकी आस्था सोिेमें होती है। इसी प्रकार आत्मा का अिुभव हो िािो पर प्रपचां में, कजल्पत पदाथ िमें आस्था िहीांहोती लेककि बोल में, चाल में, व्यवहार ऐसा ही रहता है िैसा पहले ेथा। दृजठट बदल िाती है। वो हमेशा ही सहि पद पर आसीि रहता है। कभी उसको भ्ाांत िही ांहोती । यही ज्ञाि का

फल है। यही ज्ञि की महहमा है। तो अज्ञिी को िब वर्कार आता है, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सुर, तब वह अधांा हो िाता है। कामान्ध, मदान्ध, कफर उसको अपिेपराये का वर्वेक िहीं रहता । परन्तु स्वरुप ज्ञिी ये िाता है कक ये काम है, ये क्रोध है, ये लोभ है। िरुरत पडी तो उसका इस्तेमाल करता है, िरुरत ि पडी तो त्रुटकी बिाकर भिा देता है । बोधवाि को बोधवाि ही िाि सकता है। क्योंकक एक ही व्यवहार होते हैं तो क्या पहहचािा करिे कक ज्ञिी है कक अज्ञिी है। िो पूण िरुप सेसहि पद में जस्थत होता है उसके सब िुलाम होते हैं। वर्कार िुलाम हो िाते हैं, मि िुलाम हो िाता है। सब पर उसका आगधपत्य हो िाता है। िीव सवका िुलाम होता है। मिर भिवाि ककसी का िुलाम िहीं होता । तो तुमको भिवाि का ज्ञि कराया िा रहा है। मसफि मान्यता ही तो हटाई िा रही है। ऊपर िीचे का ढक्कि उघारा िा रहा है। बीच की िो चीि है। वही लखाई िा रही है क्योंकक में आत्मा सहि ज्ञि स्वरुप अव्य- पदेश हूं यिािी मुझ आत्मा के मलए ककसी प्रकार का सकेंत है ही िहीं कक म ैं ऐसा हूं। म ैं ऐसा था । ज्ञि प्राप्त ककया, इस समय ये हो िया। कुछ िहीं। िैसा में पहले था, िहां में पहले था, वही वैसा ही में अब हूं, वैसा ही आिे रहूंिा। क्योंकक में आत्मा सहि हूँ तो। िान्तः प्रज्ञम्... प्रत्ययसारम् उपनिषद् की भाषा में वर्श्वीय पदाथ ि को प्रत्ययसार कहते है। प्रत्ययसारम् । देखो दो प्रकार के पदाथ होते हैं- एक वर्श्वसिीय एक आदरणीय । िो वर्श्वास करिे योग्य हो, िो वर्श्वास पात्र हो उसको वर्श्वसिीय कहते हैं और वर्श्वास पात्र िहीं है, आदर का पात्र है, उसको आदरणीय कहतेहैं। तो सारा ससांर आदरणीय है। तुम िृहस्थ हो, तुम्हारी पत्नी वर्श्वसिीय िहीं है, आदरणीय है। पुत्र पर वर्श्वास करिा उगचत • िहीं है क्योंकक िीकी िारन्टी ककसी की िहीं है। धि पर अिर वर्श्वास करो कक इसी तरह लखपती, करोडपती हमेशा रहेंिे तो धि भी वर्श्वसिीय िहीं है, आदरणीय है। उपेक्षा का पात्र िहीं है। आदर का पात्र वह है मिर वर्श्वास पात्र िहीं है। धि का - दुरुपयोि करिा । िहां एक रुपये की िरुरत हो वहांदस रुपये खच िकरिा । िहां खच िकरिा चाहहए वहांवैसा खच िकरो । मिर ऐसा वर्श्वास ि करो कक ये सपांर्त् हमारे पास रहेिी। इसमलये महात्मा - िण लक्ष्मी को वेश्या कहते हैं क्योंकक वेश्या एक की िहीं होतो । और वेश्या की दृजठट में िात पात का परहेि ही िहीं होता । आि लक्ष्मी वर्द्वाि ब्राम्हण के पास है कल ककसी िीच कुल में चली िाती है तो उस पर वर्श्वास करिा ये बेवकूफी िहीं तो बुद्गधमािी है? इममलए िो वर्रक्त सन्तमहात्मा है वो ठोकर मारते हैं, उपेक्षा करते हैं। तो ससांर आदरणीय है वर्श्वसिीय िहीं है। अिर कहो शरीर वर्श्वसिीय है, वर्श्वासपात्र है। आि इसको खखलाओ, पहहिाओ। मिर पता िहीं ककस वक्त ये भी शातां हो िाय । आदर करो । मिर वर्श्वास ि करो, ऐसा ही बिा रहेि । पता िहीं कब धोखा दे िाय । देखते देखते आखां बदां हो िायि इसमलए इजन्द्रया भी वर्श्व- सिीय िहीं है। मि पर वर्श्वास मत करो। कभी बुरे में िाता है, कभी भले में िाता है, कभी निन्दा करता है, कभी स्तुनत करता है। इसमलए मि भी वर्श्वसिीय िहीं आदरणीय है। गचर्त् पर वर्श्वास मत करो, बुद्गध पर वर्श्वास ि करो । सासां अदांर से निकल कर बाहर िाता है, और अब आता है भीतर कक िहीं आता, इसका वर्श्वास िहीं। आदरणीय है, मिर वर्श्वसिीय िहीं है। उपेक्षा के पात्र िहीं है । प्राण को उपेक्षा क्या है ? करेन्ट पकड लिा, ममट्टी का तेल डालकर िल िािा, हत्या कर लिा । तो उपेक्षा मत करो आदर करो, मिर वर्श्वास मत करो । तो िरि ये. है शरीर प्रपचां धोखेबाि हैं । सबमें धोखा है, वर्श्वास मत करो। तो प्रश्ि होता है। वर्श्वसिीय क्या है ? तो वर्श्वसिीय तो मसवाय में आत्मा के कुछ िहीं। वर्श्वास करिा है तो अपिे आप पर करो। में आत्मा ही वर्श्वास पात्र हूं । देखो, िाग्रत अवस्था में सुषुजप्त अवस्था में ककसी काल में ऐसा

टाईम आता है कक म ैंआत्मा ि रहूं। ि हीं आता। यिी अपि अभाव का अिुभव कभी करता है ? ि ही। ं ि ो हमेशा रहे, घटे ि हीं, बढ़े ि हीं, बधें ि हीं छूटे ि ही। ं ि ो जिन्मा हिो उिके मलए बधां कहा ं और मोक्ष कहा ं। बधां मोक्ष तो िवि देश का िकिू है। मिर मुझ आत्म देश में बधां और मोक्ष का वकल्प ि हीं है। में ही वश्वास पात्र हूं। अपि आप पर वश्वास करो। और जिसको अपि आप पर वश्वास ि हीं होता उसको भिवा पर भी वश्वास ि हीं होता। आत्म वश्वास ही भिवा पर वश्वास है। और आत्मनिठा ही भिवा निठा है और वही निभयिपद है और जिसको ि आत्म वश्वास है और ि भिवा पर वश्वास है उसकी जिन्दिी अन्यथा मसद्धी है। अन्यथा मसद्धी उसको कहते ैहैं िैसे ेकुत्ते् की पूछ। कुत्ते् की पूछं ि ो है वो ि तो मूलद्वार ढांक सके ि ं मच्छड मक्खो भिा सके। तो जिसको भिवा पर वश्वास ि हीं उसकी अन्यथा मसद्धी है कुत्ते् की पूछं िैसे े। जिसको अपि पर वश्वास ि ही ं और भिवा पर, दिों वश्वास ि हीं उसका िीवि व्यथ ि है। उसका िीिा ही मरि है। वो भले अपिी दृजठट में समझेकक म ैं जिन्दा हूँ, लेककि मुदा ि है।

सारा ससांर आदरणीय है और में वश्वसिीय हूँ।

समय २ बजे से ४ बजे तक

आत्म जिज्ञासुओ !

नान्द्‌तः प्रज्ञम् ्न बहहः प्रज्ञस्..................... स् र्ज्ञेयः

उस समय के प्रसिां में प्रत्ययसार का ववेचि हो रहा था और अभी भी वही है। प्रत्ययसार कहते ैहैं वश्वास पात्र को। ि ो - पदाथ ि वश्वसिीय होता है वश्वास करि योग्य। जिसमें कोई धोखा - ि हीं और ि ो िमिो योग्य ि ही ं ि ो पदाथ िििि ो योग्य होता है, उसमें धोखा ि हीं होता और वही वश्वास पात्र कहलाता है। बाकी देहादक प्रपचां मिो ि ाते ैहैं। सारा प्रपचां मिाा ि ाता है िििा ि हीं िाता।

प्रत्यक्षेणानुमानेन तनर्मेनात्मसंर्र्दा।
आद्यन्द्‌तर्दसद् ज्ञात्र्ा तनःसंर्ोर्ं्चरेहदह॥

श्री मद्भा० ११

प्रत्यक्ष प्रमाण, अिुमाि प्रमाण, शब्द प्रमाण अिुभव प्रमाण. चार प्रमाणों से िो मसद्ध ककया िाता है,
चारों प्रमाणों से िो प्रमाखणत होता है वही पदाथ िसत्य है और वही पदाथ िर्वश्वसिीय है। प्रत्यक्ष प्रमाण ककसको कहते ेहैं ? िैसा हदखाई दे, िैसा देखिेऔर सुििे में आवे, उसी प्रकार अपिे मूल भाि में भी ममले े। वैसे ती रज्िु ू में सप िभी प्रत्यक्ष है। अधेरे में िो सप िहदखाई देता है, रज्िुमें, अरे प्रत्यक्ष ही तो है । प्रत्यक्ष ि हो तो भयकपि िलेे। है तो प्रत्यक्ष वो भी, परन्तु प्रकाश में िहीांहदखता, प्रकाश में िहीांरहता । प्रकाश होिेपर इस सप िका अभाव हो िाता है। वो प्रत्यक्ष प्रमाण दो प्रकार का होता है । एक बूढ़ प्रत्यक्ष एक अदृढ़ प्रत्यक्ष । तो रज्िुमें िो सप ि हदखाई देता है वो अदृढ़ है मिो अघरे ही तक है और अधकार के िाश में तो सव िका भी िाश हो िाता है। वो प्रत्यक्ष तो है पर दृढ़ िहीांहै। प्रत्यक्ष प्रमाण उसको ही कहते ेहैं कक िैसा वो देखिे ेऔर सुििे में आवे ेतो मूल में भी वैसेही रहे उसको प्रत्यक्ष प्रमाण कहते ेहैं । में आत्मा प्रत्यक्ष हूाँ और ककसी से अप्रत्यक्ष िही ांहूाँ। सबको प्रत्यक्ष हूाँ सबमें प्रत्यक्ष हूाँ। िो पदाथ िर्वश्वसिीय होता है, िोखा रहहत होता है, र्वश्वास करिे योग्य होता है, ये भी निर्ववाद होता है कक वह अिेक ि होकर सबमें एक होता है। इसका क्या प्रमाण है कक में सव िमें एक हूाँ। अिेक में में एक हूाँ इसका क्या प्रमाण है ? देखो-यहद अिेक में में अिेक होऊ । में आत्मा का िो िीििापि है, यहा ांपर िादा हो (स्वामी िी अपिेतरफ सकेत कर रहे है) और शरीर में कम हो, ककसों में ज्यादा हो ककसी में कम हो तो में एक ि होकर अिेक होऊ । जितिा और िैसा और जिस प्रकार में यहाांििीता हूाँ, इस देश में रहकर, उतिा ही, वैसा हो, उसी प्रकार से सबमें रहकर िीता हूाँ । िीििोपिेमें यहद न्यूिागधक हो अिर कम ज्यादापिा हो तब तो ये कहा िा सकता है कक हाांमें एक िहीांअिेक हूाँ। स्वामी िो ! यहााँपर एक शकाां होती है । तो कफर में िब सबिेएक हूाँ तो कफर तुम ब्रम्ह र्ववेचि कर रहे हो उसी प्रकार में भी क्यों ि करूां, यहद सबमें एक हूाँ तो । ब्रम्ह तत्व का र्ववेचि करिा, र्वश्लेषण करिा ये में का काम िहीांहै। ये बुद्गध का र्वषय है ये - पाडांडत्य है। इन्हीांबातों को लेकर लोिों को इस प्रकार की शकाां - होिा स्वाभार्वक है। न्यूिागधकता हदखाई देती है । िो में िद्दी पर बैिा हुआ शेरीर है, इसी प्रकार में क्यों ि निरूपण करूां कफर । तो ये में का काम िही ांहै, ये बुद्गध का र्वषय है। देखो िैसे ेमहा- सािर भरा है। ककतिा िल है, ककतिी िहराई है ये पता िहीां। अब जिसके पास जितिा छोटा बडा पात्र हो, समुर से भरकर ले आवे े। समुर तो एक ही है। उसी प्रकार में आत्मा ज्ञाि सािर हूाँ। "पुरुष प्रमसद्ध प्रकाशनिगध, प्रिट परावर िाथ" 'ज्ञाि अखडां एक सीतावर' । लबालब हूाँ । सब प्रकार से पूण िहू । ककसी चीि की मुझ आत्मा में कमी िहीांहै। पूण ि ज्ञाि सािर में आत्मा भरा हुआ हूां। अब जिसके पास बुद्गध रूपी पात्र जितिा छोटा बडा हो, निकालो, भरो । म ैं आत्मा तो सबमें ज्ञाि पुि एक सा हूां। ककसी की बुद्गध छोटी होती है, ककसी को बुद्गध बडी । उमको उतिा ही ज्ञाि रूपी िल ममलेिा, जितिी वो होिी उतिा ही ज्ञाि ममलेिा । तो ये बुद्गध का काम है। इसमें हम प्रारब्ध िहीां मािते े। करम में यही मलखा था। ये सत्र बात शखां ढपोरी ह।ैं तुमिे कोमशश कब ककया । आत्म ज्ञाि सािर भरा हुआ है। तो तुमिे कोमशश ककया? कक हमारे पास. ज्ञाि आ िाय । सव फालतू बात है। करम क्या करिा । हम प्रारब्धवादी िहीांपुरषाथ िवादी है। ये बात भारत में है. बाहर िहीांहै। प्रारब्ध क्या है, सपिे में भी इसका िाम िही ां है। और सब तरक्की कर रहे है। कोई काम िडबड हो िाता है तो अपिा दोष देते ेहैं कक यार हमसे िलती हो िई । मिर भिवाि िे बबिाडा, या प्रारब्ध में यही मलखा है, येबात र्वदेश में ि सुिो । इसमलए देखो ककतिी तरक्की कर रहे हैं। ये हमारे ही देश में है। बीमारी। और बबिा तत्व बोध के ये बोमारी िाती िहीां।

'सो परत्न दुखु पाई...........................

कोई काम बबिड ़िया तो क्या करें भैयै्या-हमारे करम में ऐसा मलखा था। भिविा की ऐसी ही मिी है।
और काम बि ़िाय तो अपिी हो मिी है। यिोवामशठि महारामायण म ३२ हिार श्लोक है। सि् ्१९३९ में ़िुरु
पूखणमिा हुई थी तो हम ़िए थे ेडोंि- रिवाँ । चार महिी यिो वामशठि की कथा हुई थी । ३२० हिार श्लोक हैं। सब
पुरुषाथ ़िही पुरुषाथ ़िहै। ़िो हमारा ककया हुआ पुरु- षाथ ़िहै वो तिि ़िाम से कहा ़िाता है-सगांचत, कक्रयमाण और
प्रारब्ध ।

म ैंआत्मा ज्ञिा सिार हूां, ज्ञिा पुिां हूां। अखडां ज्ञिा स्वरूप हूां। मुझ आत्मा का ज्ञिा अिर खडांडत हो ़िाय
। खडांडत उसको कहते ेहैं-देखो-देखते-देखते आख खडांडत हो ़िाती हैं, चलते ेचलते ेपैर का थक ़िाा, ये पैर का
खडांडत हिोा है, हाथ थक ़िाा । सोचतेसोचते ेहदमिा थक ़िाता है । गचन्ति करते ेकरते ेगचर्त् खडांडत हो ़िाता
है, परन्तु वाहरे भिविा आत्मा, इतिेहदि हो ़िए ़िाते ़िाते ेमिर मुझको ़िो में थकावट ़िहीांआई।
ििते ़िाते ेबहुत हदि हो ़िया भैय्या, अव थोडा आराम कर लिेदो, ऐसा कभी ़िहीं हुआ । इसमलए ये भिविा
आत्मा का ़िो ज्ञिा है वो अखडां ज्ञिा कहा ़िया है। और कब से ़िा रहा हू ? अरे ़िब से म ैंहूां। कब तक ़िाता
रहूांिा ? ़िब तक रहूांिा। कब तक रहिेा? ये पता ़िहीां। कब से हूां ? ये पता ़िहीां। इसमलए अखडां ज्ञिा सिार हूां।
इसमें अिर कोई कमी बेसी हदखाई पडेकक यहाांपर में अखडां ज्ञिा स्वरुप हूां, उस शरीर में खडां ज्ञिा स्वरुप हूां,
इसमें कम ़िास्ती हदखाई दे तब तो मिाा ़िाय कक में एक ़िहीांअिेक हूाँ। कक तुम तो ज्यादा र्वद्वाि हो, हम तो
कुछ ़िही ांपढ़े । ़िहीं, ये बात ़िहीांहै । र्वद्वता और मूखतिा बुद्गध का धम ़िहै ़ि कक में आत्मा का । यहाांतो म ैंका
ज्ञिा कराया ़िा रहा है ़ि कक बुद्गध का, ़ि गचर्त्का, ़ि प्रपचां का या इजन्रयों का । इसमलए तुलसीदासिी ़ि कहा-
'ज्ञ ़ि अखड एक' । ़िो ज्ञिा अखडां एक है, सोई सीतावर । ज्ञिाअखड एक, सीतावर । अब सीतावर का क्या
मतलब लिाविो? वर मिो स्वामी । सोई सीतावर है। अब सीता ककसको कहिो े? म ैंआत्मा अखडां ज्ञिा स्वरुप हूां
तो म ैंतो हुआ राम और मुझ आत्मा पर जितिी मान्यतायेंहैं सब सीता है।

ि जिसका आधार होता है, वही उसका पनत होता है, वही उसका रक्षक होता है, वही उसका प्रभु होता है,
ि मिी आए कह लो। तो तृणृ से सारा चराचर हैं उिका ़िो मूल कारण, सारे प्रपचां का ़िो आधार, पनत, स्वामी में
आत्मा हूां क्योंकक सबकी मसद्धी करता हूां। इसमलए म ैंक्या हूां ? ज्ञिा अखड एक । मुझ आत्मा का ज्ञिा खडडत
हिीांहोता कभी ़िोसे म ैंआत्मा थकता ़िहीां। ़िाग्रत अवस्था के प्रपचां को म ैं़िाता हूां और देखो–हा ांपर
स्तुनत होती है, ़िहा ांपर उपदेश होता है वहा ाँपर तू शब्द का प्रयिो ककया ़िाता है और ़िहाांपर साक्षात निरुपण
होता है, कफर तू कहिे की ़िरुरत ़िहीांहै। अरे भाई ़िो 'मे' यहाांसे र्ववेचिे कररहा हु, वही ां'में' हर शरीर से सिु रहा
हूां तो दूसूरा कहा ांसेआ ़िया । तो भैय्या अखडां ज्ञिा का यही स्वरुप है। अिुभूनत है कक ़िो मुझ आत्मा का ़िाा
पिा है, यह कभी खडांडत ़िहीां होता, क्यों ़िही ांहोता ?

जिा हदि तक मुझ आत्मा को िििोसे थकावट िहीांलिी । थकावट लिे तो आलस भी लिे। तो िििसे थकावट िही ांलिती तो आलस भी िहीांलिती मुझ आत्मा को । अरे िो में अखन्ड ज्ञि स्वरुप आत्मा हूां 'एक' । जिेक िही ांएक । पशुओांमें भी। जिस तरह म ैंयहा ांििाता हूां, उसी तरह पशु पक्षी घोडे िदहे, वहाांभी में िि स्विरुप हूां । अब रही बात बुद्दध की, तुम अपििघर में लिाते ेरहो । अब पशुओां में बुद्दध िहीांहोती र्वचार करिे की । अरे मच्छड एक िन्तु है छोटा सा । और रायपुर में तो साम्राज्य है उिका । देखा ककतिा ज्ञि है उसमें । िाक में िहीांबिैता, मुहां में िहीांबिैता । सवसे पहले ेफिो करता है कािा में । उसको पता रहता है कक यही कािा है। कािा में ही वीणा बिाता है । िो सो रहा है, इसका कािा यहीांपर है। ककतिी बुद्दध है । खटमल ककतिा छोटा न्तिु है। ऊपर से गिरता है ये ।

रही बात बुद्दध की और इजन्रयों की । ये तो प्रपचां है। ककसी की बुद्दध छोटी होती है, ककसी की बडी होती है। तो में िो आत्मा हूां, अखडां ज्ञि स्वरुप हूां और सबमें एक हूां। यहो मुझ आत्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण है । अब भला इससे प्रत्यक्ष और क्या हिा । वाह कािा के ििुे को में सिुता हूां । आख वे देखिे ेको देखता हूां आआखां िही ां देखती उसको भी म ैंििाता हू मि जस्थर है उसको म ैंििाता हूां, मि कहा ांचला िया उसको में ििाता हूां । मिास प्रेममयो ! रामायण के अयोध्या काण्ड से- "सबके उर अतांर बसहु, ििाहु भाव कुभाव" । जिेक होकर िहीांएक होकर । सबके उर अतर बसहु, ििाहु भाव कुभाव । हरेक में भाव को भी ििाते ेहो, कुभाव को भी ििाते ेहो । िब सब कुछ तुम ििाते ेहो, भाव कुभाव को तो कफर यही निवेदि है कक 'पुििि ििि भरत हहत, होय सो कहहु उपाय ।' िो सबके हृदय में हिा वही ऐसा फैसला दिा । इसमलए म ैंआत्मा अखडां, ज्ञि स्वरुप एक हूां। सबमें सबको प्रत्यक्ष हूां अप्रत्यक्ष िही ांहूां। ये प्रत्यक्ष प्रमाण का प्रमाण है कक में आत्मा प्रत्यक्ष हूां। इस प्रत्यक्ष (में आत्मा) को प्रत्यक्ष करिे के मलए ककसी साधि की िरुरत िहीां पडती । अरे िो प्रत्यक्ष ही है स्वभावतः उसको प्रत्यक्ष करिे के मलए साधि की क्या अपेक्षा है। जिर कोई चीि छुपी हो, कोई ििि ि हो, तब उसको प्रत्यक्ष करिे के मलए कोई ि कोई साधि की िरुरत पडे। िब म ैंभूतकाल में प्रत्यक्ष, वतिमाि में प्रत्यक्ष, िाग्रत, स्वप्ि, सुषुजप्त में प्रत्यक्ष, मूछा िसमागध में प्रत्यक्ष, तो प्रत्यक्ष स्वरुप मुझ आत्मा को प्रत्यक्ष करिे के मलए साधि की क्या िरुरत है ? तो कफर िब म ैंर्विा प्रयास के, बबिा साधि के, तीिों अवस्था, तीिों काल में प्रत्यक्ष हूां तो कफर मुझ आत्मा से बढ़कर पदाथ िकौि हो सकता है। काल चला िाता है, देश चला िाता है, वस्तु चला िाता है, मिर देश काल वस्तु के अभाव में मुझ आत्मा का अभाव कभी िही ांहोता क्योकक में आत्मा कालातीत हूां। काल जिसको ि खा सके, काल जिसको ि ग्रसे और िो काल का काल हो उसको कालातीत कहते ेहैं । सबेरे तुम सोकर उिे, कब ? पाचां बिे े। अब पाचां बिेकहा ांिया? दरअसल काल कहते ेहैं समय को । पाचां को खाया, छः को खाया, सात को खाया । तो इस तरह काल िो है, काल का ककतिा प्रवाह है कक जिा हदि तक बडेबडेवैज्ञाि- निकों ि काल का माप पत्र िही ां बिा पाया। काल में ककतिी दौड है, ककतिा वेि है इसका मीटर िहीांबि पाया । सरसर, सरसर काल चला िा रहा है, भर्वष्य वतिमाि हो रहा है। मुझे आत्मा का पररवति िहीांहै। तभी तो म ैंप्रत्यक्ष हूां, तो में हूां, इसमलए में आत्मा प्रत्यक्ष हूां और एक को िहीां, सबको । इसके प्रमाण के मलए तुम्हें पोथी पत्रेकी िरुरत िहीांहै। जिर में अजस्तत्वहीि ि होऊ, मुझ आत्मा का वििू ि हो, जिर में ि होऊां तो तुमसे प्रश्ि करिा कक कौि शास्त्र में मलखा है कक में हूां ? इसमलए में आत्मा प्रत्येक्ष हूां । भूत, भर्वष्य, वतिमाि तीिकाल में, िाग्रत, स्वप्ि सुषुजप्त तीिों

अवस्थाओ ांमें, सवकिाल में और सव िअवस्थाओांमें में हूां, में आत्मा प्रत्यक्ष हूां। ये हुआ प्रत्यक्ष प्रमाण । अब अिुमाि का क्या लक्षण है? कहते ाेहैं ये पहाड अजग्िमय है मिोइस पवति में अजग्ि है। क्या प्रमाण है, धुवा ांनिकल रहा है, पवति से तो पत्थ्र लिता है।

 िैसे ेयहाांकोई िदी है और बाररश हुई िहीांपर िदी में पािी बढ़ िया है। इससे अिुमाि होता है कक यहााँ पािी िही ांगिरा तो बाररश अिौ ेहुई होिी वहा ांसे पािी बहकर आया तो पािी बढ़ िया िदी में । ये अिुमाि प्रमाण का प्रमाण है। अब लिाओ आत्मा पर । कोई बीमार िैसेहो िया, या ज्यादा बुखार आ िया या आपर्त्् आ िई तो कहते ेहैं कक अरे राम रे ! मर िया। तो िो मर िायिा वो कहेिा ? अिर म ैंमर िया तो, दादारे ! मर िया कौि कहेिा ? इस कथि सेही मसद्ध होता है कक में मुरता िही।ां अरे बाप रे मर िया । अिर म ैंमर िाता तो कहता कौि कक अरे बाप रे मर िया । इससे अिुमाि होता है कक में मरता िहीां। और यहद कहो कक साहब म ैंतो िहि है। शरीर हदखता है, इजन्रया ाँहदखाई देती हैं, मि भी हदखता है। सब कुछ हदखता है। तो इिको कौि देखता है? मि के िीिेअिौको कौि देखता है ? इससे अिुमाि होता है कक में हूां। ये दूसूरी चीज़ है कक म ैंिहीांहदखें। ये दूसूरी चीि है। यहा ांतो अजस्तत्व की मसद्ृध की िा रही है। ये दूसूरी चीि है, में क्या हूां, म ैंकैसा हूां, म ैंकौि हूां, में कहा ांहूां, ये दूसूरा सवाल है मिर हूां तो सही । साहब, म ैंतो िहीांिाितिा कक में क्या हू । तो म ैंिहीं होता तो िहीांिाितिा को कौि िाता । भैय्या, इसका िाम िलग्राही न्याय है। सब बातों के मलए और चीिों को मसद्ध करिे के मलए तो प्रमाणो की िरुरत है, मिर म ैंहूां इसको मसद्ध करिे के मलए ककसी प्रमाण को िरुरत िहीं है। अरे यहाांबाररश िहीं हुई तो अिौ ेहुई होिी । अिुमाि होता है कक में हूां हर हालत में । साहब म ैंतो िहीांिाितिा । ये प्रत्यक्षसार का र्ववेचि है। इससे अिुमाि होता है कक में हूां। देखो - भिवाि है। अव दूसूरी युजक्त आ रही है। भिवाि है, या भिवाि िहीांहै, ऐसा िो कहता है, इसको, भिवाि के भाव अभाव को, ईश्वर है या िहीं है, इसको, बुद्ृध स्वीकार करती है। ईश्वर है अथवा ईश्वर िहीांहै, ये िो मान्यता है, ईश्वर है ये भी एक मान्यता है, ईश्वर िहीांहै ये भी एक मान्यता है । तो ईश्वर के भाव अभाव का साक्षी, ईश्वर के हैं िहीांका ज्ञाता ईश्वर है, इसकी मसद्धी ईश्वर से होती है या मुझ आत्मा से ? बदलिा िहीां। ये सुप्रीम कोटि है भैय्या । यहद कोई अिीश्वर- बादी आ िाए और आिकल निरीश्वर बादी बढ़ रहे हैं। वैसे तो िाजस्तक सारा ससाँार है। अजस्तत्ववाि पदाथ िको िो िािता है वही आजस्तक है, बाकी सब िाजस्तक है। खैर । कोई निरीश्वर आ िाए और िाजस्तक अिर कहता है कक क्या ईश्वर है ? तो क्या कहोिे ेबसे? रामायण िीता का प्रमाण देते ेहो कक मलखा है इसमें, तो मािता िहीांवो । क्योंकक प्रचार में सबसे लोहा लेिा पडता है, हमको । वो लोि कैसे ेताककिक होते ेहैं। उिको प्रमाण देिेकी िरुरत िहीांहै। अिर पूछे कक क्या ईश्वर है ? तो कहो कक िी हाांहै। क्या प्रमाण है ? क्योंकक में हूां, इसमलए ईश्वर भी है। ईश्वर के भाव अभाव का साक्षी कौि होिा, इसको देखेिा कौि, इसका अिुभव कौि करेिा । तो में हूां, इससे अिुभव होता है कक में हूां इसमलए ईश्वर भी है। क्योंकक ईश्वर के भाव अभाव को में आत्मा ही मसद्ध करता हूां। देखो भैय्या िो िाजस्तक है ि, वो भी में का र्वरोध िहीं करता । ईश्वर का र्वरोध तो करता है मिर में का र्वरोध वह भी िहीांकरता । अब प्रश्ि होता है कक पुरािे िमािे में राक्षसों िे भिवाि का र्वरोध ककया और तुम कहतेहो िो निर्व- रोध है वही भिवाि है। मिर रावण, कांस जितिे दैत्व हुए हैं, ये सभी र्वरोधी थे े। तो कफर ये कथि िलत हुआ कक भिवाि वही है िो निर्वरोध है। ये लोि िो र्वरोधी थे, काल्पनिक भिवाि के र्वरोधी थे े। वास्तर्वक भिवाि के िहीां। तो

काल्पनिक भिविा का कोई र्वरोधी होता है । कोई अर्वरोधी होता है । मिर जिसिे उस आकार प्रकार को धारण ककया, वह निर्वरोिध है। तो िाजस्तक भी शान्त हो िाता है। तो िाजस्तक को आजस्तक बििो के मलए यही निर्वरोध मसद्धातां है । अिुमिा प्रमाण का ये प्रमाण हदया िा रहा है। में आत्मा पर। म ैंप्रत्यक्ष हूां और प्रत्यक्ष होते े हुए में ि होऊां तो ईश्वर के है िहीांका साक्षी किौ हिोा, शरीराहदक प्रपचां को किौ िििोा। म ैंक्या हूां, कैसा हूां, किौ हूां, ये अलि चिी है। मिर यहा ांतो अजस्तत्व का बोध कराया िा रहा है। म ैंहूां तो हूां, चाहे कैसे भी रहूां । चाहे देह रुप में मिोा, चाहें स्त्री मिोा, चाहे पुरुष मिोा, चाहे कुछ भी सही। चलो देह ही सही। म ैंक्या हूां, कैसा हूां, किौ हूां, कहा हूां, इसका र्ववेचिे चौथे प्रमाण में हिोा स्विुाभूनत प्रमाण में। अभी तो अिु- मिा प्रमाण बता रहे हैं। अरे भई इजन्रयाांि ििोो मुझको । इजन्रया ांभले ि िििा सकें, मि बुद्रध गचर्त् भले ि िििा सके, वाणी भले ि कह सके । ये तुम्हारे कहिे से मिा िया कक म ैंहूां। मिर म ैंकिौ हूां, कैसा हूां। तो में हूां, तो इसको क्या िहीांििता ? तो यह तो ििता है । म ैंकिौ हूां, कहाां हैं, कैसा हूां, इसको िििा है । म ैंको िाता है तो ये तो समझ िए कक में है ईश्वर के भाव को, अभाव को, शरीराहदक को सबको मै िाता हूां, इससे अिुमिा प्रमाण मसद्ध है कक म ैंिरुर हूां। ये तो समझ िए ि? कक म ैंहूां। हााँ, हूां। तो यहाांसवाल पैदा होता है कक में क्या हूां? में कैसा हूां, में किौ हूां, में कहा ांहूां। भैय्या यहद इसको में ििू तो म ैंही िही।ां बहुत बारीक चिी है। बुद्रध खो िाती है क्योंकक म ैंही हो िाती है। वो निश्चय किौ करे । में क्या हूां, कैसा हूां, किौ हूां, इसका निश्चय करिेके मलए िब वृद्रगध चलती है तो में ही हो िाती है, उसका ये सारा प्रश्िहल हो िाता है। बुद्रध का म ैंहो िििा, बुद्रध के सवाल का यही िवाब है। बुद्रध का बात्मा हो िििा, बुद्रध के सारे मसले ेका यही हल है। पाश्चात्य दशि और प्राच्य दशि में इतिा अतांर है। वहाांके र्वद्विा बुद्रध- बादी होते ेहैं। कहते ेकहते ेनिश्चय करते ेकरते ेउिकी बुद्रध िब खो िाती है, तब कह देते ेहैं, इसके आिौ ेकुछ िहीांहै। वहााँ पर भारतीय बेदान्त ताल िोककर सामिेआ िाता है। तो भारतीय वेदान्त कहता है- कक िो िििा है कक इसके आिौ ेकुछ िहीांहै, वो है कक वो भी िहीांहै ? म ैंकिौ हूां, कहाां हूां, कैसा हूां, ये बुद्रध का सवाल है। इसको हल करिे के मलए चलती तो है बुद्रध मुझ आत्मा के बबदीक । मिर वहाां िाकर वह खो िाती है। क्या भी िया, किौ भी िया, कैसा भी िया में आत्मा ही हो िाती है। अब उसका वूिद हो तब तो आके बतावे ेकक किौ है, कैसा है, कहा ांहै। अब सब खातमा हो िया तो बतावे ेक्या ? यही हाल वाणी का भी है। क्योंकक िो चला छूिे को, छुवा िया। िाित तुहह तुमहह हिोाई । ये बात है। और िििम ? ििमाहदक िो है, िििम और आिम । ये भी अपिे अपिेहदमिा का फुिला निकालते ेहै। तुम सत हो, तुम गचर्त् हो, कूटस्थ हो, व्यापक हो अखन्ड हो, पूण ि हो, सब कहते े। और बुद्रध ही वेद है, बुद्रध ही शास्त्र है। श्रुनतयाांस्मृनृतयों शास्त्र बुद्रधवाद हो तो हैं। िब बुद्रध ही खो िई, में किौ हूां, कहााँ हूां, कैसा हू, इिसवालों के हल में िब बुद्रध ही में आत्मा हो िई, तो ये सवालात खतम हो िए। तो बुद्रध के बिाये ये ििमिाम सब खतम हो िए । रह िया र्वशुद्ध तत्व अब । म ैंक्या हूां, म ैंकिौ हूां, में कैसा हूां, तो बुद्रध अिर ि खो िाय, तो 'मि समेत िहह िििा ि वाणी' ये हार मिाकर 'राम अतव्यविृद्रगध मि वाणी' । भिविा शकांर कहते ेहैं पावतिी से'मत हमार अस सुिहु भविाि' । ये हमारा अिुभव है कहते ेहैं भिविा शकांर । ये स्वय ांहमिेअिुभव ककया है कक भिविा राम मि बुद्रध का र्वषय िहीांहै। राम ऐसा है, राम इस प्रकार है, ये कुछ िहीां। 'अतकि बुद्रध मिवाणी तो'-

'प्रत्यक्षेणानुमानेन.... आत्म संर्दा'

प्रत्यक्ष प्रमाण, अिुमाि प्रमाण, शब्द प्रमाण और स्वािुभूनत प्रमाण। शब्द प्रमाण तो सुि ही रहे हो।

'नान्द्तः प्रज्ञम्ॱ..ऩ र्ज्ञेयः'

शब्द प्रमाण तो आि छः हदि हो गए देते ◌े। ये शब्द प्रमाण ही तो हैं।
अब चलो चौथा प्रमाण। स्वािुभूनत प्रमाण-आत्मसंवेदा कहते ◌े हैं स्वाभूनत प्रमाण को। स्वािुभूनत
प्रमाण-म ◌ैं क्या हूं, म ◌ैं कैसा है मैं कौि हूं, म ◌ैं कहा ◌ं हूं? बुद्धध के अभाव में, बुद्धध के विलय हो िािे पर, देखा-बुद्धध
का अभाव होिा कहो, चाहे बुद्धध का विलय होिा कहो, विलय कहते ◌े हैं िाश को। वृद्धध का अभाव गचत्त का
अभाव, पि का अभाव तो ये िाि कहा ◌ं हैं? जिसमें इिका भाव है, उसी में सबों का अभाव है। मैं आत्मा के अज्ञाि
से हो इिका भाव है और मैं आत्मा को िाि लेिे पर इि सबों का अभाव है। जिस तरह रज्जु के अज्ञाि से सर्प है
और रज्जु के ज्ञाि से सर्प रज्जु ही रज्जु के ही अज्ञाि से रज्जु सर्प है और रज्जु के िाि लेिे पर सर्प ही रज्जु है।
ऐसे ही मैं आत्मा के अज्ञाि से मि बुद्धध गचत्त अहंकार देहाहदक प्रपचं हैं और मैं आत्मा के ज्ञाि से इि सबों का
अभाव हो गया मािो म हो गया। देखो - तद्वत, वही होता है िो तद्रूप होता है। यहद िदी िलवत् ि हो, तो समुर में
उसका मेल िहीं। तो अगर मैं आत्मा वृद्धध ि होऊं तो मुझ आत्मा को छूकर बुद्धध आत्मा ि हो। अगर म ◌ैं
आत्मा शरीराहदक और सत रि तम यहद मैं आत्मा ि होऊं तो मुझ आत्मा के साथ इिकी तल्लीिता ि हो।
इससे निर्विवाद मसद्धांत है कक म ◌ैं हूं। इिके रहिे तक ही मैं ही हूं कक इिके अभाव में मैं ही हूं। बुद्धध अगर हदखाई
देती है तब मैं ही हूं और िब बुद्धध का अभाव हो गया तो मैं हूं। शब्दाहदक विषय यहद मुझ आत्मा से मभन्ि हदखते ◌े
हैं तब तो कहो मैं ही हूँ और इिमें और मुझमें मभन्िता की प्रतीनत िहीं होती तो म ◌ैं हूं। म ◌ैं हूं इसकी अिुभूनत के
मलए ही तो उस हदि मैं का डडंा हदया गया था कक िब अभ्यास के अभ्यास में बैठे ◌े हो तो यहद शब्दाहदक विषय
अपिे आप से मभन्ि प्रतीत होते ◌े हैं और इि विषयों की मभन्िता में ही हर्ष और शोक होता है तो कफर म ◌ैं ही हूं और
िहीं होता तो मैं हूं। मैं ही हूं ये हगथयार मभन्िता का िाशक है, भेद का िाशक है। िब मभन्िता की प्रतीनत ि हो तो
कफर मैं हूं ये भी कहिे की कोई िरूरत िहीं है। अरे मैं हूं इसको भी तो वाणी ही कह रही है कक मैं हूं और वाणी
उसका कथि करती है, वृद्धध जिसको निश्चय करती है और िहा ◌ं पर बुद्धध का बोध खो िाता है, तो बुद्धध का
निश्चय कार्य, ि िब बुद्धध के निश्चय का अभाव हो गया तो वाणी ककसको कहिे। बुद्धध जिसका निश्चय करती
है उसी का गचत्त गचति करता है, मि मिि करता है, चक्षु इन्रो देखती है और वाणी उसी को व्यक्त करती है। तो
म ◌ैं कौि हूँ, कैसा हैं, मैं क्या हूँ, कहा ◌ँ हूँ, ये बुद्धध का प्रश्ि है, तो िब बुद्धध ही खो गई तो बुद्धध का निश्चय कार्य ि
खतम हो गया। जिसका िो धर्म होता है, वह अपिे धर्मों से मभन्ि िहीं होता। चाहे निश्चय कहो, चाहे बुद्धध कहो
। मिि कहो चाहे मि कहो, देखिा कहो चाहे आखां कहो। और देखिा है तो आखँ है, आखां है तो देखिा है। सुििा
है तो काि है, काि है तो सुििा है। तो जिसका िो धर्म होता है, वह धर्मी रूप होता है। तो उसी तरह मैं हूँ तो
िाििा है, िाििा है तो म ◌ैं हूँ। िैसे ◌े देखिा ही िेत्र है, गचन्ति ही गचत्त है, निश्चय ही बुद्धध है। उसी तरह िाििा
ही मैं हूँ। म ◌ैं क्या हूं, कौि हू, कैसा हूं, कहा ◌ँ हूं, बुद्धध के अभाव में, बुद्धध के ि रहिे पर, इिके अभाव में क्या म ◌ैं
आत्मा का भी अभाव हो िाता है? िहीं होता तो म ◌ैं क्या कहता हूं ? बुद्धध के ही रहते ◌े तक ये शब्द है, ये स्पर्श है, ये

रूप है, ये रस है, ये िधां है। िब बुद्वध का अभाव हो िया तो कहा ाँिए । अिर कुछ कहतेहो वाणी से तो सब िडबड है। यही स्वािुभूनत प्रमाण है । 'राम अतक्स िबुद्वध मि वाणी' । इस अिुभूनत में म ैंहू । -शकांर सहि स्वरूप सम्हारा' । 'सहि र्वमल मि लागि समाधी' । बही सहि समागध है। सब िायब हो िया । हदवाला गचर्त् हो िया ।

अिान्द मिान्द कर प्रसन्मि् ्। बुद्वध को िब जिन्दा करो तब । अरे जिसिेमारा है, वही जिलावे। कहते ेहैं बडे भारी भिविा बिे हो भिवितो मारता जिलाता है। एक भी तो मारो जिलाओ। यहाांतो रात हदि मारा िाता है।

वृद्ूगध कब की पैदा हुई । इसीमलए तो म ैंमशव हूां। यही हकीकत है बाकी सब अफसािा है और िो कहािो होती है वो र्फिी होती है, झूिी होती है। कहािी और इनतहास में क्या फकि है। कहािी का आधार घटिा होता है और इनतहास का आधार पात्र होता है। तो बुद्वध का काम निश्चय, मि का काम मििा, आख का काम देखिा, प्रपच का स्रूप उत्पर्त् और र्विाश, ये सब घटिाय ेंरात हदि घटती रहती हैं, इसमलए ये सब कहािी है, अफसािा हैं। अिर कोई कहे कक कहािी का क्या लक्षण है तो यही बतािा कक जिसका आधार पात्र हो वो इनतहास है । और घटिा लेकर कहािी मलखी िाती है ।

'प्रत्यक्षेणा नुमानंन ....ईंचरेहदह'

इस प्रकार िािकर ससार में र्वचरिा चाहहए । प्रत्यक्ष प्रमाण और अिुमिा प्रमाण-मििम प्रमाण और स्वािुभूनत प्रमाण चारों प्रमाणों का र्वश्लेषण ककया िया । इसमलए कक में प्रत्ययसार भिविा आत्मा हूां क्यो कक में प्रत्ययसार मिोर्वश्वसिीय हू । हकीकत है तो में ही हूां। क्योंकक में िैसा शुरु में था वसाां ही में आखखर में रहूाँिा और िो बोच है वह भी में ही हूां। िो पहले ि रहे और बाद में ि रहे और बीच में हदखाई दे वह प्रपचां है, मिोवैतथ्य है। तो िो देहागधक प्रपचां, सारा र्वश्व ये पहले िहीांथा, अन्त में िहीांरहता, और वीच में प्रतीत हो रहा है इसमलए इसका िाम प्रपचां है, समांार है। और म ैंआत्मा िैसा पहलेथा वैसेही अिो ेरहूांिा. वैसे हो अब हूां। मुझ आत्मा में कभी पररवति हुआ था, ि है िहोिा। ये प्रपचां िो कोच में हदखाई देता है, प्रतीत होता है, म ैंही हूां, क्योंकक मुझ आत्मा से मभन्ि प्रपचां की सर्त्ा िहीांहै । प्रपचां प्रतीत होत है तब कहो में हो हूां और प्रपचां प्रतीत िहीांहोता तो म ैंहूां । प्रपचां की प्रतीनत हिोमें म ैंही हूां। यहाांतक बुद्वध है। और प्रपच प्रतीत ि होिेपर म ैंहूाँ। अिर कोई वस्तु ससांार में मिमियोग्य है तो म ैंआत्मा ही हूाँ। प्रपचां ि देखिेयोग्य है ि मिसुि योग्य है ।

नान्द्तः प्रज्ञम् ्................ सर्ज्ञेयः

सप्तम हदवस का प्रवचि

(रर्र्ार हदनांकं १८नर्म्बरसन्१९७३समय१०बजेसे१२बजे सप्तम हदर्स)
ु (

'ओमभत्येदक्षर .... ओंकारेर्'

नान्द्तः प्रज्ञम् ्.................. सर्र्जे्ञेयः

(पिा)

ान्तिःप्रज्ञम्.··्...्...्सर्वज्ञेयः

इम मत्र में स्वरूप भिविा आत्मा के सभी र्वशेषण हैं। कल के प्रसिां मेंप्रत्ययसार का र्वश्लेषण ककया यया । प्रत्ययसार उप- निषद की भाषा में कहते ेहैं र्वश्वसिीय पदाथ िको । िो र्वश्वास- पात्र हो उसको प्रत्ययसार कहते ेहैं। इसका र्ववेचि कल हो चुका है । प्रत्ययसार । देखो व्यवहार में भी कभी कभी ककसी अपिेबड आफीसर के िाम िब आवेदि पत्र कोई मलखता है, दरखास्त या एप्लीकेशि िो कुछ भी कहो तो भैया, व्योरा सब मलख मलया िाता है अथवा टाइप कर मलया िाता है तो सब के बाद में यह मलखा िाता है कक 'तुम्हारा र्वश्वास पात्र' । उसके बाद कफर क्या मलखा िाता है- तुम्हारा र्वश्वासपात्र 'म'ैं । अब में के पीछे कोई ि कोई पूछ लिाा दी िाती है। में मोिहरलाल, में यज्ञदर्त् । तो मैके पीछे कोई ि कोई पूछ काल्पनिक लिा दी पडती है। असली िो र्वश्वास पात्र है, वो तो में ही हूं। क्योंकक शरीर भी र्वश्वास पात्र िहीं है, इजन्रयाांभी र्वश्वासपात्र िहींहै, मि बुद्र्ध गचर्त् भी र्वश्वाप्त पात्र िहींहैं। तो कफर ककसके मलए मलखतेहो तुम्हारा र्वश्वासपात्र । - ये व्यवहाररक वेदान्त है। िब मलखिेका मौका आता है तुम्हारा र्वश्वास पात्र तब मलखतेहो में । और म ैंका ही र्ववेचि हो रहा है। यहाांपर एक और र्वशेषता है, िो कुछ मलखतेहो सबकी टाईप हो िाती है, और तुम्हारा र्वश्वासपात्र भी टाईप हो िाता है लेककि िहा ांमें मलखिा होता है तो में की टाईप िहींहोती क्योंकक म ैंआत्मा तो सबको टाईप कर रहा है। ये िाग्रत है, ये स्वप्ि है, ये मि बुद्र्ध गचर्त् अहांकार है। तो सारे प्रपचां की टाईप तो में आत्मा रात हदि करता हू तो म ैंकी टाईप करिे वाला कौि है भैया, ससांार में। तो मैंका टाईप िही ांहोता। में आत्मा मि वाणी का र्वषय िहींतो टाईप में कैसे ेआयेिा तो िब में मलखिे ेका टाईम आता है तो कच्ची स्याही से, पेि निकालकर मलखा िाता है। में पढ़ा िहींहूाँ, तो दूसूरे से भी िही ांमलखा सकता क्योंकक म ैंका लेखेक तो में हो हूं और दूसूरे से मलखवा लिो तो िुम िहै। अिर पढ़ा मलखा िहींहै तो अूांिूठे का निशाि भी मेरा ही होिा। व्यवहार में भी देखो तो में आत्मा की महहमा चारों तरफ फैली हुई है इसमलए मुझ आत्मा को प्रत्ययसार कहते ेहैं।

ओिौ ेका ववशेषण आता है- 'शान्तम्'ॎ, 'प्रपन्चोपशमम्'ॎ। मुझ भिवाि आत्मा में प्रपचां का उपशम है। यिद मुझ आत्मा में प्रपचां तीनकाल के अन्दर है ही िहीं।ां तो प्रपचांोपशयम् ॎ। कफर उसके बाद शान्तम् ॎ। िब प्रपचांोपशमम् ॎमें प्रपचां की निवृवृत्त् है, प्रपचां है ही िहींमुझ आत्मा में तो ककसकी अपेक्षा से म ैंहूां कहे। क्योंकक तू की अपेक्षा से म ैंहूां और म ैंकी अपेक्षा से तू है। तो प्रपचां िहीं ांतो तू िहींऔर तू िहींतो म ैंिहीं। इसमलए 'शान्तम्'ॎ। प्रपचां का सवथिा मुझ आत्मा में अभाव है। प्रपचां है ही िहीं।

आदावन्ते च यन्नास्स्त वतिमानेऽवप तत्तथा।

ववतथैः सदृशाः सन्तोऽववतथा इव लक्षक्षताः।६।

वै. पा. का. वैतथ्य प्रकरण

िो आहद में िहीं, अांत में िहीं, मध्य में िो प्रतीत होता है यह भी िहीं, ये तो वैतथ्य है। है के समाि हदखता है परन्तु ववचार करिे पर िहींममलता। आहद में यािी शुरुआत में िहींऔर अत में िहींऔर िो बीच में प्रतीत होता है, ये भी िहीं। इसमलए यहाांपर ववशेषण हदया है भिवाि आत्मा का प्रपचोपशमम् ॎ। प्रपच का उपशम है यािी प्रपच की निवृवृत्त् है। िब प्रपच िहींहै तो कफर प्रपचां के ही अदांर तो मैं तू है। िब तू िहीं ांतो मैं भी िहीं। अब िो कुछ है उसके मलए कहते ेहैं शान्तम् ॎ। शान्त महासागर'।

शाजन्त से शान्त की अिुभूनत है कक शान्त से शान्त की अिुभूनत है अरे भई, िब प्रपचां की निवृवृत्त् है, प्रपचां तीि काल में है ही िहीं, प्रपचां क्या है ? िो अपिे आधार को ढाकें उसका िाम प्रपचां है। डडांा क्या है ? अरे िो लकडी को ढाकें। लकडी का िो आवरण है, लकडी को िो आच्छाहदत करता है, उसका िाम डडांा है। िो सोिेको ढाकांता है, उसका िाम आभूषण है। तो प्रपचां ककसको कहते ेहैं? • िो अपिेआधार को ढाकें, तो प्रपचां का आधार मैं आत्मा हूां तो म ैंआत्मा को िो ढांकिेवाला है, वो प्रपचां, माया है। यहाांपर प्रश्ि होता है कक क्या दरअसल मैं आत्मा ढांकता हूां ? िी िहीं ांउस वक्त प्रपचां से भिवाि आत्मा म ैंढाकां ा िाता हूां, ये उस वक्त कहा िाता है िब कोई दूसूरा ढाकिेिेवाला हो। िब कोई दूसूरा मुझ आत्मा को ढाकिेिेवाला हो तब तो कहा िा सकता है कक मैं आत्मा प्रपचां से हाँकता हूां। प्रपचां की सत्ता मािकर।

ढाँकिा क्या है, और उघडिा क्या है ? प्रपचां है, ऐसा मािािा ही ढकिा है। और प्रपचां को िब िािा तो यही प्रपचां का उघरिा है। प्रपचां है, देह है, ऐसा मािािा ही देह है। देहाहदक प्रपचां है ऐसा मािा लेिा ही देहाहदक प्रपचां है। और ये मािािा ही मुझ आत्मा का ढक्कि है। और देह को िब िाििेचला तो यह ि ममला, यही उघरिा है। बडा सुन्दर खेल है। बडा ववगचत्र खेले है। तो मािािे में देह है, िाििेमें मैं हूां। मािािे में ससांार है, िाििेमें म ैंहूां, िैसे े मािािे में सप िहै और िाििे में रज्िुिहै, उसी तरह मािािेमें ससांार प्रपचां है और िब िािता हूां उस मािािुए प्रपचां को िब िाििेचाहता हूां तब प्रपचां िहींममलता। िहींहदखता तो प्रपचां का िाििेवाला ही मैं आत्मा रह िाता हूां। प्रपचां हो िाता है वैतथ्य और मैं रह िाता हूां तथ्य वास्तववक। हाांतो कफर तथ्य ही रह िया तो "शान्तम्"ॎ। मािािे से प्रपचां और िाििेसेप्रपचांोपशमम् ॎप्रपचां की निवृवृत्त् तो तभी होिी, िब प्रपचां को िाििो। तो प्रपचां को िाि लेिेपर वास्तव में मुझ आत्मा के मसवाय कोई दूसूरा अजस्तत्व रहता िहीं, इसमलए मुझे आत्मा को भिवती श्रुनत

प्रपचोपशमम् ्रवशेषण देती है, म ँअपिेआपको प्रपचाोपशमम कहिे में भी तो समथ िहीां हूां। ये तो श्रुनत कहती है। ये वर्शेषण, जिनिे भिविा आत्मा के हैं, जििकी व्याख्या हो रही है, सब श्रुनत के बिाये हुए वर्शेषण है। श्रुनत को सैिा िैसा अिुभव होता िया, उसी तरह वह आत्मा को वर्शेषण देती िई। परन्तु साक्षात् ्कथि करिेमें स्वस्वरुप का, श्रुनत ांभी समथ िहीांहै, इसमलए 'शान्तम्' ्।

अभी बीच में एक प्रश्िककया था, हल करिा बाकी रह िया है। शान्त से शाजन्त है कक शाजन्त से शान्त है। देखो, समझो, यिाी शाजन्त से शान्त का अिुभव होता है (शान्त में आत्मा) या शान्त से शाजन्त का अिुभव होता है। एक। एक मतबिे ेऔर सिुो। यिाी साफ शब्दों में ये है कक प्रपचां की निवृनत हो िािे पर स्वस्वरुप आत्मा (निवृनत भी कहिि शब्द आ िया, सब ि समझि।)

देखो - अन्धकार में िो सापां हदखाई देता है तो सप के िाश हो िािेपर, रज्जूकिा ज्ञाि होता है कक रज्जूि को िाि लििेपर सप िका िाश होता है। सप िके िाश हो िािे पर, सप िके मर िािेपर रज्जूकिा ज्ञाि होता है कक रज्जूिको िाि ले तब सप िका िाश हो िाता है। रस्सी के िाि लिेपर ही सप िकी निवृर्त होती है। िोक है, और निवृर्त के ही मिो शाजन्त है। उसी तरह प्रपचां की निवृर्त का िाम शानांत है। तो कफर भैयैया, प्रपचां के अभाव हो िािेपिर मिोप्रपचां की निवृर्त हो िािेपर शान्त पद का अिुभव होता है या शान्त पद की अिुभूनत हो िािेपर शाजन्त की अिुभूनत है यिाी शाजन्त से शान्त है कक शान्त से शाजन्त है ? शान्त से शाजन्त है, और अिर कहें, यहद हम ऐसा कहें कक शाजन्त से मिोप्रपचां की निवृर्त हो िािे पर प्रपचांाधार में आत्मा हूां, शान्त उसका अिुभव • होता है, तो बबिा शान्तपद स्व स्वरूप के िािेप्रपचां की निवृर्त होती िहीांनतीकाल में, असभांव है।

सिे ेकक रज्जूिको ि िािो, रज्जूकिा ज्ञाि ि प्राप्त करें और बबिा रस्सी के िािे सप िका मारिेकी कोमशश करिा, रज्जूसिे सप ियहद सवथिा मभन्िहै तब तो रज्जूिको बबिा िािेही सप िाश ककया िा सकता है, ककसी pi ककसी कोमशश से और िब रज्जूहिी सप िहै तो बबिा रज्जूिके िािेसप िका िाश िही ांहोता। तो उसी तरह यहद में आत्मा से ससांार प्रपचां मभन्िहै तो भिविा का ज्ञाि प्राप्त करिे की िरूरत िहीांहै ससांार का िाश करो, और सब कर ही रहे हैं। ससार से तरिे का उपाय लिो कर रहे हैं। अरे ससांार है अथवा िही ांहै इसके िािेके मलए कोमशश हिीांकरता। तरिे का उपाय करता है। िबकक रज्जूिही सप िहै, उसो तरह में ही प्रपचां हूँ. में आत्मा ही प्रपचां हूँ और यो कहो कक मुझ आत्मा का ही पयाा– यवाची िाम है। िबकक में ही प्रपच हूँ तो मुझ आत्मा से प्रपचां की सर्ता मभन्ि हिीांहै तो ससांार सिार से पार हिोके मलए और कोई उपाय ि करके सबसे पहले ेभिविा स्वरूप आत्मा को िाि लेवे। तो रज्जूकिो िाि लिे पर वह ससार सिार से तर िाता है मिोससांार िाश हो िाता है। और तरिी ेककससे े ? इसी मलए कहा िाता है, भिि करिी ेतब ि तरिी ेऔर ि करिी ेतब ि तरिी े। इसीमलए भिि करो। ये मस्तों के लतीफे है भैय्या ! भिि करिी ेतब ि तरिी ेऔर ि करिीतब ि तरिी े। तो कफर भिि क्यों करें ? अरे भिि करिी ेतभी तो तुमको मालूम हिाे। िब भिि करिी ेतब इस रहस्य का पता लििे। और तरिा ककसको ? मिृ- लि समुर को तरिा जिस तरह, अरे उसी तरह ससांार से तरिा। तो इि दृिटाताों से, इि उदाहरणों से, इि युजक्तयों से यही मसद्ध होता है कक मुझ आत्मा में प्रपचां का सदा उपशम है। इसमलए ! जिज्ञासुओ ां! एक प्रश्ि

होता है । स्वामी ि ी ! वस्तु का बोध हो ि ि ो पर (वस्तु मि ो आत्मा) मिोस्वस्वरूप भिवा आत्मा का बोध हो ि िपिर भी प्रपचां क्यों हदखता है ? ये तुम्हारी शकांा है। हमारी शकांा ि हीांहै। इतिेहदि से सिु रहे हो कक स्वस्वरूप के मसवाय प्रपचां तिी काल में ि हीांहै। मिर ये सिुकर के भी, ि ि ा- कर के भी, प्रपचां क्यों हदखता है । तो भैय्या, ि ी हदखता है, वह प्रपचां है । स्वामी ि ी! रज्जू को देख लिे पर सप ि क्यों हदखता है ? ऐसा ही है ि ! रज्जू को ि ि ा लिेपर सप ि क्यों हदखता है ? कफर तुमिें रज्जू ूको देखा ही ि ही। ां अिर सप ि हदखता है तो रज्जू का दशि ि हीांहुआ । हाांये कह सकते हो कक रज्जू का दशि कर लिेमें अधांकार में ि ो भय कांपि था, अरे सापँ तो था ही ि हीांि ि पता हीांं, मुझे ेकैसे ेभ्म हो ि या, तो जिले ेमें भी थोडा धकधक होता रहता है । तो उसी तरह बोध हो ि ि ोमें भी. प्रपच तो ि ही ांरहता लेककि वो धडकि ि ो है, इसमलए अिभ्यास का अभ्यास करिा बहुत ि रूरी है । धडकि निकालिे के मलए। ऐसा ि हो कक धडकिे बढ़ ि ाए । और धडकि पहले ेतो ि हीांथा और बाद में भी ि हीांरहिे, बीच में ही धडकि आई है। तो ऐसा ि हो कक कफर हाटिट्कल हिोलिे । इसमलए हम तुम लिोों में ि ोर दे रहे हैं। ि ो ि ि ो हो ि, वो ज्ञिा अिभ्यास सेपक्का हो ि ायिा । धडकि भी निकल ि ायिा । वो अिोहदकाल का सस्ांकार है। ससाांर कब से है, कोई नतथी तारीख तो है ि ही। ां अब निकल तो ि या है ि ो लौट के ि हीांआएिा, मिर वो ि ो पूव ि का सस्ांकार रह ि या है, उसको निकालिे के मलए अिभ्यास का अभ्यास बहुत ि रूरी है। इस प्रकार की शकांा हिोा स्वाभािवक है। और कोई कोई इस शकांा सेबचा हो ि हीां तो सबको शकांा होती है। वो ि ो अिभ्यास करते ेहो वो ज्ञिा का अिुिठिा है। ि ो अिुिठिा करिसे जिस काम के मलए अिुिठिा ककया ि ाता है वो काम मसद्ध होता है। अिुिठिा की यही मसद्धी है कक वो सस्ांकार अिौ ि े रहे, उसकी स्मृनत ि हो, उसके मलए अिभ्यास करिा बहुत रूिरी है। स्कूल कालिे का ि ो मशक्षक होता है वो तो यही चाहता है कक हमारे क्लास के ि ो छात्र हैं वो सेन्ट परसेन्ट ि म्बर से पास हो ि ाय, एक भी फेल ि हो। अिोहद काल का ि ो सस्ांकार पडा हुआ है हृदय में वो निकल िाए। तो ि ब सस्ांकार निकल ि ाते ेहैं, प्रपचाीं पशम के बाद, तो 'शान्तम्' । वाह ! तुम्हारे सस्ांकार ि ब निकल िायिें ेतो दूसूरे के सस्ांकार भी तुम्हारे कथि से निकल ि ायिें े। प्रपाँचोपशम मुझ भिवा आत्मा में प्रपचां की निवृत्ूर्त् है। तिी काल में है ही ि हीां। देखो इस शहर का ि ाम रायपुर है, मिर रायपुर ककसी ि े देखा ि हीां। अब तुम कहिो–स्वामी ि ी ! आखाँ से तो हम देख रहे हैं रायपुर और तुम कहते ेहो कक ि हीांहै रायपुर । जिसका ि ाम तुमिे रायपुर रखा है। रायपुर ढूांढ़े चलिो ेतो रायपुर ि ाम का शहर ि ममलिेा, तो कफर ि ो ये हदख रहा है तो रायपुर का देखिे ेवाला में हदख रहा हूाँ कक रायपुर हदख रहा है ? में हदख रहा हूाँ। यही प्रपचां की निवृत्ूर्त् है। प्रपचाीपशम । ि ब रायपुर ि हीांतो जिला ि हीां, तहसील ि हीां, और भारत वष ि हीां। ककसी भी चिी को देखिे चलो तो म ैंही रह ि ाता हूां । आभूषण तलासो तो सिोा ही ममलता है। ककसी भी चिी को देखिेचलो तो मसवाय अपिे आप के कोई चिी हदखती ि हीांहै। में ही इसका देखिे ेवाला हू और में ही ये हदख रहा हूां।। अपिेआत्मा से मभन्ि कुछ ि हीांहै। अब इस प्रकार से ि ि ा लिें पर प्रपचां की निवृत्ूर्त् तो हो ि ई, रायपुर तो ि या, मिर पुरिाा ि ो सस्ांकार अिोहदकाल का ि ी बिा है वो रह ि ाता है । अरे भई टेढ़ी मेढ़ी रस्सी को ि ला दो, तो ि ल ि ाती है मिर उसकी सूरत सकांल ि हीां िाती, मिर वो बधांि का कारण ि हीांहोती । तो उसी तरह भैयैया, प्रपचां तो ि ल ि या, उपशम हो ि या, अब उसका ि ी टैडा मेढ़ा आकार है, तो आकार हदखता है, तो है तो भस्म ही, राख ही है । इसमलए प्रपचाीपशम । ये प्रपचाीरशि का िवश्लेषण हो रहा है। ि ब प्रपचाीपशम तो उसके बाद 'शान्तम्' ।

कैसे ेकैसे ेसुन्दर महारिरी श्रुनत ि क्रमशः र्वशेषण हदया है। शान्तरम् ्पहलिेहीकहा, प्रपचाोपशम के बाद शान्तम् ्कहा । वाह भाई वाह ! अरे िला शान्तरम् ्तो िो शान्त है वही मशव है। मशव का अथ िहोता है कल्याण । मशव मिो कल्याण का है । तो प्रपचाोपशम, शान्तम् ्। प्रपचां निवृत्ृत् का सस्ांकाराभाव का िाम ही शान्तपद है । प्रपचां की निवृत्ृत् का िो सस्ांकार, प्रपचां पहले ेथा, और ज्ञा हिोसे अब निवृत्ृत् हो िया, इसके अभाव का िाम शान्त पद है । प्रपचां निवृत्ृत् का, सस्ांकाराभाव का िाम है शातांपद । मिोपहले ेप्रपचां था, पहले ेसस्ांकार था और बोध हिो पर ससांर निवृत्ृत् हो िया, यह िो सस्ांकार है सस्ांकार मिोस्मृनत । तो प्रपचां निवृत्ृत् के सस्ांकाराभाव का िामि है। क्यों भैयै्या, िहदयाांसमुर में पहुांचकर, िहदयााँसमुर को िििाकर, िहदयों की हो िई निवृत्ृत् । िहदयों का अजस्तत्व ही ममट िया, तो यह याद किौ करे कक जिा के पहले ेम ौंििांा यमिु थी और जिर इसकी याद है तो समुर हुई िहीं। समुर प्राप्त िहीांकी उसिे, जिर पूवा िपर को उसको याद है कक पहले ेमें िदी थी और जिा समुर हो िई। जिर यह याद है तो वह िदी ही है, समुर िहीांभई । ता, पहले िदी थी, अब समुर हो िई, उस िदी का पूव ि का सस्ांकार है, पूव िकी याद है उसको । और िब िदी ही ि रही तो सस्ांकार कहा ाँसे और सस्ांकार िहीांतो समुर कहा ां । क्योकक िहदयों ि ही ममलकर समुर िाम रखा, िब िहदयाां ही िहीांतो समुर किौ कहे ? अब िो रह िया वो ि दिी है ि समुर है। शान्त है। प्रपचां के ही अन्दर उपदेठटा, उपदेश, उपदेश्य, बोध, अबोध, ज्ञा, अज्ञा है। और बि प्रपचां की निवृत्ृत् हो िई तो प्रपचां के अन्दर िो थेसब थे, इिका अत्यन्ताभाव हो िया । इि सबों को लेकर प्रपचां कहा िाता है । स्वदेश सेदेखो तो क्या तुमिे कुछ पाया। कुछ तुमको ममला है या ककसी ि तुमको अिुभव कराया है ? िही।ां इसमलए शान्तम् ्। क्या हदया, ककसको हदया, क्या ममला, कहा ांसे ममला, कब ममला, कुछ िहीं। क्योंकक शान्तम् ्। ये ही िारायण देश है। इसी का िाम परमपद है। ये ही कृतकृत्य पद है और यही-

पुरुषाथ िशून्द्यानी र्ुणानी प्रततप्रसर्ः कंर्ल्यं

स्त्र्रूप प्रततष्ठार्ा धचततशन्द्क्तररतत ।

पातज्ांलियिो दशि कैवल्यपादसूत्र ३४

ये ही स्वरूप की प्रनतठिा है अिुठिा मसद्वध ।

'उपजा ज्ञान बचन तब बोला'

सुग्रीर् ने कहा-भर्र्ान राम से ।

'उपिा ज्ञा वचि तब बोला, िाथ कृपा मि भयउअडोला बडा चचांल था महारिा, ये मि । रात हदि हवाई महल बिाता रहता था, अडोला हो िया । तुम्हारे वास्तर्वक स्वरूप को िििाकर अडोला हो िया । िाय कहा?ां क्योकक प्रपचाोपशमम् ्। सिार म िल िया ये । िैसेपुतली लिौ की मसन्धु ुथाह िइ लिै ।

प्रपचाोपशमम्, ् शान्तम् ्मशवम् ्अद्वैतम् ्। में आत्मा प्रपचाोपशम हूां, शान्त हूां, मै पहले ेबद्ध था, अब मुक्त हुआ में पहले ेअज्ञिी था, अब ज्ञिी हुआ, में पहलिीव था, अब ब्रह्म हुआ । । ये सब सस्ांकार हैं। सब र्वकल्प हैं। पूवापिर की स्मृनत का अभाव ही सस् ां– काराभाव है मिोसस्कारों का अभाव है। सस्ांकाराभाव हो शान्त

पद है और श्री मिासकार के शब्दों में पूवापिर की स्मृनृत का अभाव ही अर्वद्या की ग्रजन्थ खोलिा है। उसी ग्रन्थी को खोलिे के मलए बुद्नध बैिती है । अहब्रह्माजस्म के बाद । यही अर्वद्या की ग्रजन्थ खोलिा है। क्यों िी ! िीव को प्रपचां हदखाई देता है कक भिविा को ? अरे क्या सूय िको भी अन्त्रकार हदखता है ? क्या इस प्रकाश को भी अधांकार हदखता है कभी ? तो जिर मुझ आत्मा को प्रपच हदखता है तो में आत्मा िही।ां म ैंअभी िीव ही हूां। िीव को प्रपच हदखता है ि कक भिविा आत्मा को । तभी तो प्रपचीपशमम् ्हूां । आत्मा में प्रपचांाभाव है। स्वस्वरूप भिविा आत्मा में देहाहदक प्रपचां का अभाव है। बयो अभाव है ?

सूय िमें जिस तरह अधांकार का अभाव है। हांांिवि को दशि होता है प्रपचां का । मिर आत्मा को प्रपचां का दशि िही ांहोता ।' अब बिै बिै ही जिुभव करो ि, अपिे को कुछ ि मिाकर, में का म ैंही ििाकर देखो, क्या प्रपचां हदखता है ? जिर प्रपचां हदखता है तो म ैंिहीांऔर म ैंहूां तो प्रपच िही।ां िैसे ेसूय िको अन्धकार का दशि िही ां

होता उसी तरह मुझ आत्मा को प्रपचां का दशि िहीां ांहोता तो जिर मुझको प्रपचां हदखता है तो में आत्मा िहीांहूां क्योंकक प्रपच िीव कजल्पत है। कहिा, सुिा, ज्ञािा, अज्ञािा ये सब प्रपचां के अन्दर है। तो िोया ये िीव कजल्पत है। तो िीवभाव में इिकी प्रतीनत होतो है, आत्मभाव में िहीां होती। म ैंहूां-ये शान्त पद की जिुभूनत कराई िा रही है। मै हू- इस देश से अब देखो कुछ हदखता है क्या ? और हदखता है तो म ैंहदखता हूां कक मुझसे मभन् हिदखता है ? इस देश से मिोअपिेदेश से, स्वदेश से, आत्मदेश से, तब तो म ैंप्रपचीपशम् ्होऊांिा अरे रज्जूदेश में सप िहै कक सप िदेश में सप िहै? सप देश में सप िहै। हो िया कफर। में हूां, इस जस्थि से देखो, अपिे देश से देखो म ैंको कुछ भी

मिमाा भिविा में कलक मिलाा है। तो कफर में देश से, प्रपचां िही ांहदखता, तो इस मलए िो म प्रपचोपशम् ्हु । बि प्रपचोपशम हूां तो शान्तम् ्। प्रशान्त महासािर । और िब में आत्मा शान्त हूां, तो मशवम् ्। में मशत्र हूाँ । अब यहााँपर डूब िाओ । में मशव हूां । मशवम् ्। अद्वैतम् ्। ये भेदरहहत है, द्वैतरहहत है। जिांद ि क्या कहा था रावण से-

'सुन सठ होय भेद मन ताके,

***श्री रघुर्ीर हृदय हह जाके ।।**

अरे ! रघुवीर का जिुभव करके भो भेद रहे। और हृदय में भेदे • का निवास हिा उस हृदय में रघुवीर का निवास िही हिा ।

'सुन सठ भेद होय मन, ताके, श्री रघुर्ीर हृदय नहींजाके ।।

मोह ककसको होता है- सिु मुनि मोह होय मि ताके, ििा र्वरिा हृदय िहह िाके । ये भिविा र्वठणु िे कहा था िारद को। िब र्ववाह करिे का र्पशाच चढ़ा था मसर पर । 'सिु मुनि मोह होय मि ताके, ज्ञिा र्वरिा हृदय िहह िाके ।'

कहते ेहै ससांर में इतिहहतैषी हैं । िि, िक, ुिरू, बन्धु, सुहृद, पनत सब प्रकार से हहतकारी होते ेहैं, ये अिहहत िहींचाहते, हहषषो होते ेहै। हे राम । तुम तुलसी के सब कुछ हो । तो तुलसी का ये ही र्विय है तुमसे कक द्वैतरूप तमकूप में पडू िहीं । अव 'भर्वठय में द्वैत रूप कूप में, अन्धकार में ि पडू । भिविा कृपा 'कीजिए। तो भैया भिविा मशव आत्मा अद्वत है। दूसूरा कोई िहीं। अरे अदबाहहयो ! अिपेको भिविा से अिल िमिो वालो ! तुम जिन्दा कैसे ेहा ? तुम स्त्री का र्वयिो िही ांसह सकते, दूकिा का • र्वयिो िहींसह सकते, स्त्री का र्वयिो, पुत्र का र्वयिो तुम िहींसह एकते े। और भिविा के र्वयिो में जिन्दे हो ? शम िहै। और कफर भी भिविा के िक्त कहलिो के अगधकारी मितेहो ? ये िो भेदे है। ये भेद तुम मिते ेककसमे ेहो ? भिविा यहद है तो भेदे- रहहत है। भेद को मसद्धी भिविा में िहींहोती । भिविा अभेदरूप है। नतिका नतिका भिविा है भिविा से अिल कोई चिी है हो' िही।ां कहा ांभेदे लिाए बडां हो । इसमलए अद्वैतम् ्।

नान्द्तः प्रज्ञम् ्......स र्ज्ञेयः ।

इसी अद्वैत र्वशेषण पर ही इस मत्रां का उपसहांर है।

ॐ पूणमिदः पूणमिमद, पूर्ात्पूिणमिुदच्यते ।
पूणस्त्यि पूणमािदाय, पूणमिेर्ार्मशष्यते ।।
ॐ शान्द्न्द्तः ! शान्द्न्द्तः ! ! शान्द्न्द्तः !!!

स्त्र्० पं० कृष्णकुमार शमिा के प्रतत संर्ेदना के दो शब्द

िुरुिजठिक स्र्वीय प.ां कृठणकुमार शमा िअध्यापक प्राथममक शाला दिु िकी स्मृनृत िओ इस पुस्तक प्रकाशि के अवसर पर बरवश आ रही है चूकांक इस पुस्तक की प्रनत- मलर्प सुन्दर अक्षरों में आपिेबडी िलि के साथ की थी । जिसे ेपढ़कर मुक्त सत्सिां मडांल दिु िके सत्सिगयों का ध्यिा इस पुस्तक के महत्व की ओर आकर्षति हुआ था िओ उिकै अभाव में हम उिका स्मरण करते ेहुए उिकी अमर आत्मा की शाजन्त एव ांदुखी

पररवार के मलये सुख-शाजन्त हेतु िारायण रूप सद्गुरु सेप्राथिा करते ेहैं। आपका स्व- िविास हदिाकां ७/८/७४ को हृदयिनत रुकि ेसे हो िया था।

विींत

'मुक्त सत्सिां मडांल दिु'ि 3